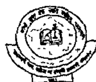
लोक रंग : लोक रूप

डॉ. राज नारायण व्यास

पुस्तक मन्दिर
नगर परिषद के पास, बीकानेर 334001



राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर रै आंशिक आर्थिक सैयोग सूं प्रकाशित

प्रकाशक : पुस्तक मन्दिर
नगर परिषद के पास, बीकानेर 334001

सस्करण : 2004

मोल : एक सौ रुपया मात्र

मुद्रक : कल्याणी प्रिंटर्स
अलख सागर रोड
बीकानेर

टाइप–सैटिंग : पूजा कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्स
आचार्यों की घाटी के नीचे, बीकानेर

Lok Rang : Lok Roop (A Collection of Essays on Cultural and Traditional Aspects of Rajasthan) by Dr. Raj Narayan Vyas
Price : Rs. 100/-

म्हारी बात

राजस्थानी साहित्य लगोलग पांगरतो रैयो है। ओ आज गीरबै रै सागै भारत री दूजी भासावां रै साहित्य री जोड़ में ऊभो हुय सकै। राजस्थानी रै हेताळुआं सारू आ बात घणी अंजसजोग है कै आपारै साहित्य में आधुनिक भाव–बोध री सगळी विधावां हैं जियां काव्य, कहाणियां, नाटक, उपन्यास, रेखा–चितराम, संस्मरण अर निबंध। राजस्थानी रा लेखक घणो ई नांव भी कमाय रैया है पण म्हनै अेक बात लगोलग अखरती रैवै। म्हारो सोच है कै आपनै भी अखरती व्हैला।

म्हारी पीड़ आ है कै आखिर आपारै लोकजीवन री अमोलख हेमाणी नै दरसावण वाळी पोथ्यां रो जावक ई अकाळ क्यों है ? क्या आ हेमाणी आज रै संसार सारू साव गैर– जरूरी है ? क्या आज रै साहित्य नै आपारै सईकां जूनै ग्यान अर विवेक री जावक ई दरकार कोनी ? आपांरा मीठा–मधरा अर रस–बरसावण वाळा लोकगीत, ग्यान री गैराई वाळी लोक–कथावां, सांतरा संस्कार देवण वाळा लोकनाट्य, आपांरी वात–ख्यात परंपरावां, रम्मतां रा रळियावणा दरसाव अर लोकसंगीत री रसवन्ती धारा क्या आज किणी कार री कोनी ? क्या अै सगळी विधावां आज रै संसार नै कोई सनेसो कोनी देवै ? इंयां सवाळां रो पडूतर दिंयां बिना सोच री सही दिसावां सामीं कोनी आय सकै।

काव्य हुवो चावै कहाणियां या कोई दूजी विधा री रचनावां, रस तो वांनै आपरी जड़ां सूं ई खेंचणो पड़ैला। फुनग्यां माथै फूलणो अर फळ–फूलां माथै इतरावणो जणां ई संभव हुय सकै जे आपां जड़ां माथै पूरो ध्यान देवां। जड नै बिसरायां पछै तो हरियै–भरियै रूंख नै ठूंठ बणतै कोई घणी जेज कोनी लागै।

राजस्थानी री मोकळी पोथ्यां नै टंटोळियां पछै सौ लारै मुस्कल सूं कोई दो–तीन पोथ्यां इसी मिलै जिकां मे आपांरी सांतरी, सांवठी अर रातीमाती लोक–परम्परावां रो बखाण हुवै। राजस्थानी रै विकास री तीन धारावां हैं – साहित्य री धारा, भासा री धारा अर संस्कृति री धारा। आज आधुनिक साहित्य तो घणोई रचियो जाय रैयो है पण नीं तो भासा माथै सोध हुवै अर नीं संस्कृति री पिछाण करावण वाळो रचाव हुवै। आ आपांरी चेतणा री दरिद्रता ई गिणीजैला।

आज आखी दुनिया में आपांरा लोक– कलाकार धूम मचाय रैया है। आथूणी दुनिया तो वां री दीवानी हुय रैयी है। आपांरा लोक– वाद्य– खडताळ, अलगोजा अर रावणहत्था आज जगचावा है। आपांरी गायकी भी नांव कमायो है। राजस्थान रा लोक– नाच– घूमर, झूमर, भवई, गौरी अर जसनाथी अगन–नाच दुनिया भर में सैलानियां नै रिझाय रैया है। राजस्थान रा भित्ति–चितराम, मेहन्दी–मांडणा री सांवठी कोरणी, खेतीवाड़ी रै ग्यान सूं सरावोर जूनी कहावतां अर ओखाणां अर सईकां सूं चालती आई भणाई री गैराई दुनिया में किणी सूं भी कमती कोनी। पण फेर भी पीड आ है कै जलधारा सूं खाली परदेसी बादळां माथै रीझ'र नाचण वाळो साहित्य–मोरियो खुद रै भरियै–तरियै मौसम माथै गुमेज कोनी करै।

म्हारी इण पोथी मे चौदै अध्याय है– लोकजीवण रै भांत–भात रै रंग अर रूप नै कोरण वाळा अध्याय। इणमे न्यारा–न्यारा पडाव है– तीज–तिंवारां री रमक–झमक है; लोक देवतावा री मानतावां है, करसां सारू जूनै ग्यान री कहावता रा सातरा उदाहरण है, सईकां सू बरतीजण वाळै अर वनस्पतियां सूं जुडियोडै घरेलू इलाज री विगत है, पढाई रा जूना, ऊंडा अर गैरा संस्कारां री पड़ताळ है, मेळा–मगरियां, बारैमासी परकम्मा री न्यारी–निरवाळी रंगतां, मौसम री मनवारा अर बोलिया सूं जुडियोडी मीठी–मधरी बाता है।

म्हनै पूरो पतियारो है कै आ पोथी सरस्वती रै भण्डार में लोकजीवण सूं जुडियोड़ै साहित्य री अखरणजोगी कमी नै दूर कर सकैला। पोथी री असली पिछाण तो सामान्य पाठक ई किया करै। वै जे इणनै सरावै अर आपरी अपणायत देवै तो म्है म्हारी इण खेचळ नै सफल मानूलां। आ खेचळ म्हारै 60 बरसां रै अनुभव री उपज है। लोकनाट्य परम्परा सू जुड़ियो रैवण रै कारण म्हनै इण मरुधरा री कला अर सस्कृति री पूरी तरै पिछाण है अर आ पोथी इण पिछाण नै ई उजागर करण वाळी है।

–डॉ. राज नारायण व्यास

समर्पण



स्व श्रीमती सुन्दर कौर व्यास, जोडायत
डॉ. राज नारायण व्यास

सूना है घर आंगणां, गमग्या मधरा बैण
उठै हियै मे धबळका, भर–भर आवै नैण
लोक रंग अर रूप री हो थांनै विस्वास
अरपूं थांरी याद में इण पोथी नै आज

– डॉ राज नारायण व्यास

<u>ममतामयी माँ नै नमन</u>

शकुन्तला पुरोहित, सत्यनारायण व्यास, सावित्रि आचार्य, सरला रंगा, मुकन्द नारायण व्यास, लक्ष्मी नारायण व्यास, प्रेम नारायण व्यास, साधना पुरोहित

विगत

मरुधर री मीठी मनवारां

सिरटी री सरूआत सूं लेय'र अजै ताई चेतना री अेक अजूणी धार लगोलग चालती रैयी है। इतिहास अर साहित्य इण धार रै इमरत सू पनपिया; कर्म अर दर्सन इण री गैराई मे गोता लगाया अर लोकजीवन इण रै सायरै ई रातो–मातो हुंवतो रैयो। मरुधरा री आपरी अेक निजू मठोठ है। अेक निरवाळी मरजादा है अर अेक मायली मिठास है। आ मिठास हिडदै मे उपजै, कंठां मे रमै, होंठां माथै थिरकै अर लोकगीता रै रूप मे सामीं आवै। सईका रा सईका बीतग्या पण लोकगीता रै चै'रै माथै कोई सळ कोनी पडिया। वै तो सदीव अरवी रैया है। थिर है, सनातन है, घट–घट रा वासी है।

मिनख रो मन गायां बिना कोनी रैय सकै। हरख–उमाव हुवो चावै कोई उच्छब; तीज–तिंवार हुवो चावै ब्याव–सावा, जात–बिरादरी रो काम हुवो चावै नुंवीं थरपणा रा सरतन, गीतां बिना तो सौ क्यूं फीका लागै। गीत तो इमरत री झारी है। अै मन नै सींचै, जीवण मे रस भरै अर मौसम नै रगीन बणावै। सुख मे गीत, दुख में गीत, संजोग मे गीत, बियोग मे गीत, परणै मे गीत, मरणै मे गीत . .... गीत, गीत, गीत।

जठै लोकगीत है बठै धीरज है। नासा दौड़ी कोनी। फास्ट–फूड री जागा इया रो सुवाद धीमी आच मे सिकियोडी बाटी जिसो है। अै मिनखजूण रा सिणगार है। साचा साथी है। जीवण सू गीता नै छेडै कर'र देखो तो सई, बाकी काई बचै– मौत रो अेक सरनाटो, सून्याड रो अेक लांबो रातीवासो अर अेक अखूट अमूजो। लोकगीत तो लोकमगल रा रूप है। इंयांरो जलम कुदरत री कूख सू हुयोडो है, अै लोकजीवण रा हाचल चूंगिया है। अै अनाद अर अखूट अनुभवां रो रस पीय'र पांगरिया है। मौसम री मनवारां नै सहेजी है। इंयांरी कायां मे फागण रा रग है तो चैत री चादणी भी है; बैसाख री फसला रो उमाव है तो जेठ अर असाड रो ताप भी है, सावण–भादवै री रिमझिम है तो आसोज री सरद पूनम रो उजास अर काती रै दिवला री जोत भी है। मिगसर री गुलाबी ठंड है तो पोस अर माघ री डाफर रै बिचाळै भांत–भांत रै पकवानां रो सुवाद भी है। बारै महीना अर अलेखूं तिंवार .... सब मे लोकगीत पोईजियोडा है, रग–रग मे रमियोडा है।

करसा रो जीवण अर लोकगीता री घमक। इया लागै जाणै जुडवा भाई है। फसला रै सागै-सागै गीत भी लैरावै। बळधा गाडी री धकचक हुवो चावै दडी रातां मे ऊट री सवारी. गीता रै बिना मजो कठै ? गवरजा रै मिन्दर मे कुवारी कन्यावा रा गीत, पिणघट माथै पिणियारा रा गीत, झूला झूलती जोध-जवान लुगायां रा गीत, अर बिरत री कथावा मे भजना में पोईजियोडा काचा-झाग भगती रै भावा वाळा गीत जिका बूढी लुगाया रै कठा मे रमै। घट्टी पीसीं तो गीत, माडणा माडै तो गीत, साथ पुरावै तो गीत, जापो हुवै तो गीत, हालरिया हुलरावै तो गीत, होंचळ चूंगावै तो गीत अर ब्यांव-सावै मे तो कैवणो ई काई।

कुवारी कन्या रो काचो मन, कवळो मन। वा जिकी बात चवडै धाडै नीं कैय सकै, लोकगीत रै मिस तो कैय ई सकै। अेक कुवारी कन्या आपरै बाबाजी सू जोड़ी रो वर दूढण सारू अरदास करै। भरतार इसो होवणो चाईजै जिको नीं तो घणो डीगो हुवै अर नीं जावक ई ठिगणो का पछै बावनियो। इसो भी नीं हुवै जिको जुलम करै, खीच कुटावै अर करडो लकड हुवै। बाई री अरदास रै पाण बाबाजी इसो वर सोधै जिको गुलाब रै फूल दाई गोरो-फूटरो तो हुवै ई'ज बाई रो मन केवटणियो भी हुवै। अबै बताओ, ओ लोकगीत आज रै आधुनिकता बोध I सूं कितो'क दूर है ? इण मे खुलै मन री बात है, खुलै मन री अपणायत है अर पीढियां रै बिचाळै खुली बतल है। नीं तो लुकाव है अर नीं कोई छिपाव। नमूनै रै तौर माथै दो-तीन ओळ्यां हाजर है-

काची दाख हेठै बनडी पान चावै, फूल सूंघै
करै ए बाबजी सू बीनती।

बाबाजी देस देता परदेस दीज्यो,
म्हारी जोडी रो वर हे रज्यो।

खुलै मन री अै बाता अर पीढियां रै बिचाळै मन रो खुलो दरसाव बीजा केई लोकगीता मे भी मिलै।

मन-भावतै वर रो चुणाव करणो अर पछै उणरै सागै ब्याव सारू बूढा-बडेरा नै ओलै-छानै नीं, मन खोल'र कैवणो आपां नै अटपटो लाग सकै पण लोकगीता मे अै भाव चवडै-धाडै केइजियोडा मिलै। अेक लोकगीत में कन्या आपरै बाबाजी सू कैवै कै उणरो मगेतर चम्पाबाग मे पूगग्यो है- "हाथ मे चिटियो है, पागडी मे मोत्या री लड है, तावडो तेज है अर बो कुम्हलाय रैयो है, अबै थे चटकै सू म्हारा ब्याव उणरै सागै माड दो।" लोकगीत मे सौ क्यू सहज है, नीं तो बाबाजी नै रीस आवै अर नीं छोरी नै कीं आवळ-कावळ कैवै। हॉ उणरै मन भावतै बींद रै सागै फेरा जरूर करवाय दै।

लोकगीता मे ग्यान रो अखूट भण्डार भरियो पडियो है। देस-दिसावर री

बाता, जागा–जागा री महताऊ चीजा अर आखी दुनिया सूं मन सोवती जिन्सा मगावण री चायना सामी आवै। धण चावै कै उणरो धणी कजळी देस सू हाथी, खुरसानी सू घोडा अर लका सूं उणरै सारू सोनो लावै। चाँदी उजलपुर सू , हीरा बैरागढ सू अर मोती समन्दर पार सू *लावणा चाईजै। सालू सागानेर रो हुवै अर* चुडलो हाथीदात रो। अबै बतावो, ग्यान–गगा री कमी कठै है ? गीत रो गीत अर ग्यान रो ग्यान।

अेक और दरसाव। मन खोल'र वरदान मागण सारू देवी सू अरदारा। कुवारी कन्यावा गवरजा सूं आपरै मन री बात कैवै – "हे मा, बाण्डो खोल, म्हारै *मन री मुराद पूरी कर।" काई है वा मुराद ? कन्यावा नै बरसाळू बादळा जिसा* बाबा अर उमड़तै सनेव जिसी मा चाईजै। भाई हुवै तो क्रिसणजी जिसो अर भोजाई राई जिसी, मां–जाई बैन सुभद्रा जिसी अर बैदोई सावळियै जिसो चाईजै। मन खोल'र मन री मुराद पूरी करण री अै बाता लोकगीता मे ठौड–ठौड पोइजियोडी मिलै। लोकगीतां मे भावा री निरमळ गगा बैवती रैवै।

लोकगीता में जीवण रो सार हुवै; जीवण रो रस हुवै, भात–भात रा रग–रूप अर चौघडदै री अपणायत हुवै। साध–पूरावणी या अगरणी रा सुवाद लैंवता जावो, छेडो ई कोनी आवै। घेवर–साध, दाख–साध, केसर–साध, पिस्ता–साध, तिल–साध ..... अगरणी अेक, सुवाद अनेक। ब्याव रै टाकडै तो जाणै लोकगीत घमरोल करता ई लखावै। मेंहदी, पीठी, बनौळा, भात, मायरा, बना अर बनडी रा सरूप, तम्बोलण, घोडी अर कामण .... फेरा तो हुवता–हुवता हुवै पण गीत तो पल–पल रा साथी–संगी है। फेरां सू लेय'र बिदाई ताई सगळा काम गीता री गूज रै बिचालै चालै। सुवागरात अर घूघटो छोडण री मनवारा इण तरिया बखाणीजी है–

बनी अे थनै थारै बाबासा री आण।
घूघट रो हठ छोड दो।
बनीं अे थनै मोरा री मुठडी भराय।
घूघट रो हठ छोड दो।

जीव–जिनावर तो लोकगीतां रा खास पात्र है। कोयलडी, चिडकली, पपैया, मोरिया, डेडरिया, कूकडा, सूवटिया, कागला अर कुरजा। इयाकळा जीव–जिनावर नीं हुवै तो लोकगीत साव फीका लागै। छोटै टाबरा सारू लोरी, *झूझणा, अर हिंडोलां रा गीत; परणीजियोडी लुगायां सारू काजळ, टीकी, झूला,* ओळू अर सुपनां रा गीत; पीवरियै री हर आवै तो बीरै रा, तीज–तिवारां रा अर मारूजी नै बिलमाय'र किणीभात पीरै पुगावण रा गीत, देवी–देवतावा में गवरजा, काळीमाता, मावडियांजी, सीतळा माता, जीण माता सू लेय'र रामदेवजी, भैरूजी,

गोमियोजी तकातक रा गीत अर रिणगार मे गूगल, गवरजा अर ढोला–मारू रा गीत तो लोगां रै हिवडा मे गूजता ई रैवै। रिणगार रो अेक सरूप इंयाकळो है –

गढां–कोटा सू ऊतरीरा रे, हाथ कवळकै रो फूल।
सीरा नारेला सारियोरा रे, वैणी है बासक नाग ज्यू।
गवरादे अे गोरी, रूडो है नजारो तीखा नैण रो।

रतन–जडी आख्या, सुआ भरणो नाक, दाडम जिसा दांत, साचै ढालियो हिवडो अर पींपळिरै पान जिसो पेट..... वाह भाई वाह ! क्या उपमावा है।

लोकगीता मे मौसम रा भात–भातीला रग है। जिया सियाळै रा गीत, ऊनाळै रा गीत, बिरखा रा अर बसन्त रा गीत, डफ–चंग अर झूलां रा गीत, मेळा–मगरिया रा गीत, रग–पिचकारी रा, लहरियै–चूंदडी रा, काजळ–टीकी रा, ओढणै–पोमचै रा, पिणघट–पिणियारी रा, रतनजडी इढाणी रा, मूदडी–मादळियै रा अर जीवण रै हरेक परव रा गीत।

लोकगीता री पैठ राजस्थान रै लोकजीवन मे घणी ऊँडी थकी है। इयां रै इन्दर–धनुसी सरूप मे *भात–भांत रा रग है, रूप है, रस है अर सुवाद है।* लोकगीता मे लोक सरस्वती रो वासो है।

अै गीत कुदरत रै अरस–परस नै साधता रैया है। चावै पींपळी हुवो चावै *नीमड़ळी, कुदरत रै गुमजू रिणगार नै अंगेजता थका अै राता–माता हुवता रैया।* दो–तीन नमूना परखण जोग है –

(अ) उदियापुर सू बीज मंगाओ, मारूजी
नीमडळी बवावो पाळ तळाब की जी म्हाका राज।

(ब) चाल्या मारूजी जोधाणै रे देस, वारी धण वारी ओ हजा
जोधाणै री वाडिया ओ नींबू झुक रह्या जी राज।

गीता री घणखरी परम्परा जबानी रैवती आई है – *अै पाटी अर पोथी रै भरोसै कोनी रैया। कठ सू कठ ताई री आ जात्रा केई सईका ताई चालती रैयी।* सासू सू बहू तक अर दादी सू पोती तक घूमर घालता–घालता अै लोकजीवन मे काठा घुळ मिळग्या। कैवण में तो इयारी *भासा मे राजस्थानी री जुदा–जुदा* बोलिया रो असर है पण सस्कृति रै च्यारूमेर पसारै रै कारण इया मे ब्रज, बुन्देलखण्डी, मराठी, गुजराती अर मालवी भासावा रा सबद भी रळता रैया है। *सबदा रै इण भाईपै मे नीं तो भीता खींचीजै अर नीं सींव सारू तलवारां काढीजै।*

कठैई–कठैई तो गीता रा सबद अर भाव इतरा मिळता–जुळता हुवै कै बा रै ऊपर किणी खास बोली रो ठप्पो कोनी लाग सकै। जिया –

उत्तरप्रदेश रो लोकगीत– *लाडो के बाबाजी खडे हाथ जोड़,*

राम रथ हॉक दियो,

लाडो मागना होय सो माग,

राम रथ हॉक दियो।

मारवाडी लोकगीत– बाई का दादोजी चाल्या रथ जोड

बाई नै रथ थाम लियो।

बाई ए मागण होय सो माग,

ए रथ म्हारो हांकण द्यो।

भासा जुदा, प्रात जुदा, बोलचाल पैरावो अर रीत–रिवाज जुदा पण सस्कृति री मायली धारा एक सरीसी। कोई आतरो नहीं।

लोकगीता मे आपरी निजू ठोठ है, रगीलोपण है, सहजता है अर जीवण री इमरत धारा है। राजस्थानी साज रावणहत्थो हुवै अर कठा रा मीठा सुर हुवै तो फेर कैवणो ई काई।

राजस्थानी लोकगीत कठैई अलोप नीं हुय जावै, इण सारू घणखरा विद्वान आपरा जीवण होम दिया। इयां गे सीताराम लाळस (जोधपुर), मोहनलाल पुरोहित (जैसलमेर), देवीलाल सामर (उदयपुर), मनोहर शर्मा (बिसाऊ), गजानन वर्मा (रतनगढ), सूर्यकरण पारीक (बीकानेर), रघुनाथ प्रसाद मिथानिया (कोलकाता), उमाशकर (डूगरपुर) अर महाराजा जयसिह (जयपुर) आदि लोगा रा नाव सरावणजोग है।

लोकगीता मे कुदरत री मीठी मनवारा है। इयां रै पेटै आपां ऊजळै आभै री, कळकळ करतै पाणी री, धरती रै, रूपाळै सिणगार री, गाछ–गाछ मे वासो लेवणिया पखेरूवां री अर बिरखा मे भीजती मस्त–मस्त फसला री छबि देख सका। आ ताजगी आपा नै बिलमावै, आपा रै अमूजै ने तोडै अर नुवा सुरा सू, नुवी ताळ सूं जीवण मे दूध अर मिसरी रो मेळ करावै। इया में प्रेमिया रै हिडदै रा भाव बसै, जवानिया गळबाथा करै, माटी आपरी मैं'क बिखेरै अर करसा रै मन रा मोरिया नाचता रैवै। लोकगीत तो चादणी रै पटल माथै चेतना री उजास रा आखर है, मदछकियै जोबन री मन– भावती रगत है; जीवण रा रूपाळा छंद है। इया घणो ई तप कियो है – तावडै मे तपिया, लूआ रा लसरका भोगिया, डाफर सू भिडिया, आधी–तूफान मे भी ऊभा रैया पण आपरी निरवाळी पिछाण कोनी खोई।

लोकगीता मे नारी री सबळी चेतना अर द्रिढता भी मिलै। जीण भातां रै गीत मे भाई हरसा अर बैन जीण रा संवाद इण बात री साख भरै। हरसो घणोई मनावै कै थूं पाछी घरां चाल, म्है थारै सारू रतन री चौकी माथै सोवण थाळ मे

पुरसारो करूं, सामीं पालर पाणी री झारी मेल द्यू, थारै सारू असी कळ्यां रो घाघरो अर दिखणी रो चीर मंगाय द्यूं, थारी मोजडी रतनां सू जडवाय द्यू पण थू पाछी चाल तो सही। संवाद पढण जोग है –

हरसा :	जीण म्हारी बाई अे, इतणी करडाई मत धार। जामण री जाई, मान कयोडो पाछी घर चा्ल।
जीण :	हरसा बीर म्हारा रे, आका रै लागै मतीर जामण रा रे जाया, फोगां रै लागै रै चायै बोर जामण रा रे जाया, झाडियां रै लागै चायै सांगरा हरसा बीर म्हारा रे, पीपळ रै लागै चायै आव, जामण रा रे जाया, आंबां रै लागै चावै पींपळी सिखर आयोडो सूरज मुड चलै फिर ज्या कुदरत रा सांचळ नेम *जामण रा जाया, जीण आयोडी पाछी ना मुड़ै।*

है कठैई नारी मन री अैड़ी द्रिढ़ता रा दरसाव ? है कठैई लुगाई री अैडी संकल्प–भावना ? है कठैई कुदरत रै नेम–कायदां रै परबार जाय'र भी वचना री रिछपाल करण री अैडी करूड प्रतिज्ञा ? मन मे अेकर जिकी बात थरपीजगी वा अखी है – वा सोण थाळ सूं , पालर पाणी री झारी सू, रतन जडियोडी मोचडी सू अर असी कळ्या रै घाघरे सूं कोनी बिलमाइजै।

राजस्थानी लोकगीता री नाभी मे इमरत है। चावै किता ई झंझावात आवो, तूफान चालो, भूकम्प आवो, धरती रो मिजाज गर्म हुंवतो रैवो पण लोकगीत तो थिर हा, थिर है अर थिर रैवैला।

घण महताऊ लोक-कथावां

लोक कथावां री हथाळी मे उभरियोड़ी जीवण–रेख घणी लांबी हुया करै। काळ रै छोटै–मोटै सपेरा री गिनार किंया बिन्ना अै कथावां "धर कूंचा, धर मजला" चालती रैवै। लोक कथावां रो जलम मिनख रै विवेक री कूख मांय सूं हुयो। इंया कैयो जाय सकै है कै अै कथावा उत्ती ई पुराणी है जितो मिनखाचारै रो विवेक। इंयां रो विस्तार कोई दो–चार गांवां में हुवै या एक–दो प्राता मे हुवै, आ बात कोनी। आखै संसार मे लोक कथावां रो न्यारो–निरवाळो महत्व है। ग्यान–गंगा में झबोळा खांवती–खावती अै इत्ती घणमोळी वणगी कै पीढी–दर–पीढी चालिया पाण ई नीं तो मगरी पडी अर नीं काळ रा गासिया बणी। काळ री आ ताकत कोनी कै धचकै सूं इंयां गासियां नै गिट जावै।

धुर टाबरपणै में लोक कथावां रा जिका संस्कार पडै वै आखी उमर साथ निभावता रैवै। जीवण री क्रियावां मे, आपस रै व्यवहार में, रिस्तां री गणित मे, बिणज–बौपार मे अर लोक–मरजादा मे इंयां री छाप पडियां बिना कोनी रैवै। हरेक पीढी आपरी नुवी पीढी नै खजानै री चाबी दाई ग्यान रै इयै खजानै नै सूंपती आई है। इया लागै कै केई सईकां पैली इयां मे जित्ती ताजगी ही, उत्ती ई आज भी है – अेकदम नुंवी अबोट जिंयां लागै। लोक कथावा अनुभवा री तिजोरी है; आपसी रिस्तां सारू मरजादा री कूची है; विवेक रै समन्दर माय मिलण वाळै खरै मोतियां री चमक है अर पळपळाट करती मणियां हैं। मिनख जद अबखाया सू काठो घिर जावै, विपदावां रै जाळ मे कोजी तरियां फंस जावै अर हिम्मत हारणी सुरु करदै, उण बगत लोक कथावां रा जूना सस्कार, जुझारू वीरां रा द्रिस्टात अर सता रै चरित्रां रा कथानक उण मे जीवण–जोत नै पाछी जगमग करै, उण नै हूस अर हौसलो देवै अर समस्यावां रै चक्रव्यूह नै तोडण री जुगत बतावै। लोक कथावा मिनखाचारै रै आदरसां अर मोलां नै आज ताई सभाळ'र राखिया है। इया नै सुणिया, पढियां सूं मन मे जिका भाव जागै वै है त्याग, बलिदान अर हिम्मत रा भाव, देस–प्रेम, परोपकार अर समाजसेवा रा भाव, प्रण माथे मर–मिटणै रा भाव, प्रेमी–प्रेमिकावा रै साचै प्रेम रा उजळा भावा, जीव–जिनावरां सारू करुणा रा भाव अर भगती मे झबोळा खावता मन री निरमळता रा भाव। क्या कोई कैय सकै है कै अै भाव आज रै जीवण सारू फालतू

है या कोरा बकवास है ? जद जीवण इया रै पाण ई बिगरै अर पागरै तो फेर अै आज रै जीवण मे प्रासंगिक क्यूं नी हुवै ? इया नै जे छिटकाय दिया जावै तो मिनख रो जीवण नीरस, बदरग, बेस्वादो अर विडरूप हुया बिना कोनी रैय सकै। जिकै मन मे लोक कथावा रमै, बो मन गंगाजी ज्यू निरमळ रैवै। उणनै कोई भी मैलो कोनी कर सकै।

भात–भात री लोक कथावा सू पैला म्हैं भगती भाव री व्रत कथावा सू बात नै सुरू करणी चाऊ। व्रत कथावा पडिता रै पेट–भराई रा टोटका हुवै, आ बात कोनी, अै तो मिनखाचारै रै ऊजळै विचारा रै रतना री पेटी रै घणमोला हीरा–मोतिया री अखूट सम्पदा है। कहाणी री कहाणी अर भगती री भगती पण सागै ई आदर्स री कोई अैडी बात जिकी कथा मे पोईज'र चादी रै गैणा माथै मीनाकारी ज्यू उभर'र सामी आवै। अेक दो नमूना परखण जोग है– कथा कोई हुवो, उण रै छेकडलै भाग मे अै सबद बोलिया जावै – "हे महाराज, बैनै तुस्टमान हुया, बैरा भडार भरिया जिया सकळ रा भडार भरजो। आधी नै पूरीं करजो, पूरी नै परवाण चढाइजो। सगळा रै पूठे म्हारो भी भलो करजो।" कथा मे कोई भी लुगाई आ कोनी कैवै कै "हे महराज म्हारै परिवार नै टाळ'र किणी रो भलो मत करजो।" जनमंगळ री आ भावना हरेक व्रत–कथा मे मिलै चावै एकादसी री हुवो का बछबारस री, बैसाखी पून्यू री हुवो या गणेश चौथ अर नागपचमी री, सीतळा माता री हुवो चावै भाई दूज री, काजळी तीज री का पछै करवा चौथ री। लोक *कथावां असल मे बोध कथावा है – अै पाठ्यक्रम रै बधेज मे बधिया बिनाई* जन–जन में ग्यान री नदी बैवायती रैवै अर हिडदै नै निर्मळ करती रैवै। सैकडो बरसा पैलाई करती ही, आज ही करै अर आगै भी करती रैवैला।

व्रत कथावा मे सवाद सूत्र अर कैवणगत रो निरवाळो ढगढाळो हुवै। तुलसी व्रत कथा रो अेक द्रिस्टात इयाकलो है :– 'अेक हो बिरामण। बिरामण रै घर मे अेक छोटीसी'क छोरी ही। वा कह्यो, मा, हू तुलसी पूजीस। कै बाई पूजलै। काती री पूनू आई। वै तुलसी पूजणो सुरू कियो। वा तुलसी रोज पूजती। वैरै माय सू अेक छोटी सी छोरी गैणा–कपडा पैर'र निकळती। हाथै बाई, तू म्हारी भायली होयजा। वा बोली कोयनी। अेक दिन मा नै जाय'र कह्यो– मा तुलरी माय सू अेक छोरी रोज निकळै है। म्हनै कैवै है– तू म्हारी भायली बणजा। मा कह्यो – भायली होयजा तू बैरी।" कहाणी थ्यावस रै सागै तर–तर बधती रैवै। अेक–अेक ओळी मे कोई नुंवादी बात। बीच मे आधी छोडिया सरै कोनी, जिग्यासा हुवै कै आगै काई हुयो। कथा पूरी सुणिया ई मन तिरपत हुवै। छेकड मे बाई बात, 'हे महाराज, तुलसी माता, उणरा भण्डार भरिया ज्यू सकल रा भण्डार भरजे।" व्रत कथावा धीमै–धीमैं अलोप हुवती जाय रैयी है। इण रतन

भण्डार नै बचावणो घण जरूरी है। जदई आपा सस्कृति रा रिछपाळ बण सकाला।

लोक कथावा मे दिखावो नख जितो भी कोनी हुवै। भासा सरल, भाव ओपता, बतल सुभाविक अर बीच–बीच मे पोयोडा ओखाणां, छोटा–छोटा सवाद अर आस्था रो धरातह–अै सगळा मिल'र लोक कथावा नै अेक निजू पिछाण अर रजकता देवै। इया मे भगतीरी कथावा है तो प्रेम री भी है; वीरता री है तो बोध री भी है; राजा–राणी री है तो गरीब परिवारा री भी है, बैन–भाई रै प्रेम री है तो जीव–जिनावरा री भी है। पर्यावरण री कथावा में पथवारी, तुलसी, पीपळी, काती–सिनान, खेजडी–बड अर दूजा रूखां री कथावा री भरमार है। उपमावा रो तो फेर काई कैणो ? जिया – राजा कैडो ? सोनै रो सूरज, इन्दर रो अवतार, ग्यान रो गोरख, ऊगतै सूरज री किरण, बत्तीस लखणो, कविया री कदर करणियो, दानी अैडो जिया राजा करण आद।" सुणता रैवो बस सुणता ही रैवो ... बात बधती जावै, रात घुळती जावै।

राजस्थान री लोक कथावा माथै वीरता री, त्याग री, वचना रै पालण री, दुखी लोगा सारू बलिदान करण री अर जीव–जिनावरा री रक्षा करण री छाप रैवै। सूरमाओ अर देवी–गुणां रै पात्रां मे जठै रामदेवजी, पाबूजी, गोगाजी, जोरसिह, तेजाजी आद सूरमावा री बिडदावली मिलै तो जीवट वाळी लुगाया मे जीण माता, उमा देराणी, निहालदे अर सजना रा द्रिस्टात दिया जावै। प्रेम कथावा मे मूमल महेन्द्रा, ढोला मरवण अर हीर–राझा रा कथानक जीवण मे रस घोलता रैवै।

राजस्थानी रो बात साहित्य भी लोक कथावां रै खातै मे खताइजै। रात री बेळा, ठण्डी–ठण्डी हवा रा लैरका, नैचै अर निरायत री वगत, सुणावणियै'री मठार–मठार'र पेस करण री कैवणगत अर सुणणिया रै टणकै हुकारै रै सागै कान ढेर'र सुणण री लगन– अै सगळी बाता मिल'र लोक कथावां रे जादू नै चौगणो कर दै। फेर तो जिकी कथावा सुरू हुवै वारो छेडो ई कोनी। रतन–हमीरजी री बात, फूलजी–फूलमती री बात, पन्ना–विरमदे री बात, जलाल–सहागी री बात, कुतबदीन साहजादे री बात। कणैई तो इत्ती लम्बी–लईड कै सुणण मे भरपूर मजो आवतो रैवै अर कणैई इत्ती छोटी कै "आगै कांई हुयो व्हैला" री जिग्यासा जगावती रैवै। चावै सिघासण–बतीसी हुवो का पछै बैताल–पच्चीसी, कथावा री रोचकता कठैई कम कोनी हुवै। कठैई खीर रै सबडका रो तो कठैई खीच–घी रै सुवाद रो मजो आवतो रैवै। कथावा रै मायनै पोईजियोडा मुहावरा, ओखाणा, कैवता दोहा, ओपमावा अर अलकार मिल'र जिको वातावरण बणावै, वो लिखण–पढण री जागा अनुभव करण रो विसय है। अै कथावा कद सुरू हुई, कद–कद

लिखीजी, किण–किण रै मुंडै सू बखाणीजी, इण री ठाह लागणी ओखी है पण अेक बात सही है कै अै सगळी कथावा राजस्थानी रै पळपळाट करते खजानै री मणिया हैं। अै सस्कृति री रिछपाळ है अर मिनखाचारै री अैनाण हैं।

कथा गांव सू कथा निसरती जावै। आधी–आधी रात ताई चालण वाळा बातां रा अै फटकारा घणा मनमोवणा हुवै। मन मे आवै कै झाझरको मलाई हुय जावै, कथा पूरी हुवणी घणी जरूरी है। यू लागै जाणै कथा नहीं, पकवानां री कोई थाळी है; बतीस भोजन अर तेतीस तरकार्‌यां रो मेळ है; मीठै रस रा कुंजो है।

झीणी वुणगट अर ऊजळा भाव कथावा री विसेसतावा मे गिणीजै। कोई–कोई कथा तो दूहै सू सुरू हुवै जियां "बेटै सू बेटी भली जे कोई होय सपूत/ अळसी रै ल्हारदे नीं होती, अळसी जातो ऊत।" अर सुरू हुय जावै ल्हारदे री कथा। मौत नै अडीकता थका भी अळसी रा प्राण नीं निकळै। उणरै मन मे दोय बाता रडकती रैवै – अेक तो वो गुजरात रै राजा रा घोडा उठाय'र कोनी लाय सकियो, दूजी आ कै उण री पोळ माथै टोडरमल्ल गीत कोनी गाईजियो। लोगा कैयो कोई छोरो खोळै लेलो। उणरै ब्याव री बगत आपोआप टोडरमल्ल गाईज जावैला पण अळसी रो मन कोनी धापियो। बेटो नीं हुवण री पीड सालती रैई। आ बात जाण'र उण री बेटी ल्हारदे बचन दिया कै "जीसा, आप मोख पावो। आपरै मन रा अै दोनू काम म्हैं पूरा करूली।" बात रो पतियारो मान'र अळसी प्राण त्याग दिया। फेर तो कथा जाणे फटकारां मारती आगै बधै–जोध–जवान ल्हारदे, घोडे री सवारी मे फर्राटा भरतीं ल्हारदे, मिनख रै भेस मे धाडो न्हाख'र गुजरात रा घोडा लावण वाळी ल्हारदे, चौघडदे ललकार'र अेक–अेक सूरमा नै हरावण वाळी ल्हारदे, खुद बींद बण'र आपरै मगेतर नै बींदणी भेस मे लाय'र पोळ माथै टोडरमल्ल गवावण वाळी ल्हारदे .....। कथा रो अेक–अेक प्रसग इतरी रोचकता सू बखाणीजै कै स्रोतावां रो मन धापै ई कोनी। आगै काई हुयो, आगै काई हुयो री हूंस बणी रैवै।

बीच–बीच मे ओपती समानतावां (सिमिलीज) भी पोयोडी मिलै जिया हेत तो माता रो, सुख तो सासू रो, लाज तो सुसरा री, हुकम तो हाकम रो, मोती तो सीप रो, मेवो तो काबुल रो, मिश्री तो बीकानेर री, विद्या तो कासी री, काठ तो चदन रो, साख तो बाणियै री आद।

लुगायां रा केई महताऊ कथानक मिलै। सजना आपरै वचनां रै पाण बारै बरसां ताई आदमी रै भेस मे रैयी पण किणीनै ई ठाह कोनी लागी'। चरित्र माथै कोई आंच भी कोनी आई। आखिरकार मोट्यार नै ई हार मानणी पडी। जीण माता जद अेकर धारली कै वा पहाडा मे जाय'र आपरी देह छोडैला तो दुनियाभर

रा प्रलोभन उणनै कोनी डिगाय सकिया। उमादे नै उणरो धणी छिटकाय दी ही पण उणरै तेज अर तप मे कोई फरक कोनी आयो। अै तो है वीरता री कहाणिया पण प्रेम रै कवळै भावा मे ई लुगाया लारै कोनी रैयी। निहालदे, गूमल, मरवण, फूलमती, विरमदे, भारमती, ऊजली अर सहागी जिसी रूपवती लुगाया प्रेम नै जिण तरिया परवाण चढायो, वो राजस्थानी गीरवै रो ई परिचायक है।

वीरता रा भी मोकळा प्रसग है। पाबूजी, हडबूजी, गोगाजी, रामदेवजी, तेजाजी अर जोरसिंह री लोक कथावा अेकै कानी तो त्याग, बलिदान, हिम्मत अर वचन-पालण रा ऊचा आदर्श सामीं राखै तो दूजै कानी जणै-जणै मे आस्था अर भगती रा भाव जगावै। जागा-जागा इया वीरा री पडा बाचीजै।

लोक कथावा रो फैलाव समाज रै न्यारै-न्यारै क्षेत्रां, वर्गां अर मान-मोला मे है। दान सारू झख देखणी व्हैं तो "भाई भूरा लेखा पूरा" वाळी लोककथा नै बाचो, राजा नै न्याय सू डिगण सू बचावण री बात "रसभरियै गन्ना मांय सू रस रो टोपो ई नहीं निकळण वाळी कथा" मे पढो, विवेक री बात "बारठजी री लाठी मे अर ठाकरा री बातां" मे देखो।

सुरगवासी डाक्टर मनोहर शर्मा सैकडूं कहाणियां भेळी कर'र आ बात दरसाई ही कै राजस्थानी कनै साहित्य रो अेक अमोलख खजानो है। केई कथावां बोध कथावां रो काम करै अर लोगां नै विवेक रै मारग माथै चालण रो सनेसो देवै। अेक बोध कथा इण भांत है –

"अेक खरगोसियै लारै कुत्तो भाज्यो। खरगोसियो सिर माथै पग मेल'र भाज्यो अर भाज'र बिल माय जा बड्यो। कुत्तो बिल साम्ही बैठ्यो जीभ लपलपावै। मांय बड्यो खरगोसियो बोल्यो– "क्यू भाई, कांई सोचै ? कुत्तो बोल्यो– "हूं घणै जोर सूं भाज्यो पण थू हाथ नीं आयो। आ बात कींकर हुई ? खरगोसियो मुळक'र कैयो, "भाया, आपा रै भाजणै मे दो न्यारा-न्यारा सवाल हा। थू थारै जीमण वास्तै भाजै हो पण हूं म्हारै जीवण वास्तै भाज्यो। इच्छा जितरी बळवती होवै, उतरो इ'ज काम रो असर होवै।"

टूकै मे कैयो जाय सकै है कै लोक कथावा मे मौखिक परम्परा रो बोलबालो मिलै अर सागै ई हुकारै रै महत्त्व सूं कैवण वाळै अर सुणण वाळा मे भेळप रा भाव जागै। कहाणी रो कथणो अर मूडै री भाव-भंगिमा भी आपरो असर दिखावै। कहाणी री सादगी, रोचकता, अनाम पात्र (जियां अेक सेठ हो); अलंकारा री पटवागिरी, नैतिक बाता री महताऊ ठौड आद सगळी बातां मिल'र राजस्थानी भासा नै साहित्य रो इसो घणमोलो खजानो सूपियो जिकै माथै गीरबो कियो जाय सकै है। इंया कथावां मे सभ्यता रै विकास रा पडाव तो है ही संस्कृति रा न्यारा-न्यारा स्तर भी है। जिकी भासा इयै अखूट खजानै नै अगेज रैयी है, वा भासा नीं तो कदैई मगसी पडै अर नीं बोलचाल रै संसार सू लोप हुय सकै।

लोक-परम्परा अर लोकनाट्य

संस्कृत साहित्य में घणाई ख्यातनांव कवि, नाटककार अर भांत-भांत री विधावां मे सिरजण करणिया लूंठा रचनाकार हुया है। वां री काळजीतणी रचनावा आज भी आपरी जोत जगमगांवती रैवै पण लोकमानस में वांरी ऊंडी पैठ नीं है। कारण सोधण री जरूरत ही कोनी। लोक आपरो रचाव खुद करै। खुद सूं खुद नै ओळखै, खुद सूं खुद नै निरखै-परखै अर खुद सूं खुद री कूंत करै। संस्कृत साहित्य रै बरोबर अेक लोक रचाव भी हुयो – गैरो, ऊंडो अर घणमोलो। लोक रै हरख-उमाव नै, सोक-संताप नै, रीस-खीझ नै, मैणां-मोसां नै अर काण-कायदै नै केयटणियो साहित्य कुण-कुण, कद-कद अर कांई कांई रचियो, इणरो हिसाब-किताब वगत रै कनै कोनी। ओ लोक ई है जिकै लोक नै रचियो। इण में साधु-सतां रो रचाव है तो गिरस्थियो रो भी है; किसान-मजदूरां रो, बिणजारां रो, बौपारियां रो, राजवर्गियां रो, अठै तांई कै घरेलू लुगायां रो भी जुडाव रैयो है। अेक जणै कोई रचना करी, दूजै उणमें कीं और जोडियो, तीजै उणरो रूप बदळियो तो चौथे उणनै गाय-नाच'र परखियो। इण तरियां आगै सूं आगै, घर कूंवां, घर मजला ओ लोक साहित्य बधतो रैयो, कंठ-कंठ में रमतो रैयो, हिडदै-हिडदै रै भावां सूं जुडतो रैयो। इण साहित्य माथै विद्वानां रो चावै ठप्पो नीं लागियो व्है पण लोक री छाप तो है ही अर आ छाप ही आपांरी अमोलख पूंजी है।

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' हुवो चावै 'रघुवंश', काळिदास नै अमर करण रा ग्रंथ भलांई हो पण लोक में वांरी घणी पैठ कोनी। लोक नै चाईजै अेक रळियावणी अर बोलचाल री भासा, बणाव-सिणगार बिहूणी सीधी-सपाट सैली, घणी ऊंची उडान री जागा धरती सूं जुडाव री बातां अर रात-दिन रा बाथेडा सू जूझती जिन्दगी री मांयली हूंस अर उणरै हौसलै री बिगत। ओई कारण है कै काळिदास रै नाटकों सूं केई गुणा बेसी असर राजा भरथरी, हरिश्चन्द्र, अभिमन्यु, चंद मलियागिर, ढोला मरवण, हेडाऊ मेरी अर अमरसिंह रै लोकनाट्यों रो है। इंयां नाटकां रो पात्र-समुदाय ब्हौत बडो है। नाटकां रै चरित्रा रै सागै-सागै दर्सकां रै अर टेरियां रै भाईपै री भेळप बिना कोई नाट्य नीं तो रचीजै

अर नी चौखी तरियां खेलीजै। लोकनाट्य री केई अेक इसी विसेसतावां है जिकी आज रै आधुनिक नाटकां मे कोनी मिल सकै।

लोकनाट्यों में रम्मत री ठावी ठौड है। रम्मत तो लोकनाट्यों री जान है। रम्मत मानै रमण करणो, आनन्द लेवणो, खेलणो अर लोगा नै रिझावणो। इण में सगीत रा तीनू पख, कण्ठ संगीत, वाद्य संगीत अर निरत–भेळा है। रम्मत रा पात्र आपरै हाव–भावां सूं, रळियावणै संवादां सूं, ओपता कपडा–लतां सू बोली रै उतार–चढाव सूं नाच–कूद अर सागीडै अभिनय सूं सगळां नै रिझावै। ठंडी रात, हवा रा लैरका, टेरियां री टेर अर अणगिणत कंठां सूं "वाह–वाह", "जीवता रैवो", "अमर हुय जावो" रा नारा रम्मत री रैनक नै चौगुणी करदै। ख्यातनाव रम्मत हुवै तो दूर–दूर रै मोहल्लै वाळा भी देखण नै आवै। पात्रा री आवाज इती बुलंद हुवै कै उणानै माइक रै सायरै री जरूरत ही कोनी पडै। ठंडी रात में हवा रै खवोळियै माथै तिरती–तिरती मीठी आवाज दो–दो तीन–तीन कोस रै आतरै ताई सुणीज सकै। रम्मत वाळै चौक में लोगां री चैल–पैल रो कांई कैवणो। च्यारूमेर मिनख, कलोल करता टाबर, टेर भरता टेरिया, घरां रै डागळां अर तुपड तकातक माथै बैठी अर झरोखां सू झाकती लुगाया अर पाटां माथै ठराकै सूं नाचता रम्मत रा पात्र– लोगां री अपणायत इसी कै रम्मत रै दिन सूं अेक दिन पैला निकळण वाळी 'बनोळी' में चौक, मौहल्ले रा सिगला जणा भाग लेवै। आ 'बनोळी' रहैर रे व्हैत सा मोहल्ला माय सू निकळ'र इण बात री जाणकारी देवै कै काल म्हारै चौक में रम्मत है। रम्मत री हूंस इण कदर कै वसन्त पंचमी सूं ई घमरोळ माच जावै। हरेक पात्र आपरै संवादां नै हरमेस बोल'र कठां में चौखी तरै रमाय लेवै। सवादां री ठसक, नगाडै री घमाघम, घूघरा री रुणझुण अर कंठा री बुलन्दी सगळा मिल'र इसो माहौल रचै कै रम्मत चालती जावै अर रात घुळती जावै। ठाह ही कोनी लागै कै कणै तो झांझरको हुयो, कणै भाख फाटी अर कणै दिन ऊगग्यो। छेकड जावतै जद "माता अे म्हारै टाबरियां नै ठंडरा झोला दीजै अे" रो गीत गाईजै तो लोगबाग जाणै कै अबै रम्मत पूरी हुई है। लोकनाट्य रा औ ठाठ–बाट आज रै आधुनिक रंगमंचां रै भाग में लिखियोडा ही कोनी। वै तो बापडा दरसकां नै झुरता रैवै अर अठै हालत आ है कै बैठण नै अर ऊभा रैवण तक नै भी जागा मिलणी ओखी हुय जावै। खैर, आप–आप रा भाग। सदी चावै इक्कीसवीं आयगी व्है पण रम्मत रो चाव आज भी मोळो कोनी पडियो।

लारला तीन–चार सौ बरसां में अलेखूं कलाकार रम्मत परम्परा सू जुडिया व्हैला–इणरो हिसाब राखणो सोधकर्मियां सारू भी ओखो काम है। लोग मन री हूस सूं जुडै जुडता–जुडता इंयाकला रम जावै कै आखी उमर ही गाळदै पण धाप नीं आवै। लुगाया रा चरित्र भलांई हुवो पण मंच माथै मिनख पात्र लुगायां रा भेष बणाय'र आवै। वै ई घाघरा, ओढणा, वै ई अंगड–बंगड, गूथिजियोडी

चोटी, टीकी–टमकी, काजळ–छल्ला, कन्दौळा अर पायल अर वा ई छमक छल्ली चाल। रम्मत कांई हुवै जाणै कोई लोक–उच्छव हुवै। दर्सक संवादां नै सुणै, वा नै आपरै–आपरै ढंग सूं अरथावै, टेरियां रै सागै गावै, अर इण औळावै खुद नै भी रम्मत सूं जोडता रैवै। आज भी इण अंजस जोग परम्परा नै अंगेजण री घणी दरकार है। रम्मत में असवाड़ै–पसवाडै रो जीवन झळकै, अणूंतो उमाव सामी आवै, अकथ भाव अर अबोली पीड नै वाणी मिलै अर लोगां में नाटक रा साचा संस्कार सिरज सकै।

रम्मतां में केई कथानक–प्रधान है तो केई भगती–भाव अर इतिहास सूं जुडियोडी है। मोटा–मोटा दो बंटवाडा तो किया ही जाय सकै है – अेक में सांग–मेरी री रम्मतां हैं तो दूजै में कथानक वाळी रम्मतां। सांग–मेरी री रम्मतां मे चौमासा, लावण्या, ख्याल अर प्रेम–प्रसंगां री अलेखूं बातां पिरोईजै तो कथानक वाळी रम्मतां में ख्यातनांव चरित्रां नै उजासण वाळा कथानक लिया जावै जियां अमरसिंह री रम्मत, हेडाऊ–मेरी री रम्मत, राजा भरथरी, राजा हरिश्चन्द्र अर राजा गोपीचन्द री रम्मतां, अभिमन्यु , चकवे–बैण रा ख्याल अ चंद मलियागिर रा कथानक आद।

लोकनाट्यां रै पेटै उतर परदेश री नौटंकी, मालवा री माच, ब्रज री रासलीला, राजस्थान री रम्मतां अर ख्याल अर गुजरात री भवई आद री घणी मानजोग ठौड है। महाराष्ट्र रै 'तमासा' अर बंगाल री 'जात्रा' नै आप–आप रै प्रांत में आज भी पूरो सम्मान दियो जावै। रावळों री रम्मत, भीलां री गवरी, पाबूजी री पड आद भी लोकनाट्यों रै खातै में खताइजै। तुर्रा–कलंगी भी कठै न कठै लोकनाट्य री भाव–भोम माथै चालै। इण तरै कैयो जाय सकै है कै लोकनाट्य रो विस्तार आखै देस में है पण असर धीमै–धीमै मगसो पड रैयो है।

आज री पीढी जे चेताचूक रैयी या आथूणी धारा में बैंवती रैयी तो लोकनाट्यां री आ परम्परा छेहला सांस लेंवती दीखैला। आथूणै संसार रो तो कांई कोनी बिगडै पण इसी अमोलख हेमाणी नै गंवायां किरकिर आपां रै माजणै में ईज पडैला। आ बात गिनार में राखणी जरूरी है। आ घणमोली अर घेरघुमेर परम्परा बडेरां री धरोहर है। इणनै केवटणो आपां सगळां रो फरज बणै। चेताचूक नै तो चौरासी रा चक्कर खावणा ई पडै। पूंजी सांपरतक हाथ सूं निकळै अर आपां में चंडाळी नीं छूटै तो इसै जीवण नै तो धिरकार ही कैईजैला।

केई लोकनाट्य पूजा, अनुस्ठान अर धार्मिक भावनावां सूं जुडियोडा होवै। गवरी लोकनाट्य इयां मांय सूं अेक है। उदयपुर, डूंगरपुर अर बांसवाडा रै भीलां रो ओ नाट्य शिवजी अर भस्मासुर री कथा अर भगवान विस्णु रै मोहिनी रूप रै बखाण सूं जुडियोडो है। ओ अेकलो इसो नाट्य है जिको धौळै दिन में खेलीजै अर जिकै में गांवां रा सगळा मिनख–लुगाया भाग लेवै। भावां रै कंवळास रै सागै

घूघरां री घमक री जुगलबंदी सूं गवरी में जादू जिसो असर होवै अर चेतणां रा पावण्डा आपोआप आगै बधता जावै। कथा रै बिचाळै आज रै जीवण रो जीवंता–जागता दूजा पात्र भी आपरी छाप छोडियां बिना कोनी रैवै जियां भोपा–भोपी, बाणिया–चौधरी, देवर–भोजाई। भगवो झंडो, तिरसूळ अर धूणी गवरी लोकनृत्य री खास पिछाण होवै। भोपै रा भाव, थाळी री झणकार अर नगाडां री आवाज रै बिचाळै नाच री मन–मोवणी मुद्रावां अर संवादां रो गवरी नाट्य... दिनूगै सूं आथण तांई रो आखै गांव रो मेळो, भीलां रो मन–मोवतो उच्छव अर जीवण रै भांत–भांत रै दरसावां रो सागीडो प्रदरसन। मन हुवै के देखता ई जावो, बस देखता ई जावो...। छेकड जद भरमासुर आपरी लगाई लाय में खुद बळ जावै जणै जाय'र जी मे जी आवै।

रावळों री रम्मत अेक ब्हौत जूनो अर टणको लोकनाट्य है। पीढियां बीतगी पण इण जस–जोगै नाट्य री जोत सवाई राखण में लोगां कोई काण–कसर कोनी राखी। परम्परा नै केवटणो कोई सोरो काम कोनी। इण सारू खुद नै होमणो पडै, डिग्गूपिच्छूं हुयां या डांफाचूक हुयां काम कोनी चालै। रावळ जाति रो ओ नाट्य राजस्थान रो स्यात सगळां सूं जूनो अर ठरकाळ नाट्य है। ई रो रूप थोडो–ब्हौत गुजरात रै 'भवई' सूं मिलै। नाट्य रै बीच–बीच मे केई सांग (स्वांग) आवै जियां मीयै रो, बाणियै रो, दरजी रो अर जोगी रो सांग, कान्ह गूजरी रो अर अधनारी रो सांग, सूरदास रो सांग आद। रावळों री रम्मत दो काम अेकै सागै सारै–नाट्य रो नाट्य अर रतजगे रो रतजगो। आ रम्मत मिनखाचारै रै ऊजळै मोलां नै दरसावै अर संस्कृति री 'धजा' (ध्वजा) नै ऊंची राखै।

लोकनाट्य री बात चालै अर नौटंकी रो बखाण नीं हुवै, आ किंयां हुय सकै। खुलो मंच, रूंख अर बदळता दरसाव, गीत–पोयोडा संवाद, रात रै सरनाटै नै चीरती बुलंद आवाज, नगाडा रै धडीन्दां रै सागै उठता लय–बद्ध पग'अर भांत–भांत रा कथानक मिल'र नौटंकी नै अेक दाठीक सरूप देवै। बगत रै बदळाव रै सागै नौटंकी रा कथानक ई बदळता रेया है। पैलपोत घणा जूना कथानक जियां सती अनुसुया, राजा भरथरी, सत्यवादी हरिश्चन्द्र अर नल–दमयंती जिसा चुणिया जांवता पण धीमै–धीमै लोग बाग दूजा विसय मी अंगेजण लागग्या। इंयां में लैला–मजनू, सीरी–फरिहाद, सुल्तान डाकू, अनारकळी, औरत रो प्यार आद भेळा हा।

कोई चालीस–पैंताळीस बरसां पैलां तांई गांवां में नौटंकी रो घणो चाव हो। जियां रम्मत मे हुया करै, बियां नौटंकी में भी लुगाई–पात्र री जागा मिनख ही लुगाई रो भेस बणाय'र नाचिया–गाया करता हा पण धीमै–धीमै जद मोहनलाल एण्ड कम्पनी गुलाबबाई नै मंच माथै उतारी तो जाणै अेक हळचळ सी'क माचगी। आज तो लुगायां री ठौड लुगायां मिलणो ओखो कोनी पण बात तो जूनै बगत री

ह जद लुगायां मंच माथै कोनी चाढया करता पण मिनख वारी कमी नै पूरी कर दिया करता हा।

नौटकी में गढमुक्तेश्वर अर बटेसर रा नांव आज भी लोगां री जबान माथै है। आज जे नौटंकी कला भी मगरी पड्ती जाय रैयी है तो इण रो कारण अेक तो गांव रै जीवण में रहैरी संस्कृति री घालमेळ है अर दूजो कारण मनोरंजन रै आधुनिक साधनां रै तामझाम में लोगां री रुचियां में आवतै बदळाव रो है। आज लोकमंच रै नाटकां में जिका नुंवां–नुंवां बदळाव आय रैया है, वां नै साव फालतू मान'र छिटकावणो भी जरूरी कोनी– जे कोई सही अर नुंवीं बात सूं नौटंकी में निखार आवै तो उणनै अगेजणो चाईजै तद ही आपां बगत री बाथ में बाथ घाल'र उणरै सागै चाल सकांला। कीं खोट सोनै में हुवै तो कीं सोनार में ई हुय सकै। नीं तर कांई कारण है कै उत्तर–प्रदेश री नौटंकी, मालवा री माच, ब्रज री रासलीला, महाराष्ट्र रा तमासा, राजस्थान रा ख्याल अर गुजरात री भवई आपरो आकर्सण खोंवता जाय रैया है। नैठाव सूं सोचणो जरूरी है।

लोकनाट्य री लम्बाई, आखी–आखी रात रा मजमा, पुराणै ढंगढाळां सूं चिपियोड़ै रैवण रो सुभाव, माइक रै प्रयोग सूं हिकारत, आद घणी इसी बातां है जिकी गैरै सोच सू बदळाव कानी बढ सकै। नुंवै जुग में नुंवा कूंकूं–पगलिया मांडिया ई सरैला। हा, परम्परा नै जीवती राखणी जरूरी है। बेढंगै बदळाव रो सूगळवाडो आपांरी सोनल परम्परा नै बदरंगी कर सकै है; इण सारू सावचेत रहणै री भी दरकार है।

राजस्थान ख्याल गायकी अर तमासां रै मंचन में सिरै गिणीजै। बसन्त री मौसम, होळी रो रंगीलो टाकडो अर हुडदंग रै बिचाळै मदछकिया लोगां री मोतियां सू मूंगी मस्ती जे सागै हुवै तो फेर माटी री सौरभ सू गूंथिजियोड़ै ख्याला रो कांई कैणो! कुचामणी ख्याल हुवो चावै चिड़ावा रा ख्याल, अलाबक्सी ख्याल हुवो चावै बीकानेर री लावण्यां, चौमासा अर दूजा ख्याल, लोकमन नै प्रगटावण रो जिको काम अै ख्याल कर सकै, वो दूजी कलाओं रै ताबै री बात कोनी। ख्याल तमासां रै मचन में भी बंधी–बंधाई परिपाटी चालै जिंयां पैलपोत मंगलाचरण, फेर गुरु री बंदना अर फेर पात्रां री चैलपैल जिंयां मेहतर, भिस्ती, हलकारा अर कथानक सूं जुडियोड़ा दूजा पात्र। ख्याल–तमासां रै कथानकां में राजा पूरणमल, राजा गोपीचन्द, भरथरी, गोरखनाथ, भक्त प्रहलाद, ध्रुव, देवर–भोजाई अर गुल–बकावली घणा चावा मानीजै। नगाडै री कडाक धिन रै बिचाळै उर्दू, हिन्दी, राजस्थानी री भेळप रा संवाद अर मिनखाचारै री थरपणा रा बोल स्रोतावां अर दर्सकां नै लुभांवता रैवै।

लोकनाट्य रै अलेखूं रूपां में तुर्रा–कलंगी री भी ठावी ठौड है। इण सैली रो जलम तो आथूणै भारत रै दो संतां रै कारण हुयो — अेक हो तुकनगीर अर

दूजा हो शाहअली। वै अर वांरा भीडू काव्य–दंगळ किया करता हा। राजा जद रीझियो तद तुननगीर नै मुगट रो तुर्रो अर शाहअली नै कलंगी बख्सीस में दी। फेर कांई हो! अै तुर्रा–कलंगी रै रूप में थरपीजग्या। तुर्रा–कलंगी रा एक –दूजै नै हरावण–छकावण वाळा बोल तो सागीडा असरदार हुवै ईंज है पण सागै ई भांत–भात री मुद्रावां, नाच रा रूडा अर तरै–तरै रा ढंगढाळा अर सगीत री जुगलबंदी इण लोकरूप नै घणो महतारू बणाय देवै। मंच बणै कोई पद्रै–बीस फुट ऊचाई रै अडैगडै जिको राणी रो सीसम्हैल गिणीजै। राणी हुवै कलंगी अर राजा हुवै तुर्रो। खास मंच जमी सूं पांचेक फुट री ऊचाई माथै बणै। अखाडै रो झण्डो थरपीजै, वादक अर टेरिया सारू भी अलायदी ठौड राखीजै। राजस्थान में चित्तौड, गोसूण्डा, करौली, पाटन, आसीन्द अर बेगूं री तुर्रा–कलंगी ख्यातनांव हुय चुकी है। दूजा लोकरूपां री चर्चा किणी और अध्याय में हुवैला।

लोकनाट्य (रम्मतां) रो भाव-संसार

रम्मत लोकनाट्य री अेक सजोरी विधा है। किणी भी रम्मत रै आलेख रो रचाव चावै जो भी कियो हुवै, उणमे मिनखाचारै रै अखी आदर्सां माथै सदीव जोर दियो गयो मिलैला। मिनख–मिनख रसै अेक सरीसा। लाडू री कोर मे कुण मीठो अर कुण खारो ? हिन्दुवा अर मुसळमाना रा धरम चावै न्यारा–न्यारा हुवो पण मिनख रै रूप मे तो भेद कोनी कियो जाय सकै।

अखंड मिनखाचारै रा मोल :- आज साम्प्रदायिक मेंळ–मिलाप रा जिका नारा बुलन्द किया जावै, वै रम्मता मे तो सईका सू आपो–आप ही पनपता रैया है। आपसी सनेव मे, भेळप अर भाईचारै मे किणी तरै री घालमेल कोनी मिलै। सगळी जातियो रै बिचाळै हेत रा समदर हबोळा लेंवता रैवै। आज रो हयादया बायरो समाज जे हियै री आख सू निरखै–परखै तो रम्मता मे उणनै आपरो सवारियोडो सरूप मिल सकै।

राजा हरिश्चन्द्र री रम्मत रो अेक बोल इयाकलो है –

लोही–मास रो रग अेक है सुणलै बात हमारी।
पाणी पी'र किस्यो घर पूछू म्है नौकर सजगारी।।

आ ई बात अमरसिह राठौड री रम्मत मे सामीं आवै। रम्मत मे बादशाह दोनू जातियां रै मेळ री बात आपरै बोल मे दरसावतो थको कैवे :–

खुदा कहेगे पाक रहेगे, तसवी हाथ कुरान।
अमन–चैन से रहे देस मे हिन्दू–मुसळमान।
हिन्दू–मुसळमान कै हिलमिल चालणा।
आपस में इकसार घाव नहीं घालणा।

बो तो इती ताई घोसणा करै कै "हिन्दू के सब देव मनावां, मुसळमान के पीर।" आज घणखरा लोग दिखावै सारू तो भला ई भेळप री बात करो पण मन मं केई खांचा रैवै। जूनै जुग री साची अर सखरी मान्यतावा मे अेक–दूजै सू अळगाव री बाता मै ठौड कोनी मिलती ही।

अंधविस्वास सू अळगाव :- अेक जमानो हो जद लोग झाडा–फूक मे, भोपा रै जजाळ मे अर कुडालियै री कार मे विस्वास राखता हा पण रम्मता मे अैडा दरसाव कोनी मिलै। वा मे तो भाग सू ज्यादा पुरसारथ माथै जोर दियो जावै। पुरसारथ नी होवै तो भाग (भाग्य) आपै ही भुवाळी खाय जावै। अमरसिह री रम्मत मे हाडीराणी अपसुगना सू डरती थकी अमरसिह नै आगरै जावण सू बरजै पण अमरसिह तोत री बाता मे विस्वास कोनी करै। दोनू री आपरी बतळ री अेक बानगी इण तरिया है :–

हाडीराणी . डावी बोलै कोचरी स राजा सनमुख उडिया मोर

xx xx

सनमुख उडिया मोर कै तीतर आवता
इण सुगना सरदार कोई नही जावता।

अमरसिह : सुगनी सुगन मनायकै सरे अलख रची है काया
जीणा–मरणा हाथ हरि के सुख, सम्पत्ति और माया,
सुख–सम्पत्ति और माया हरि के हाथ है
जो रचिया करतार और सब बात है

अमरसिह सुगना–अपसुगना नै कोनी मानै अर कैवै के काया रै अलख रचाव मे बापडा सुगन कांई करैला। डोर जे भगवान रै हाथा मे है तो फेर काई तो सुगन अर कांई अपसुगन ? अै बोल आज रै वैग्यानिक जुग सू मेळ नी खावता हुवै तो बताओ ?

न्याय माथै अटल विस्वास :- रम्मतां रै भाव–ससार मे मा रै दूध जिसै निरमळ अर खरै न्याय माथै जोर दियो जावै। हीणा काम करिया पछै छूटणो घणो दोरो। बिना किणी रो पख लिया न्याय री ताकडी माथै मामलो तुलतो चावै। फेर अपराधी मां–जायो भाई ही क्यूं नीं हुवै– सगळां सारू सरीसो न्यायं हो। सिमरथ छूट जावै अर बापडा गरीब पज जावै इसी बात रम्मता रै भाव–ससार में कोनी मिलै। न्याय री साख बधाव घणी जरूरी, चावै फळ कितरो ही भयानक क्यू नीं हुवै।

अेक नमूनो निरखो–

किला बना है आगरै स जी चार तखत है पॉव।
जिस पर बैठा बादशाह करे दुनिया का न्याय।।
हुकम खुदा का ऐसा उतरा जुल्मी जावे भाज।
सच्चा न्याय करे दुनिया का किसकी न राखे काण।।

काण–कायदो राखै तो न्याय कियां कियो जावै ? न्याय री देवी री आख्या माथै तो पाटी हुवै, वा ओ कोनी दीखै कै कुण तो घर रो है अर कुण

परायो। उणनै तो न्याय री ताकडी री डाडी नै सीधी राखणी है, चावै कुंई क्यूं नीं हुय जावै।

ऊजळै चरित्र री वातां :- रम्मता भात-भात री, कथानक भात-भांत रा पण जनता नै रानेरो अेक सारीरो। नसो-पतो, चुगली, कूड-कपट, पर नारी सूं हेत अर गुळलपटी वाता आद केई सूगली आदता रो रम्मता रै सवादा मे विरोध मिलै। जठै भी कोई चाक-चूक हुवै, किणी न किणी पात्र रै सवाद मे उणरी खिलाफत मिलिया ही सरै। चेतना री चिणग अखी रैवणी चाईजै। सुमत मे सार है अर कुमत मे नुकसान, आ वात रम्मता रै भाव-ससार मे तार-तार पिरोजियोडी लाधैला। इणसू ही मिनखाचारै री साख वधै; आपारा लाखीणा मोल सैलग वणिया रैवै। जीवण री सुघडाई रा केई अेक भाव इण तरै है :-

(अ) चरित्र रो ऊजळोपण : चद मलियागिर री रम्मत मे जद भूडै भाव सू विणजारो राणी रै सतीत्व नै डिगावणो चावै तो राणी रा अै बोल चेतना रा गाखा खोलण जिसा है–

मन की बात कही विणजारै दिल की खोली भाप।
पापी का मन मायनै स रे वसै सदा ही पाप।।

अर हाडीराणी आगरै जावतै अमरसिंह नै सावचेत करती कैवै'

भगतण, भाड, कलालण्या, मारू मन ललचाय।
मोती कहे मत बिलमज्यो, रहज्यो बदन बचाय।।

जे चरित्र नै ऊजळो राखणो है तो इसी भूडी आदतां नै टाल'र ही रैवणो पडैला। आछी आदता री थरपणा सारू घणी खेचळ करणी पडै; धीजो राखणो पडै अर मन नै करडो करणो पडै। बिलमावण वाळा तो अलेखू है पण जिका नखतरी हुवै वै आपरै धरम नै परोटण मे पाछ कोनी राखै।

(आ) चुगलखोर नै लानत : मूडै आगै बडाई अर लारे'सूं चुगली करै जिकां नै लानत है। रम्मता मे इसी सूगळी आदत रै सारू धिरकार रा भाव है पण करै काई ? लोग कैवै नी कै "ज्यारा पड्या सुभाव कै जासी जीव सू। नीम न मीठो होय सीचो गुड-घीव सू"। अेक सवाद नै परखो–

तूबा कडवाई तजै स राजा, लहसन तजे कुवास
मीठापण मिसरी तजे स राजा चदन तजे सुवास
चदन तजे सुवास, चुगल तो ना तजे
बदळो बेईमान सलावत ना लजे
(सुण राजा थारी चुगली हुई रे दरबार मे)

जीव-रक्षा :- राजा हरिश्चन्द्र री रम्मत में राणी तारामती बार–बार चेतावै कै जीव–हत्या नहीं करणी है। सिरटी रा सगळा जीवां नै जीवण रो हक है। जीभ रै चटकारै रै सारु किणी जीव नै मारणो चोखो कोनी। बोल इण तरै है–

वयां नै करो शिकार मारो मत जीवजी।
पाप–हत्या सू डरता रह ज्यो पीवजी।।

अर राजा पड़ूतर देंवतो थको कैवै–

म्हारै हाथ सू हत्या नहीं कररस्यू, जब लग घट मे प्राण।
आठ यज्या पाछा आवस्या राणी, आ तू साची जाण।।

आज पर्यावरण नै लेय'र जिको हाको हुय रैयो है, उणरी सुरुवात रा अैनाण तो इंयां रम्मता मे ई मिलै। मच माथै बार–वार उथळीजता अै सवांद टाबर–टोळी में अर जवानों मे आछै जीवण रा सस्कार भरण वाळा है। ओ ई कारण है कै लारलै सईकै में (आधुनिक) भणाई रा सरतन चावै नांवमात्र रा ई हा पण लोकचेतना री आदत तो आदर्सां रै हिमाळै री चोटी कानी देख'र आगै सू आगै वधण वाळी है।

लुगायां रो तेज :- रम्मतां मे लुगायां मचा माथै भाग कोनी लेंवती ही। मिनख उतरता हा लुगाया रे भेस मे। इसो बणाव–सिणगार कै ओळखणो ओखो हुय जावतो। जिसो पात्र, उसो ही वणाव–सिणगार। हाथां मे मेहदी रा माडणा, गैणा मे कांकण–पुणचा, हथफूल, वाजूबंद, तेवटा अर आड, सोळै सिणगार सजियोडी राणियां, वेगमां, सखियां अर दूजी लुगाया रा ओपता बणाव पण बात अठै रूपरग री नीं होय'र चरित्र रै गुणा री हुय रैयी है।

खेत मे निनाण हुवो चावै बीजणो, हळ चलावणो, भातो लेय'र पूगणो या फसळ काटण रो काम, लुगायां आपरै मोट्यारां रै खांधे सू खाधो मिलाय'र काम करती आई है। थुथकारो न्हाखै जिसा काम। रण मे वीर बाकडै घर धणी नै, बेटै नै या भाई नै भेजणो हुंतो तो ई पूरी हिम्मत रै सागै तिलक लगाय'र पान रो बीडो देय'र भेजती। मरणै नै मगळ गिणण वाळी लुगाई कोरी कामण ही नीं ही, रणचंडी भी ही। हथियार चलावणा, दुस्मणां नै ललकारना, सामीं छाती दकाळ देवणी अर आमीं–सामीं लड'र आपरै धरम नै निभावणो वा खूब जाणती ही। अमरसिह राठौड री रम्मत में हाडीराणी नै जद ठाह लागै कै उणरो धणी अबै संसार मे कोनी रैयो तो वा खुद लडाई मे जावण रो मतो कर लियो। संवाद रा बोल इण तरै है–

तखत करो चकचूर सूरमां, चढ चालूं थांरै साथ
माथै बांधू पागडी स म्है लेऊं दुधारा हाथ

लेऊं दुधारा हाथ कै घोडै पर चढ़ूं
जाया पडू रणखेत क फौजों विच लडू ।
(म्हारा सिंह सूरमा कैसे आयो रे आधी रात रा.. ..)

ओ जसजोगो फैसलो इतिहास मे सोनै रै आखरां मे मांडणजोग है। मिनखाजूण रो सत राखण मे लुगाया पाछ कोनी राखी। बिखो तो राजा हरिश्चन्द्र ही भोगियो, पण फोडा राणी तारामती नै ही कम भोगणा कोनी पडिया। दुख हुवो या सुख, धणी रै जोड़ाजोड सागो निभावणो राजस्थानी लुगाया री खास पिछाण रैयी है। जीवण–रथ रै रासां री फणकार दोनूं रै सागै रैवण सू ही लाग सकै। आपांरै सामीं इसा अलेखूं अर बेथाग टणका उदाहरण है जिकां माथै गीरबो किया जया सकै।

छोटां सारू आदर रा भाव :- अेक संवाद मे धूड (माटी) अर भाठै री तुलना करतै कैयो गया है

"रंजी तो सिर पर चढे स राजा टोला ठोकर खाय।
मोटो वो ही जाणियै स राजा छोटां सूं गम खाय।।

हवा रै लैरकै रै सागै जिकी धूड नै आपां पगा सूं मसळता रैवां, वा तो माथै ऊपर पूग जावै पण जिका अकड़ू भाठा हुवै वां रै भाग में तो ठोकरां ई लिखियोडी है। जठै बडा–बडो नै झोबा आय जावै, बठै छोटा गिणीजण वाळा लोग आपरो माथो माड सकै है। रम्मता रै संवादा मे छोटा लोगां रै ठरकाळ अर टणकै त्याग रो भी बखाण मिलै। वै भी मिनख है, कोई डागरा कोनी कै बिना बात धिरकारता रैवा अर काण–कायदो खूटी माथै टागदां। रम्मतां में गुणां नै डंडोत है, ओहदै नै कोनी।

सद्गुणां री पूजा :- सिरै गुण तो है वचन पालन रो। मूंडै सू बोल निकळियां पछै उणनै निभावणो आपा रो फरज है। जीभ तो लिपळी है, चावै ज्यूं बोल जावै– आ कैवण वाळां नै पैला गै'रो विचार कर'र ही बोलणो चाईजै। राजा हरिश्चन्द्र तो सुपनै मे जिका वचन दे दिया हा उणांनै भी आखी उमर निभाया। रम्मत रो अेक बोल इण बात री साख भरै–

विप्र वचन तुमको दिया स जी हरगिज चूकूं नाय
जे चूकूं तो ऊभो सूखूं धोबीकुंड रै मांय
राज पाट सरवेस संकल्प थांनै किया
हाल–हुकम इकत्यार आपका हो गया।

दुनिया में द्रिस्टात तो घणा ही मिलै पण सुपनै रा वचन जागियां पछै भी निभावण रो उदाहरण तो न्यारो–निकेवळो ही है।

साच री साख :- कैवै है कै कूड रै पग कोनी हुवै-- वो तो पांगळो हुया करै। साच री साख सवाई हुवै'। साच री बेल सदीव हरी हुवै। राजा हरिश्चन्द्र री रम्मत में इण बात माथै सखरो जोर दियो गयो है--

सत छोड़्या पत जाय जगत मे कठिन बिखा दिन सैणा जी।
तीन लोक रा नाथ निरंजन, ज्यूं राखै त्यूं रहणा जी।।

सत री जोत नै सवाई राखण सारू लोगां किता--किता दुख सैया, किता पापड बेलिया, कितो संताप भोगियो, इणरो लेखो राखणो ओखो है। सत री आण निभावण में वां नै कदेई झूझळ कोनी आई। वै नीं तो डफळीजिया अर नीं डिग्गूपिच्छू हुया। तळतळीजिया पण चुंकारो ई कोनी कियो। मिनखपणै नै ऊजळो राखण सारू प्राण नै भलाई होमणो पडै पण सत सूं डिगणो मजूर कोनी हो।

मरणै री होड :- दूजी जागा जठै लोग जीवण सारू सौ जतन करै, वीर बांकुडा लोग मरणै नै मंगळ मान'र चालै। मरणै में पैल करण री होड लागिया करती। अेक कैंवतो पैला म्है मरसूं तो दूजो कैवतो नहीं, पैला हक म्हारो है। रामसिंह अर शेर खान पठान रा अै बोल आज भी वीरा रा रूगटा ऊभा कर सकै--

शेरखा . पहली रामसिंह हाथ हमारा, हक दुनिया में है मरणा।
रामसिंह सुणो शेरखां बात हमारी, हम पहले, तुम फिर मरणा।

है कठैई इसो सांतरो उदाहरण ? मुसळमान अर हिन्दू रै बिचाळै मरणे में पै'ल करण री इसी होड ? रम्मत रा अै बोल दोनूं जातियां रै बिचाळै अेक इसो पुळ बणाणै जिकै नै काळ रा झपेटा भी कोनी तिडकाय सकै।

दुख रै माय हाडीराणी शेर खान पठान नै जुद्ध में मदद देवण सारू परवाणो भेजै। जात चावै जुदा हुवा पण विस्वास अखंड हो। हाडीराणी रा बोल--

और घणी म्हैं क्या लिखूं जो कुछ अंतर होय
धड--सिर दोनूं अेक है तुम मत जाणो दोय
तुम नौकर शाहजान के, म्हांसूं रूठ्यो राम
आवो तो ओ बखत है नहीं तो सात सलाम।

अर चिट्ठी पढता पांण ही शेर खान पग मे पगरखी भी नीं घालै, नाठतो आय जावै। नतीजो साफ हो--

लाखे फौज दुळ हुई सरे बादळ छायो भाण।
अेक बह्म राठौड़ की स रे दूजो सग पठान।।

असली-नकली में भेद :- बात असली अर नकली रै आंतरै री है। गुणवान मिनख अबखायां भोग'र ही गुण कानी ळुळैला पण नकली पैला आपनै बचावण रा सरतन करैला। आम्चा री ठौड आकडा किया लेय सकै–

असली कमसल आंतरो स राजा कठै आक कहां आम
असली तो अवगुण तजै सो राजा, गुण नै तजै गुलाम।

रम्मतां मे मिनखाचारै रै पळपळाट करतै भावां री पूजा है, ऊचै आदर्सां री थरपणा है अर दाठीक विचारा रो सम्मान है। औ ई कारण है कै रम्मतां नै देखण सारू भाई–बैन, धणी–लुगाई, टाबर–टींगर, बूढा–ठाढा सगळा अेकै साथै रस लेय सकै। कठैई कोई आवल–कावळ बोल कोनी मिलै। जे कदास प्रेम रा प्रसग भी हुवै तो भी अेक हद ताई मरजाद रो पालन जरूर हुवैला। रम्मतां आपारै जनजीवण री हेमाणी है। आपांरी सखरी परम्परा री साची निसाणी है। अणपढ लोगा भी साच रो जिको मारग अपणायो, उणरै लारै रम्मतां रो महताऊ जोगदान रैयो है।

लोक-संगीत री रसवंती धारा

लोक संगीत अर सास्त्रीय संगीत रै विचाळै अेक गै'री चवडी अर अणभरी खाई बणगी है। इणरा केई कारण हुय सकै। सास्त्रीय संगीत आपरी पवित्रता रै नाव माथै अभिजात रै ओळैदोळै रैवण रै सिवा और कीं भी नहीं सोच सकै। वो महारथियो रो मायाजाळ है। वो साधारण मिनखा री पौं'च सूं वारै है। उणमे जटिलता है। वो बंधी-बंधीई पटरिया माथै ई दौड सकै। सुरा सारू अणूतै आग्रै रै कारण उणमे सबदा री कोई खास ठौड कोनी हुवै। सुर तो दिगम्बर है, सबदा रो गाभा पैरियां पाण ई साधारण मिनखां सारू वै कीं कार रा हुय सकै। चमगूगो हुयोडो साधारण मिनख नीं तो उणानै समझ सकै अर नीं रस ई लेय सकै।

दूजै कांनी लोक संगीत में अेक न्यारो-निरवाळो फक्कडपन है। नेम-कायदा रा गळघोटू जंजाळ अर पंपाळ पाळियां बिना वो पाणी री निरमळ धार ज्यू बैवतो रैवै। वै मे अेक अलमस्त फक्कडपन रैवै। वौ सगळां नै सागै लेय'र सगळा रै सारू सिरजण करै। वो कुदरत री कूख सू उपजै। मां रै हांचळा रो दूध पीय'र पनपै अर सिरजण रै वेग नै रातोमातो बणायो राखै। लोक सगीत में सुरा रै सागै सबदा री साख भी रैवै। सबद सूं ई तो चेतना रो रथ आगै बधिया करै। सबद नीं हुवै अर अरथ रै पेटै कोरो मून पसरियोडो रैवै तो उण गूंगैपण सू साधारण मिनख रै पल्लै काई कोनी पडै।

इण रो मतलब कोनी कै लोक सगीत सुरा सू ,राग-रागणिया सूं, लय रै बहाव सू अर सगीत री ऊडी रसधारा सूं साव सूनो है। उणमे अै सारा तत्त्व है पण नेम-कायदां रा अणूंतो बधेज कोनी। अेक तरै रो खुलापन है। भावनवा रै सागै विचारां री गळबाथ है। वो अणंत काळ सारू अखी रैवण री धुन मे "आज" नै अलायदो कोनी मेलै। वो आपरी औकात नै पिछाणै। टूकै में कैवा तो लोक सगीत मे संगीत रै प्रजातंत्र रा भाव है। उणमें अलमस्त रंजन है।

मूळ में है लोकधारा :- सवाल उठै कै संगीत मे सास्त्रीयता आखिर कठै सू आई ? क्या उण सास्त्रीयता रै मूळ मे लोकधारा कोनी ? क्या लोक जडा सू रस खैच'र वो सास्त्रीयता रै मीठा फळां तांई कोनी पौचियो ? सास्त्रीय सगीत जिण घडी लोक सू पूरी तरै अलायदो हुय'र चालण लागो, वो साधारण मिनखा

सारू परायो बणग्यो। पवित्रता, सौ टका सुद्धता अर नेम–कायदां रै घेराव में रैवतो–रैवतो वो लोकधारा सूं रीगूंदा कटग्यो अर नाम वाळा संगीतज्ञां अर छोटी सी जागा माथै भेळा हुय र सुणणिया पारख्या ताई सीमित हुयग्यो। संगीत रो दायरो ओछो हुवतो गयो।

लोक संगीत में आनन्द अर उमाव है। चेतना रो वासो है पण फिल्मी–संगीत जैडी अणूती फुरफुरी कोनी। नकलचीपण रो चक्कर तो नाव रो ई कोनी। उणमें भाव सम्पदा है, समरसता है, लोक रो उमाव है, उणरा सुख–दुख है, उणरी सामरथावां है पण बौद्धिकता रा पंपाळ कोनी। खुद नै ई सिरसिधजी मानण रा भाव कोनी।

लोक संगीत राजस्थान री सुरगी संस्कृति रो औनाण है। जठै लोग लूरां लेवै, गैरा रमै, गीतडला गावै, घूमर अर लूर रा निरत करै उठै संगीत री मांयली मिठास बिना काम कोनी सरै। संगीत री आ मिठास ई तो धोरां री धरती री खास पिछाण है। आ राग री धरती है, रंग री धरती है, रस री धरती है। मांड राग री ढाळ मे जद *"केसरिया बालम आओ नीं पधारो नीं म्हारै देस"* गाईजै, जणै यूं लागै जाणै रेत रो रवो–रवो नाच रैयो है। चावै रतन राणा हुवो या मूमल, ओळूं अर सुपनो हुवो या कुरजा, काछबियो अर बायरियो, रस रो कळस छळकतो ई रैवै। कठैई बन्ना गाईजै तो कठैई जल्लो, कठैई हरजस अर वाणियां उगेरीजै तो कठैई पडा बाचीजै। लोक संगीत हुवै अर लोक बाजा नै टाळदा, आ बात तो हुय ई कोनी सकै। *आपांरा मोरचंग, नड अर अळगोजा, आपारा कमायचा अर रावणहत्था,* आपारा ढोल अर नगाडा इण संगीत नै सौ गुणो असरदार बणावदै। लोक संगीत इण रूपाळी धरती रै कठ रो सिणगार है। भलै अर भोळै मानखै री भावनावां रो साचो सरूप है। इणमे लोकभाव है, लोक–दिखावो कोनी। ओ आत्मा रो रस है, मन री मायली महक है अर हिडदै रै तारा री साची झणकार है।

संस्कृत साहित्य रै मूळ में जिया लोक साहित्य अर आधुनिक बाजां रै मूळ मे जिया लोक–बाजा है उणी तरै सास्त्रीय संगीत रै मूळ मे लोक संगीत है। लोक संगीत नै *निरख–परख'र उणरी गुणवत्ता नै भाळ'र उणनै राग–रागणियां में बांधण* रो काम सास्त्रीयता रै पेटै हुयो। अै अरोह–अवरोह, वादी–प्रतिवादी स्वर, राग–विधान अर राम जाणै किता–किता करडा नेम–कायदा बणता चल्या गया अर सास्त्रीय संगीत रो सरूप निखरतो गयो। लोक संगीत में कायदां री इती चौकीदारी कोनी हुवै। खुद री परम्परा रै हवा–पाणी सूं वो आपोआप पागरतो रैवै।

साहित्य मे वर्णां सूं अर सबदा सूं अर्थ उपजै पण संगीत में स्वरां सूं सबद

कोनी वणै। स्वरा रै कलात्मक भेळप सूं जुदा-जुदा धुनां सिरजिया करै। अै धुनां ई मन मे मोद रा भाव जगावै।

लोक संगीत री महताऊ वातां :- पुराणै कवीलो अर आदिवासी समुदायो रै सगीत मे भी लय तो हुया ही करती ही। सास्त्रीयता वाळी वारीकी तो घणी वाद मे आई है। सात स्वरों अर वाईस सुतियो रै जलम सूं पैला तो लोक धारा रो घणो ई पाणी चेतना रै समन्दर में वैय चुक्यो व्हैला। सास्त्रीय संगीत में लोक धारा सूं जिका तत्त्व आया, वै है स्वरों रै संगीत रो अेक ढाळो अर रंजकता रा भाव। लोक सगीत म सामाजिकता हुवै। समाज रै मान-मोल, उच्छव, तीज-तैंवार रै विचाळै ओ सगीत जलमियो अर पांगरतो रैयो। लोक में भी धुना वणावण री पैल कोई न कोई मिनख करीज व्हैला पण उण आदू मिनख री पिछाण समाज मे रळमिलगी अर उणरो अलायदो नांव कठै ई भी कोनी थरपीजियो। समाज रै संगीतमय इतिहास मे कोई अेक जणै रै नाव री जागा सकल रो नाव आया करै।

दूजी बात आ है कै लोक संगीत री घणखरी सैलियां इसी है जिकी सामवेद रै संगीत रै आसै-पासै पनपती रैयी है। गायन मे कठैई दो स्वरां तो कठैई तीन स्वरां रो प्रयोग हुवै जदकि सास्त्रीय संगीत मे तो पाच स्वरा रै बिना संगीत वण ही कोनी सकै। आ लोक सगीत री न्यारी-निरवाळी पिछाण है। हरजस-कीर्तन मे तो कणैई-कणैई अेक स्वर सूं ही धाको धिक जावै। दो-तीन स्वरां वाळा तो अलेखू गीत मिलैला।

माड धुन कैवो चावै माड गायन री सैली कैवो, इण रा स्वर खमाज सू खासा मिलता-जुलता है। मेलजोल हुवता थकां भी लोक संगीत नै सास्त्रीयता रै खातै मे कोनी खतायो जाय सकै। राग बणणै सारू कोरी स्वरा री अेक खास तरै री भेळप ही काम कोनी आवै, उणरै सागै राग री खास पकड, वादी-संवादी अर अनुवादी स्वरां रा मानणजोग अर बरजण-जोग रूप, आरोही-अवरोही, स्थायी अर अंतरां रा नेम-कायदा अर राग री बेळा आद घणी बाता रो ग्यान जरूरी हुवै। अै बंधेज लोक संगीत में कोनी हुवै। लय तो हुवै पण जटिलतावां कोनी हुवै। ताळ में खाली, भरी अर सम रै जंजाळ मे फसियां बिना भी लोक धारा अखी रैय सकै। आपा रै लोक संगीत री लय री गति 6, 7 अर आठ मात्रावां री है। सास्त्रीय संगीत रै नैडै आवण सारू 6 मात्रावा रै दादरै, 7 मात्रावां रै चाचर, तेवरा अर रूपक अर 8 मात्रावा रै कहरवा रै आसै-पासै ओ संगीत चालतो रैवै। लय माथै ध्यान दियो जावै अर मात्रावां रो वजन बणियो रैवै तो लोक संगीत रो धाको धिक सकै। लोक सगीत मे सरलता री लय हुवै, जटिलता रा पचडा कोनी हुवै।

लोक संगीत मे मॉड री खासी महताऊ ठौड है। इण मीठी–मधरी लोकधुन रो जलम तो जैसलमेर में हुयो गिणीजै पण बीकानेर आय'र आ पांगरी अर फेर जोधपुर अर उदयपुर मे पूग'र परवाण चढी। लोगां रै कानां मे रस घोळतै–घोळतै मॉड आखै भारत में धूम मचावण ढूकगी। अेक बगत हो जद मीरां भी इण राग मे आपरै बिजोग नै वाणी दी तो गुजरात रा संत कवियां भी इणनै अपनाई। मॉड सूं मै'ल गूजिया तो झूपड्यां ई इणरै रस सू सराबोर हुयां बिना कोनी रैयी। मॉड संसारी भावां नै तो उगेरै ई है, आत्मा अर परमात्मा रै मिलन अर नाद ब्रह्म री आरती री निमित भी बणै।

लोक सगीत नै समझण सारू इण झीणी बात नै समझणी भी घण जरूरी है। मॉड रा केई अेक गीत घणा चाव अर रसीला है। गायक चावै तो राग जैजैवन्ती मे अर पीलू मे भी रस रा झरना वैवाय सकै। जैजैवन्ती राग मे "आयो–आयो मेवाडा रो साथ, आधा नै कसूम्बल आधा केसरिया ओ राज" जद गायो जावै तो रात री बेळा अर ठंडी–ठंडी हवा रै लैरका रै सागै आ राग स्रोतावां रै हिडदा मे झकार भर दै। राग पीलू मे बीकानेर सैली रो गीत "कुण थांनै चाळा चालिया जी ढोला, कुण थानै दी इसी सीख" जद गाईजै तो जाणै इमरत री रसधार सगळा नै तरबतर कर रैयी हुवै। पीलू में मूमल भी गाईजै जिंया "सूरज जिसो है उजास प्यारी धण ओ राज, चाद अे सरीखी धण ऊजळी जी म्हारा राज।"मॉड रो नाव आवै अर कोई अल्लाह जिलाई बाई का पछै गवरी देवी नै भुलाय दै, आ किया हुय सकै।

मॉड इण धरती री मनचायी धुन है। इणरो चाव इधको अर अलायदो है। इणरी तासीर न्यारी–निरवाळी है। इणमें हेत रा हबळका है, मरुधर री मिठास है अर केसरिया बालम जैडी केई मन–भांवती ढाळां हैं। पेसेवर गायक जद मॉड रा न्यारा–न्यारा रूप जियां सूब मॉड, आसा मॉड, सामेरी मॉड, टोडी, सालंग, सिंधी भैरवी, जंगळा आद धुनां नै कदेई स्याम–कल्याण मे, कदेई मल्हार अर मारू राग मे तो कदेई काफी राग मे संवारै तो इया लागै जाणै मरुधर खुद आय'र मीठी मनवारां करतो हुवै। मॉड नै केई विद्वान खमाज थाट रै नैडै मानै तो केई दूजा बिलावल थाट रै नजीक गिणै। मॉड कोरो अेक गीत कोनी, आ तो गीत री अेक सैली है। आ लोकराग है, इण सारू इणमे आरोह–अवरोह रा घणा दंद–फद कोनी। घणखरा गीत गधार, पंचम या निसाद सू सुरु हुवै। इयां गीतां मे केसरिया बालम, मूमल, रतन राणो, काची करियो, बाजरियो, सूवटियो, काछबियो आद घण चावा है।

मॉड रै बरोबर जिकी सैली में गायकी हुवै, वा है सोरठ। इणनै केई लोग

राग देस री ई अेक सरूप मान पण सोरठ री आपरी निजू सरूप हुया करै। सोरठ री बदिसा मे "होजी म्हारी वेग सुणलीजो" अर "मारूजी चादणी रातै सेजरिया क्यू नी चालो" घणी रसीली है। लूर सारग, ब्रिन्दावनी सारग, मिया की सारग आद रागा मे भी राजस्थानी गीत निखरता रैया है।

गवरी देवी जद गावती तो उणारै स्वरा री गैराई, अदायगी रो ढगढाळो, सुरू टेक, लयकारी अर सगीत री दूजी झीणी परता आपोआप खुलती रैवती। मीरा, तुलसी, सूर अर कबीर रा घणखरा इसा पद वा नै याद हा, जिका मॉड मे गाईजिया सू स्रोतावा माथै अमिट छाप छोडता। वा री गायकी मे अेक तरै रो चमत्कार हो।

मॉड रो पर्याय ही अल्लाह जिलाई बाई। वा री अवाज रो उतार–चढाव अर बुलदी, लोच, मिठास अर कसिस सुणण रो जिकै नै मौको मिलियो, वो उणा नै कदैई कोनी भूल सकै। वा री गायकी मे अरथायी, ख्याल, टप्पा, तराना अर गजळ सगळा भेळा हा। सिकार रै गीता री माग हुवती तो वै "बादीला म्हारो मन नहीं लागै, मौडा क्यू पधार्‌या छैल सिकार सू" सुणावती। मॉंड मे तो वा रो मन हरदम बसियो ई रैंवतो। ठेका मे मॉड सुणावण री कला मे वै ठेका, झूमरा, आडा, झफताळ, सोळै मात्रा, दीपचदी, दादरा, इकताळ आद रो भरपूर प्रयोग किया करती ही। वा नै बेगम अखतर, मेहदी हुसैन अर गुलाम अली रै सागै गावण रा भी मौका मिलिया हा।

सास्त्रीय सगीत रै आजू–बाजू लोक सगीत री धारा भी सईका सू बिना किणी अडचण रै बैंवती रैयी है। अै जागण, जमा, रातीजोगा, देवतावा री जात, हरजस, वाण्या अर पड–वाचन आद अलेखू कार्यक्रम इसा है जिणमे सास्त्रीय सगीत सू बेसी लोक सगीत चालै। लोक सगीत रै कलाकारो नै चावै राग–रागण्या रो सास्त्रीय ग्यान कमती ई क्यू नी हुव, वै लयकारी मे कमी कोनी राखै। आ ध ारा स्रुति परम्परा सू जुड'र कठ सू कठ ताई जात्रा करती काळ नै पार करती रैयी है अर आज भी इणरी आपरी न्यारी–निकेवळी ठौड है। लोक सगीत नैं सब सू ज्यादा सायरो भी लोक सूं ई मिलियो। यूं राजा महाराजा, सेठ–साहुकार अर दूजा असरदार वर्ग भी इणनै पनपावता रैया है पण लोगा रै विस्वास अर आस्था रै पाण ई इण धारा नै सजीवणी मिली। नीं तो लोकगीता माथै किणी खास रचनाकार री छाप हुवै अर नीं लोक सगीत माथै। नीं कोई धर्म रो ठप्पो हुवै अर नीं किणी जात रो। लोक सगीत अर लोकवाद्य रो गठजोड जुगा पुराणो है। गायका नै जद कमायचा, खडताल घडा, मोरचग अर रावणहत्थै रै साजा रो सायरो मिल जावै तो राग–रागणी आपो–आप फूट पडै। विनायक, मेहदी, तोरण

जलो, ब्यांव, सगाई रा गीत समाज री धडकण वण चुकिया है। लोक संगीत मंगळ री आरती उतारै। गीतां री माग रै मुजब द्रुत, मथर अर मद गतियां चालती रैवै। बिदाई रै गीत री धुन "सुहाग मागण चाली आपरै दादोसा रै पास" वाळी धुन सूं अलायदी हुवै। "आयो-आयो रागां रो सूवटो, लेग्यो टोळी मायसूं टाळ, कोयल बाई सिध चाली ए" गाईजै जद आख्या डबडबावती रैवै। इण भाव-प्रधान विदाई गीत नै जद सागोपांग सगीत रो सायरो मिलै तो पीडा रा भाव गैरा हुयां बिना कोनी रैवै। इण टांकडै सास्त्रीयता रै नेम-कायदा री जागा परम्परा सूं चालती रैयी सैलियां अर धुना ई काम मे आवै। राग औपचारिकता री जागा सहजता सूं सवरै। जद ताई लोक री अनथक जात्रा चालती रैवैला, लोक सगीत भी पांगरतो रैवैला।

संगत रा साज (लोक-वाद्य)
धुन, झणकार अर ताक धिना धिन....

टाबरपणै मे कहाणी सुणता आया हा "चाल म्हारी ढोलकी ढमाक ढम"। थोडा बडा हुया तो सुणण लागा "बात मे हुकारो, फौज मे नगारो, नगारो बाजै गडड धीं, नीचे खीचडो, ऊपर घी।" बडा हुवता गया तो देखियो कै किणी देवता रै हाथ मे डमरू है तो किणी रै हाथ मे बासरी। कोई वीणा बजावै तो कोई सख नै गुजावै। अै ढोल-ढमाका, नगारा अर डमरू, वीणा अर बासरी जीवण रा साज है। साज नहीं तो जीवण मे सार नहीं। सुरा मे गडबड हुया जिया राग बेसुरो हुय जावै उणी तरै ताळ बिना बेताळो बणै। बेसुरो अर बेताळो हुवण रो मतलब है कै जीवण नीरस है, अलूणो है, साव रूखो है। साज राग नै सजावै, वाद्य रस री ग्रिस्टि करै।

रागनै पाटो हुवो चावै मेज, मन मे उमग आया पाण आंगळ्या थिरकण लागै अर ताळ सरू हुय जावै। आरती मे, हरजस में अर पूजा मे ताळ देवण सारू लोग ताळिया बजावै। नाचण री बेळा घूघरा घमकावै। ताळ अर साज री सगत सगळी जागा है– थाळी री झणकार मे, घण्टी रै निनाद मे, छमछमा मे, खडताळ मे अर अठै ताई कै मुंडै सू बजावण वाळी सीटियां मे। जिसो जीवण, उसी ताळ। जिसो आचळ, उसो साज। पूगी सुण'र जद सांप भी रीझ जावै तो मिनख तो आखर मिनख है। साज सू जीवण सजै, ताळ सू मन मे तरी आवै।

मरुधरा रै साजां री आपरी न्यारी–निरवाळी पिछाण है। अठै गावा मे जिका साज काम मे आवै, वै आज रै आधुनिक जुग रै आथूणी दुनिया रै साजा सू खासा अलायदा है। वा मे अेक निजू आकरसण है। जणै ई तो अठै रा कलाकार देस–विदेस मे जाय'र नाम कमावै अर राजस्थान रै गीरवै नै बधावण में आगै रैवै।

झणकार छोडण वाळै वाद्या मे करताळ अर खडताळ है तो घटी, चींपियो (चिमटो) झाझ अर झालर भी है। टिकोरी, थाळी अर घूघरां है तो मजीरा अर

मोरचग भी है। ताळ वाळै वाद्या मे घडो, खजरी, चग अर डफ है तो डमरू, डेरू ढोल अर ढोलक भी है। तासा, दमामा अर नगाडा है तो माटा, मादळ अर मटका भी है। स्वर वाद्यां मे पूंगी, अळगोजो, नागफणी, नड, बांकियो अर भूगल है तो सतारा, मशक, चकारा अर मुरला भी है। तत् वाद्या मे इकतारो, कमायचो अर भपग है तो गुजरातण सारगी, जोगिया सारगी, धानी सारगी, सिधी सारगी अर रावणहत्थो भी है। और भी घणा ई साज है जिया सुरमण्डल, सुरिन्दा, रबाब चिकारा आद। कण्ठ सगीत हुवो चावै निरत, साजां रै बिना किणी मे रंगत कोनी आवै। चावा साज हुवै तो असर चौगुणो। लोकनाट्या मे भी नगाडा सूं लेय'र घूघरा ताई रो अेक गजब रा आकरसण है। गायकी मे जद सम आवै तो नगाडा अर नक्कार आपरो जिको असर दिखावै, इणरो दरसाव वाहवाही रा लावा लूटण जिसो है।

जस दूणो, जस चौगणो :- १९६६ मे मरू भोम रा केई लोक कलाकार बेल्जियम गया हा। बोरुन्दा री रूपायन सस्था कानी सू "दी इन्टरनेशनल यहूदी मेनुहिन फाउण्डेशन" मे भाग लेवण नै इया कलाकारा नै भेजिया गया। बठै बरना (जैसलमेर) रा खडताल वादक गाजी खा, कमायचा वादक साकर खा, ढोलक वादक फिरोज खा, मुरली वादक पेपे खा, सारगी अर अळगोजा वादक मेहरदीन अर दूजा कलाकारा जिका रग बिखेरिया, उणनै देख'र भारत रा ख्यातनाव सितार वादक रविशकर अर दुनिया रा नामी वायलिन वादक मेनुहिन तकातक झूम उठिया। मरू भोम तो कलाकारा री 'खान' है। सुआ देवी अर सायरी देवी रो कालबेलिया नाच उण रगत नै चौगणी करण रो काम कियो।

मागणियार जात मे तो पालणै सू ई गुणां रो पगफेरो सरू हुय जावै। बरना (जैसलमेर) रो कलाकार तालब खा अबै जाय'र निठ बीस–बाईस बरस रो हुयो है पण वै तो टाबरपणै मे ई आपरी कला रै पाण रामजाणै किता देसा री जातरा करली। बो जद खडताळ, मोरचग अर हारमोनियम लेय'र सामी आवै तो देखण–सुणण वाळा माथै जाणै जादू हुयो व्है, इसो असर हुवै। वो कराची सू लेय'र आथूणी दुनिया रै जर्मनी अर फ्रास तकातक आपरी पिछाण कराई है। खडताळ री सगत अर कैरवा, दादरा, तीन ताळ, चौताळ, जपताळ, कलरू अर मटकू ताळा रा स्वर निकाल'र वो सगळा नै झूमण सारू मजबूर कर दैवै। जद मोरचग बजावै तो उणरी धुन रै सागै गोरबद, हिचकी, मोरू बाई जिसा लोकगीता मे भी नूवी जान फूक दै।

राजस्थान रा मिन्दर, मै'ल माळिया अर उकीरियोडी कला रा दूजा रैवास इण बात री साख भरै कै अठै भात–भात रा बाजा घणै जूनै वगत सू बरतीजता

रैया है। उणां में केई मरु अंचळ रा है तो केई भारत रै दूजै अंचळा रा भी है। ईयां में ढोलक, खडताळ, मजीरा अर सारंगी है तो सितार, सरोद, जळतरंग, पखावज अर सहनाई भी है। नगारै री तासीर धूम–धडाकै री है। डफ री चंचळ अर ढोल, डमरू अर तासां री उछांछळी है। नगारा हुवो चावै माटा, वानै जमीन माथै सीधो राखणो पडै। ढोल अर ढोलकी नै कीं टेढा राखिया जावै। मोटी बात साधना री है। कलाकार जे साचो साधक हुवै तो वो किणी भी बाजै मे प्राण फूक सकै। भगत लोग तो लोक–बाजों रो सायरो लेवता ई आया है। मीरा घूघरा बाध'र हरख–उमाव रै सागै नाचती। नरसीं मेहता तम्बूरो बजाय–बजाय'र भगवान नै रिझावता। निरत मे तो बाजै रै बिन पग ई कोनी उठै। गायन मे भी वाद्य री संगत घण जरूरी है।

लय अर ताळ माथै ई तो आ सगळी स्रिस्टी टिकियोडी है। मिनख री देह मे भी हिडदै री धडकन अर नाडी री चाल किणी लय–ताळ नै ई तो दरसावै। बात साधना रै खरैपण री है– जे साधना सखरी हुवै तो कला रो संसार पूरी तरै निखर सकै।

पुराणी कैवत है, "मद्यो ददामा जात है कहीं चूहे के चाम"। मानै ऊंदरै री खाल सू कोई नगाड़ा थोडा ई बण सकै। आ बात सोळै आना सही है पण भेड़ अर बकरे री खाल सूं तो मढीज ई सकै है। *अेक मिनख री चामडी (खाल)* ई'ज इसी है जिकी मरियां पछै या तो बाळण रै काम आवै या पछै बूरण रै। बाकी कई कार री कोनी पण जिनावर री खाल तो बेथाग कामा में आडी आवै।

मिनख रो दिमाग इसो है जिको लय, धुन अर ताळ नै बाधण रा सहस जतन करना जाणै। बस साधना हुवणी चाईजै। पछै चावै तार हुवो या फूंक री करामात, भात–भातरी धुनां सिरजीण सकै। अैडा कलाकार मौजूद है जिका गळै री नसां सूं नसतरंग जिसा बाजा बजाय सकै। मध्यप्रदेश रा बशीर अहमद अर राजस्थान मे ब्यावर रा शंकर बुलद इण कला में पारखी है। वां नै आ सफळता मेहनत अर साधना रै पाण मिली है। नसतरंग में अेक पडदो हुया करै। अवाज नै गळै मांय दबायां सू अेक तरै री कम्पन उपजै। साज रै पडदै रै कारण वा कम्पन धुन मे बदळ जावै। शंकर बुलंद लगोलग पाच–सात मिनट ताई गळै री नाड़ या सू नसतरंग बजाय'र दिखायी है। इणरै सागै जद तबलै अर हारमोनियम री संगत हुवै तो फेर कैवणो ई कांई है।

राजस्थान रा लोक वाद्या मे चार तरै रा वाद्य (बाजा) है। विगत इण तरै है– (1) ताळ वाद्य (2) घन वाद्य (3) स्वर वाद्य अर (4) तार वाद्य। केई वाद्य इसा है जिकां में अेकै पासे खाल मढीजे पण दूजो पासो खुलो हुवै जियां डफ, खजरी,

अर चंग। ढोल, ढोलक, डेरू, डमरू अर मादळ में दोनूं पाखां में खाल मंढीजै। नगाडा में ऊपर तो खाल हुवै पण दूजै कांनी कीं भी खुलो कोनी हुवै। झणकार वाळा बाजां मे भांत–भांत रा धातु अर लकड़ी आद काम मे लिया जावै। घडण वाळो या मंढण वाळो जे ठोठ हुवै तो कातियो–पींजियो कपास हुंवतै जेज कोनी लागै।

ताळ वाळा बाजा :- ताळ वाळा बाजा इंयां तो बीस पच्चीस है पण अठै बिगत दो–चार बाजां री ई देय रैया हां। बाकी माथै चिनी–चिनी सी' की टीप है।

चंग :- होळी रो तिंवार, बसंत रो रंग, मन री उमंग अर जवानां री टोळी रो अणमांवतो उमाव। चंग हाथ में आंवतै ई मन रा भाव उमडियां बिना कोनी रैवै। भांत–भांत रा गीत गाईजै जिंयां "सूओ पाळ्यो रे ठाकर री बेटी जुलम कियो, सूओ पाळ्यो रे..." या "देवर म्हारो रे, रेसमी रूमाळ वाळो रे, देवर म्हारो रे..।" माथै सूं ऊपर चंग नै लेजाय'र छैला जद मीठा–मधरा गीत गांवतै थोड़ा आंका–बांका हुय'र चंग माथै थाप लगावै तो यूं लागै जाणै मौसम में मिसरी घुळगी व्है। होळी रा रसिया चंग माथै धमाल गावै। चंग री बणगट भेड़ री खाल नै लकड़ी रै घेरै माथै मंढणै सूं हुवै। इण खाल सूं मंढियोडी चंग री अवाज मीठी, मधरी अर सुरीली होवै। केई रसिया चंग रै च्यारूं मेर घूघरा अर पीतळ रा छल्ला भीं जडावै। गीतां में छेकड जांवतै आवण वाळै 'रे' माथै घणो जोर दियो जावै जिंयां–

हंस बोलो रे
दॉत दिया भाई मुखडै री सोभा नै
जीभ दीवी थोडो राम रटो रे..... हंस बोलो रे.

आठ–दस चंग वादक भेळा हुय'र गोळ चकारियै मे जद भात–भांत रा गीत गावै तो सगळां रा मन मोद सूं छळकता रैवै। ओ है चंग रो जादू। आ है मीठी धुनां री करामाती मनवार। चंग बजांवती बेळा वादक अेक हाथ सूं घेरै माथै अर दूजै सूं बीचोबीच धडंदा लगाया करै।

डफ :- लोहे रो गोळ घेरो अर बकरै री खाल सूं मंढियोडी डफ। कसावट भी चमडै री। अेक हाथ में डंडो लेय'र डफ बजावण रो मजो भी न्यारो–निरवाळो।

खंजरी :- लोक वाद्य रै रूप मे खंजरी रो घणो ओपतो अर चावो नांव है। खंजरी में तबलै अर पखावज दाईं दोय पाखा कोनी होवै, फगत अेक पाखो ई होवै। खंजरी रा साधक आठ मात्रावां री आदिताळ, सोलै मात्रावां री त्रिताळ अर सात मात्रावां रा रूपक अर दसमुख ताळ घणै उमाव रै सागै बजाय सकै। तबलै रै बोल री तरै खंजरी रा भी बोल है। बकरी री खाल सूं मंढियोड़ो ओ अेक हाथ रो साज है।

ताळ वाद्यां में ढोल, तासा अर दमामा री भी ठावी ठौड़ है। चोखी तरै मढियोडै अर सूत री डोर्‌यां सूं कसियोडै ढोल रा दो भाग है– अेक नर भाग अर दूजो मादा भाग। नर भाग सारू डंडै री जरूरत पडै। मादा भाग माथै हाथ री कला ई काम आवै। ढोलक सारू आम्बै री, सीसम री या सागवान री लकडी चाईजै। दोनूं पाखा मंढीजिया करै। दमामो कैवो चावै नगाडो। इण सारू भैंस री खाल बरतीजै अर कसावट सारू चमडै री लीर्‌या काम में ली जावै।

और भी केई ताळ बाजा है जियां कमट, कुंडी, घडो, डमरू, डेरू, ढाक, तासा, पाबूजी रो माटो आद। डमरू में कळाई री करामात व्हिया करै। कळाई री चाल रै मुजब दोनूं कानी बधियोडा पत्थर चमडै माथै सांतरी चोट करै अर जिकी ताळ सिरजै वा स्रोतावां नै मुगध करदे। चूरू अंचळ मे डेरू रा'केई ख्यातनांव कलाकार है। पाबूजी रै दोनू माटां माथै ताळ रै सागै दो–दो कलाकार जद पाबूजी री गायकी करै तो उणरो असर निराळो ई हुवै। कठै पडी है रस री इसी धारा ! भगती री भगती अर कला साधना री कला साधना।

तार वाद्य :- तार वाद्यां में घणा चावा है भपंग, रावणहत्था अर भात–भात री सारंगियां। इक्तारै रा रंग भी सवाया। फेर कमायचो है, सुरिन्दा अर सुरमण्डल है, रबाब है, चिकारो है, दुकाळौ है अर दुतारो है। तार री माया अपरम्पार है। तार री झणकार सुण'र इसो कुण है जिको मन में नीं रींझै। यूं तो तारां रा सगळा बाजा चमत्कारी है पण अठै तीन–चार माथै ई टीप दी जावैला। इंयां मांय सूं केई वाद्य (बाजा) तो इसा है जिका इण मरु भोम री खास पिछाण है। देस–विदेस मे इंयां रै कलाकारां री मांग है। आज इंयां बाजा रै ताण केई गरीब–गुरबा जिका भूख सू भचीडा खांवता हा अर झूपड़्यां में रैया करता हा, आज दुनियाभर रै देसां में आपरा डंका बजाय रैया है। आज वै घणा सोरा है। वां रै परताप नुंवी पीढी भी परवाण चढ रैयी है।

भपंग :- भपंग रा नामी कलाकार है जहूर खां अर गफरूदीन। अै भात–भात री धुनियां निकाळ'र लोगां नै रिझाय सकै। आछा बजैया मिलिंया सूं साज नै भी मान मिलै। आज च्यारूमेर इंयां कलाकारां री पूछ है। भपंग तूंबै सूं बणै; बडै पाखै माथै चमडो मंढियो जावै अर उण रै बिचाळै हुवै तांत तो अेक तार। तांत माथै लकड़ी रो अेक गोल गुटको हुवै। मिजराब सूं जद तार में झणकार सिरजै तो गुटकै नै खींचणै अर ढीलै करणै सूं स्वर ऊंचा–नीचा हुंवता रैवै।

रावणहत्थो :- ओ राजस्थान अर गुजरात रो चावो साज है। कैवै है कै इणरो जलम रामायण काल में हुयो। रावण रै सिराओं सूं उपजी धुन रै कारण

इणरो नांव रायणहत्थो पड़ियो। रायणहत्थै माथै लोक गाथायां कथीजै, माताजी रा गरबा गाईजै अर पड़ बांची जै। इण रै गज माथै घोड़ै री पूंछ रा केस लगाइजै। रायणहत्थै री मोरणियां दस–बारै रै अड़ैगड़ै हुवै जिकां में लो रा तार हुया करै। साज तो साव साधारण है– नारेल रै खोळ रो तूबो अर बांस री लकड़ी रो डांड अर ऊपर कानी बकरै री खाल। बस घणो तामझाम कोनी। धनुस जियाकली लकड़ी अर कलाकार री करामात। रायणहत्थो धीमै–धीमै लोप हुंवतो जाय रैयो है।

सारंगी रा सौ रंग :- सारंग्यां केई तरै री है जियां जोगिया सारंगी, सिंधी सारंगी, डेढ पासळी री सारंगी अर धानी सारंगी। जोगिया सारंगी नै जोगी बजावै। डेढ पासळी री सारंगी में चार तार हुवै अर सिंधी सारंगी में सोळै पक्का तार अर दो बकरै री आंत रा तार हुवै। सोळै मोरिणयां अर दो मोरणां सूं गज रै सायरै बाजण वाळो ओ साज लंगा जाति रै कलकारों रो है।

इकतारो :- साधू–संत अेक हाथ में इकतारो अर दूजै मे खड़ताळ लेय'र भजन गांवती बेळा मगन हुय'र इण साज नै बजाया करै। इणमें भी कोई घणा दंद–फंद कोनी। तीन फुट लम्बै बास माथै एक खूंटी अर खूंटी में फंसियोडो अेक तार ... बस साज सूं ज्यादा तो कलाकार री कला ई काम आवै।

स्वर वाद्य :- फूंक सूं बाजण वाळा बाजां में अळगोजा, तुरही, नड, पूंगी, बांकियो, मसक अर भूंगळ आद बेसी चलन में है। इंया दूजा बाजा भी है जियां करणा, टोटौ, नागफणी, बरगू अर सतारा आद।

अळगोजा :- तगाराम भील रो कैवणो है कै म्हानै के ठाह ही कै भेड़्यां चरावण बेळा जिको साज बजांवता हा, आज आथूणी दुनिया वाळा गोरी चमड़ी रा मिनख उणनै सुणण सारू बावळा हुय जासी। अळगोजा री बांसरीनुमा नळी में रामजाणै स्वर लहरियां रो किता अखूंट भंडार है। बांसरी दांई इणमें भी सातूं स्वरां सारू तीणा हुवै। दो नळक्यां मांय सूं अेक नळकी दूजी सूं डौढी लम्बाई वाळी हुवै। छोटी नळकी रो सुर ऊंचो अर लम्बी रो कीं नीचो हुवै। बजावण री कला तालमेल बैठावण मे है। तगाराम अळगोजै माथै गोरबंद, पिणियारी, हिचकी अर चिरमी जिसा लोक–गीत गावण में ख्यातनांव है।

करणा :- पीतळ रो लांबो अर नुकीलो साज है।

टोटौ :- छव तीणां रो बेलणनुमा साज है।

पूंगी :- पूगी रै हैठलै भाग री दो नळक्यां में अेक–अेक सरकंडो हुवै। तूंबै रै ऊपरलै पासै में फूंक देय'र इण साज नै बजायो जावै। सुरां नै ऊंचा–नीचा

करण सारू तीणां माथै मोम लगावण री जुगत करणी पड़ै।

बांकियो :- तुरही री जात रो पीतळ रो साज है। इणरो अेक हिस्सो गोळ हुवै अर ओ फूंक सू बाजै।

सतारा :- सतारा में दो बांसर्‌यों नै अेकै सागै फूंक सूं बजाई जावै।

घन वाद्य :- घन वाद्य इंयां तो घणेरा है पण ज्यादा चलन में खड़ताळ, करताळ, घण्टी, चिमटो, टिकोरी, झालर, मंजीरा अर मोरचग आवै।

मोरचंग :- मोरचंग तिरसूळ रै कांटै जिसो अेक साज है। इण मे दो सकुआ रै बिचाळै बिच्छू रै डंक जिसो अेक पातो हुया करै। इणरै गोळ हिस्सै नै डावै हाथ सूं दबाय'र दोनूं सकुवां रै दांतां नै जीवणै हाथ री चौथी आंगळी सूं बजाया जावै।

खड़ताळ :- कलाकार "दोनूं हाथा में आम्बै, सीसम या रोहीड़ै री लकड़ी रा चार चीकणा अर पतळा टुकड़ा रै सायरै सूं इण साज नै बजावै। इण सूं कटकट री अवाज निकळै।

करताळ:- करताल मे लकड़ी रै दो टुकड़ां में झणकार सारू पीतळ री गोल पत्तियां लागोड़ी हुवै। इण रो अेक भाग हुवै अंगूठै मे अर दूजो च्यारू आगळ्यां मे। लकड़ी रा टुकड़ा जद आपस में टकरै तो पीतळ री पात्यां झणकार करै।

डांडिया :- गेर री वेळा डांडियां रो खासो चलन है। दो लाम्बी पतळी डंडियां नै आपस मे टकरावण सूं खटखट री अवाज हुंवती रैवै। चकारियै मे आगै-लारै घूमता लोग इणनै बजांवता रैवै।

मस्ती रा ऐनाण है लोक-नाच

पंजाव रै भंगडै अर गुजरात रै गरवा दाईं मरुधरा रा लोकचावा नाच है घूमर, झूमर अर भवई, गौरी, गेर, कत्थक अर कालवेलिया नाच। धोरां री धरती में तो आखै वरस वारोंई महीना मेळा–मगरियां री, व्याव–सगाई री, विरत–तिंवारां री धमचक चालती ई रैवै। नाच तो मन रै उमाव रो ऐनाण है। जद कुदरत भी आंणद–उमाव रा लावा लूटै तो मिनख–लुगायां पाछ क्यूं राखै ! हवा रै लैरकै रै सागै झूमता– झूलता फूल, फुदकता पंखेरू, गूंजता भंवरा, सूरज री किरणां रै सागै नाचती अचपळी लै'रां, गदरांवती फसळां, पूंगी री धुन माथै फण उठाय'र झूमता सांप, पेड़ां माथै कुदड़का करता बांदरा अर बादळां नै देख'र पंख फैलाय'र नाचता मोर मन रै उमाव नै ई तो दरसावै। कुदरत कणैई इन्दर धनुस रै भेस में सतरंगा गाभा पहरै तो कणैई विरखा री झड़ी में न्हावै, मोटोड़ी छांट्या रै मेह में भीजै अर रंग–विरंगै पंखेरूआं अर फूलां रै मिस रंग रा मेळा लगावै। आतूं पौर उदास रैवण रो ठेको मिनख भी तो कोनी लियो। वै भी भांत–भांत रै नाच सूं आपरो हरख–उमाव प्रगटांवता रैवै।

घूमर :- "म्हारी घूमर है नखराळी ओ माय, घूमर रमवा म्हे जास्यां" रै मीठै–मधरै गीत रै सागै जद चार–चार सौ, पांच–पांच सौ छोर्यां नाना–मोटा घेरां में या ओक रै लारै ओक री पंगत में झूमती–लहरांवती–नाचती–फुदकती घूमर रै लोक–नाच में भाग लेवै तो जिको वातावरण बणै उणरो सबदां में बखाण करणो घणो ओखो है। मेहंदी–रचिया हाथ अर गैणां–कपड़ां सूं लकदक छोर्यां इंयां लागै जाणै इन्दर री अप्सरावां हुवै। रखडी, तीमणियो, बाजूबंद, नथली, करणफूल हार, सोनै रो कंगण, बिछियां, बींटी, नेवरी अर पायल में सजियोड़ी छोर्य भांत–भांत रा रंग–बिरंगा घाघरा, ओढणा अर लैरिया पैर'र घूमर में भाग लेवै पंद्रै अगस्त अर छाईस जनवरी माथै तो कोई भी उच्छब घूमर रै बिना सूनो–सूनं सी'क लागै। इण टांकडै रा गीत घणा मनमोवणा है। घूमर ओक लयबद्ध समूह नाच है। इण में मरुधरा री माटी री मुळक अर सौरम भेळी है।

नाचती बेळा रा गीत कंवारी छोर्यां रै मन री बात बतावण वाळा है। वानै जे किणी खींचीं सूं का पछै हाडा सूं ब्यांव दाय नीं आवै तो वै चवडै–धाडै गावे :-

म्हानै खींचियां नै मत दीजै अे माय
खींचिया तो खीच कुटावै अे माय
घूमर रमबा म्हे जास्या ....

या "हाडा तो जी'रा जाडा अे माय, घूमर रमबा म्हे जास्यां।" मरुधरा नै यार–न्यारा अचळां में दाय नीं आवण वाळी जात्यां में फोरसोर हुंवता रैवै। कठैई ख्रींची अर हाडा बाला लागै तो कठैई कोई दूजी जात वाळा दाय कोनी आवै।

लूर :- लूर लोक–गीत अर लोक–नाच होळी रै टांकडै रो है। इणरा बोल है –

होळी आई रे सहेल्यां मिल खेलां लूर
होळी आई रे....

चटक चादणीरात में राजस्थानी पैरवास घाघरो, लहंगो, ओढणी, कुडती, लैरिया आद में गैणां–कपडां रै सिणगार मे सजियोड़ी कंवारी छोर्‌यां आमीं–सामीं रा दो दळ बांध'र लूर नाच में भाग लेवै। बाजां रै धूमधडाकां रै सागै दोनूं दळ कणाई झुकता, कणांई झपटता अर कणाई आगै–लारै हुंवता गोळ–गोळ चकरियां में नाच करै। जद अेक दूजै रै आमीं–सामीं तेजी सूं आवै तो यूं लागै जाणै समन्दर री छोळां किनारे कानी आय रैयी है अर जद छेती राख'र पाछी सागी ठौड बावडै तो जाणै छोळां पाछी समन्दर मे समाय रैयी है। हाथां सूं ताळ्यां री ताळ अर पगां सूं ठमका चालता रैवै। साव अणपढ लुगायां भी लूर रै मिस आपरै मन रा भाव प्रगटांवती रैवै। होळी रै रंग–बिरंगै तिवार में तो की बेसी ही खुलोपण हुया करै। फेर तो सगळा याद आवण ढूक जावै जियां छैल भंवर रो प्रेम, चूडा–चूंदडी मंगावण री, मेहंदी रचावण री, झूला झूलण री अर गैणा घडावण री बातां अर सासरै रै कामां रै अळूझाड अर ओजीसाळै री सिकायतां।

बींदणी जेठजी सूं छानै–छुरकै लूर रमण सारू आयतोगी पण ताळो जडिया पछै जिकी कूंची लाई ही वा गमगी। करै तो कांई करै ! लूर रै मिस आपरै मन रा भाव इण तरियां दरसावै :–

लूरां री उमाई म्हैं तो कडियां कूंची घाली रै
अेडी रै धम्मोडै म्हारी कूंची गमगी ओ
कूची जोवा दो
वा वा कूंची जोवा दो
जेठजी रै छानै आई ओ, कूंची जोवा दो.....

दिन रा भी लूर रा लटका चालता रैवै। गांव–गांव अर गळी–गळी में गेर रा दरसाव देखण मे मिलै। अठीनै तो छैला चंग माथै रींझावण वाळा गीत गावै

अर बठीनै नायिकावां लूर रा लसरका लेवै :–

चंग रो धमीडो म्हैं तो रसोई मे सुणियो रे
जठै म्हारी केलड़ी झरणाटे चढगी रे
चग धीरै लै
बजावण वाळा अमर होइ जा रे, चंग धीरै लै.....

राजस्थान री जनजातियां अर आपरा न्यारा–निरवाळा नाच हुवै। इण जातियां में भील, गिरासिया, मीणा, गाडिया लोवार, रेवारी, विणजारा, सांसी, गूजर, कोली, ढाढी, मिरासी, खटीक, घोसी अर कळाळ आद केई जातियां भेळी है।

भवई नाच :- भवई जात रा लोग नाचणै–गावणै रा घणा जाणीकार है। समाज मे आयै दिन जिकी घटनावां घटती.रैवै, वा नै नाच–गाणां में पिरोय'र वै बडी चतुराई सूं सार्मी राखै। कठैई बाणियां अर सूदखोरां रा चितराम है तो कठैई बोहरा–बोहरी, सूरदास, लौडी–बडी, डोकरी आद रा कथानक दरसाया जावै। भवई लोगां में भी जात–मिजमानी हुवै। वां री बहिया में जजमानां री पीढियां रो लेखो रैवै। भवई में संकरिया नाच तो घणो ख्यातनांव है। सपेरो संकरियो अेक जोगण सूं प्यार करै। जोगण मांय री मांय तो उणनै चावै पण ऊपर सूं रीसां बळती रैवै। नाच रै मांय लुकाछिपी वा आपरो प्यार भी दरसाय दै। नाच में लयबंदी, गति, ठमका अर घूघरां री घमक सू देखण वाळां माथै गजब रो असर हुवै। भवई मिनखां रो नाच है। लुगायां नै नचावण नै अै लोग आपरी इज्जत नै बट्टो लगावण जिसी बात मानै। भवई मे संगीत रा चार अंग भेळा है, कंठ–गीत, बाजां रा धूमधडाका, नाच अर हाव–भाव।

झूमर :- झूमर रो नांव झूमरै सूं (कान री बाळी) सूं पडियो है। अलवर में जगदीस जी रो मेळो हुवो चावै जयपुर में तीज रो तिवार, उदयपुर री मातृ कुंडी हुवो चावै कोटा रो दसरावो, लुगाया रो झूमर नाच मनमोवणो गिणीजै। इण बगत मिणियां रा ओपता गैणा पैर'र लुगायां जद नाचै तो मिनख भी झूम–झूम'र ताळ मिलांवता रैवै। झूमर रा दो रूप है। अेक में मिनख–लुगाई सागै नाचै तो दूजै में अेकली लुगाई भांत–भांत रा लटका, लचका, ठुमका अर गोळ चकारिया बणावती अर लहंगै रै घेरै नै लैरांवती आपरो नाच देखावै।

गेर :- होळी रै रंगीलै तिंवार माथै गै'रै आणंद में डूबियोडा रसिया लोग–लुगायां नै रिझावण सारू केई सरतन करै। गेरियां रो नाच इण मांय सू अेक है। बीचोबीच हुवै ढोल बजावणियो अर गोळ चकारियै मे हुवै ढोल री ढमाढम सू ताळ मिलांवता गेरिया। गेरिया चकारियै में आगै–लारै हुय'र नाचता रैवै। कणांई–कणाई वारै हाथां मे डांडिया भी हुवै जिकां री खटाखट सू नाच मे कीं

बसा रगत आवै। ज्यों–ज्यों तेजी आवती जावै, नाच में भी फुरती, मस्ती अर कदमां में बीजळी जिसी गति आंवती रैवै। देखणिया विडदांवतै थकै कैवै, "जींवता रैवो, अमर हुय जावो" अर नाचणिया रो हूस अर हौसळो बधतो रैवै। गेर रै नाच रै सागै लोकगीतां री टेर भी चालिया करै। ओ है सोनै में सुहागो, ओ है घी सूं मथियोडै खीच रै सागै आमली रो मेळ अर ओ है बडिया अर कैर–कूमटिया रै सवाद रो आणंद।

चलार नाच :- इण नाच मे मिनख–लुगायां दोनूं सागै नाचै। दो चकारियां मांयसूं मांयलो चकारियो हुवै लुगायां रो अर बारलो हुवै मिनखा रो। मिनख आपरै पागती रै मिनख रै खाधै माथै हाथ राखै तो पागती वाळो आपरै पागती वालै रै खंवै माथै हाथ राख'र चकारियै नै पूरो करै। मांयलै चकारियै री लुगाया भी इणी तरै करती जावै। फेर सरू हुवै बीचोबीच ढोल रा ढमाका। नाच में भाग लेवणिया जीवणै पग सूं तेजी सूं फुदक'र पैला डावो पग आगै मेलै। फेर इणी तरै डावै सूं फुदक'र जीवणो पग आगै लावै। इण नाच मे लय अर ताळ'री जुगलबदी जरूरी है। ज्यूं–ज्यू ढोल रै ढमाको में तेजी आवे, मिनख–लुगायां रै नाच मे भी मस्ती बंधती रैवै।

तेरै ताळ :- तेरै ताळ नाच सूं बेसी डील रै करतब रो काम है। "तेरे ताळ" *नांव इण खातर पड़ियो क्यूंकै इण में तेरै मंजीरा काम मे आवै।* मिनख चौतारा बजावै तो लुगायां मंजीरा। नाच में तेरै रो अंक महताऊ है। तेरै ई झांझ–मंजीरा, तेरै ई गतियां अर तेरै ई नट विद्या रा काम। बाजा बाजता रैवै, पग उठता रैवै, नाच तेजी पकड़तो रैवै अर मस्ती रा झरना बैंवता रैवै।

गौरी :- ओ अेक कथात्मक नाच है। इणमें अेक पात्र शिवजी रो रूप धारै। जटा–जूट, लिलाड माथै चंद्रमा, गळै मे साप, डील माथै भभूत, मिरग–छाळा, हाथ में डमरू वाळो रूप। दो मिनख लुगायां रै भेस में सज–धज'र पार्वती अर उमा रो रूप धारै। लुगायां रो पैरवास अर लुगायां वाळा ई गैणा फेर काजळ, टीकी, मेहंदी अर दूजा सगळा सरतन। अबै आवै शिवजी रा गण– भूत, पलीत, डाकण–साकण अर भांत–भांत रा पात्र। इत्ती ताळ में तो भोपै रै घट में शिवजी महाराज क्यूं नी आय जावै। सामैं हुवै अेक विकराळ दैत्य, अेक जबरदस्त राक्षस। ओ नाच क्या है अेक तरै री लडाई है पण है लयबद्ध अर ताळबद्ध। नाच रो नाच अर लडाई री लड़ाई। शिवजी तिरसूळ सूं राक्षस रो वध करदै। गौरी भी बिणजारा नाच रै दांई भीलां रो नाच है। इण राजस्थानी लोक–नाच नै जगत–चावो *बणावण रो सेय उदयपुर रै देवलोकवासी देवीलाल सामर नै है।*

भवई रा अलेखूं रूप :- भवई माथै पैला भी चर्चा हुयगी पण इणरा भांत–भांत रा रूप है। केई कलाकार माथै ऊपर सात–सात चरू राख'र का पछै

लौड–बडाई री मटक्या मेल'र कणाई खीलां माथै तो कणांई काच रै टुकडां माथै नाचै अर कणांई मटक्यां समेत लुळ'र जमीं माथै पड़ियै रुपयां रै नोट नै या रुमाल नै उठावै। ढम–ढमाढम चालता रैवै, लोक–गीत गाईजता रैवै अर दर्सक ताळ्यां बजावता रैवै।

जसनाथी नाच :- इण नाच सारू खासी साधना री दरकार है। जठै आपारी आगळी बाफ (भाप) सू ई बळ जावै, गर्म पाणी पडिया डील माथै छाला (फफोला) उपडियावै, बठै जसनाथी भोपा अर कलाकार जगतै खीरां माथै नाचै, आरपार आवै जावै, हाथ मे लेय'र खीरा उछाळै, मूंडै में घाल'र पाछा निकाळै अर भात–भांत रा करतब करै। साधना मे या भगती मे चिनीसी'क चूक होंवतै ई लेणै रा देणा पड सकै।

इंया रै अलावा लोकनाट्यां में, नौटंकी अर रम्मता में भी नाच री अजसजोग ठावकी ठौड है। रम्मत में कलाकार पाटै माथै घूघरा घमकांवता, हाव–भाव करता, हाथा नै फैलाय'र मस्ती में नाचता अर मंच रै च्यारूंमेर घूम–घूम'र आपरा बोल बोलता घणा बाला लागै। रम्मत में जे नाच नीं हुवै तो वा साव अलूणी लागै। मिनख अर लुगाई पात्र री नाच री सैली जुदा–जुदा हुया करै। हाव–भाव, लटका, ठुमका सगळा अलायदा–अलायदा। लारै जांवतै वै आपरै किणी बोल नै अधूरो छोडै अर टेरिया उण अधूरै बोल नै पूरो करतां थकां पाछो स्थायी माथै पूगाय देवै। रम्मत री आ रंगत भी देखण जोग है।

कथक :- यूं तो कत्थक अेक सास्त्रीय नाच है पण इणमें लोक–नाच रा भी केई तत्त्व है। सास्त्रीयता सूं जुड'र कत्थक रा कलाकार नेम–कायदां अर व्याकरण रै हिसाब सू चालै तो लोक कलाकार खाली आपरी परम्परा नै निभावता थकां ई इण कला रो दरसाव करै। मोटै तौर माथै कत्थक नै भरत नाट्यम अर कुचीपुडी दांई सास्त्रीय नाच ई मानियो जावै। राजस्थान रा कत्थक घणा पढिया लिखिया नहीं है पण आपरी साधना रै पांण भारत रै तीनूं घराणां में वां री खास पिछाण अर छाप है। अठै नाच री तीनूं सैलियां पनपी अर पांगरी अर पछै आखै भारत में आपरो विस्तार करियो। कत्थक रै सास्त्रीय रूप रै सागै–सागै इणरो लोक–रूप भी चालतो रैयो है। आजू–बाजू, अडै–गडै, बाथ में बाथ घाल'र।

नाच रै पेटै अेक बात कैयी जाय सकै है कै नाच डील री अेक भासा है। आपांरी मुद्रावां, आपारा पगा री गतियां नीं बोलती थकी भी ब्हौत कुछ बोलती रैवै। साहित्य रै नव रसो नै नाच मे दरसाया जाय सकै। डील री लोच, नगाडै रै ताळ रै साथै नाचण री गति अर बिना थाकिया रात–रात भर आपरी कला रो दरसाव राजस्थान रै लोक–नाच कलाकारां री खासियत है। ओई कारण है वै आपरी इण कला नै सईकां सूं कायम राख सकिया है।

होळी आई रे फूलां री झोळी झिरमिटियो ई लै

तिंवारो रो राजा है होळी रो मनमोवणो तिंवार। च्यांरू मेर हरख–उमाव, च्यांरू मेर रंग ही रंग। इण बगत मिनख तो क्या, कुदरत रो मन भी रंगीन हुय जावै। रंग, रस, सौरम अर फूटरापै रा मेळा लागै।

किणी बाग में चाल'र देखो तो सही कै कुदरत कांई करतब कर रही है। चौफेर फूल ई फूल, ठंडी हवा रा लैरका, सौरम रा भंडार अर लीलै आभै रै उजास रै मांय मुळकता टाबर–टींगरां रा भोळा–भाळा चै'रा। इण कांनी है धौळी, बैंगणी अर लीली कचनार तो उण कांनी है गै'रा लाल कळियां वाळा पलास। अेकै बाजू गेदा अर गुलाब है तो दूजै बाजू केतकी है, चम्पा है अर असोक री केसरिया छिब रा दरसाव है। पागती निरमळ पाणी बैय रैयो है। इण बेळा कुदरत रै मन में भी जवानी रा कुदडका नीं चालै तो फेर कद चालैला। जद चौफेर धौळा, गुलाबी, लीला, हरिया, पीला, लाल अर बैंगणी रंगां रा इन्दर धनुस खिलता रैवै तो सूमडै सूं सूमडै रै मन में भी तरंगां चालणी ढूक जावै। पंखेरूआं री मीठी मधरी बोली मन नै लुभावै; रूंखां माथै झूमता–फुदकता अर कणांई पंख फैलाय'र फुर्र दांई उडता पंछी घणा ई फूटरा लागै। पगां रै हेठै है कंवळी–कंवळी मखमली दूब अर असवाडै–पसवाडै लागोड़ो है रंगां रो अमोलख मेळो। दूर उठीनै ढिगै रै माथै मस्ती में आयोड़ो मोर आपरा सगळा चंदरमा अेकै सागै देखाय'र नाच रैयो है तो पागती ऊभी ढेलणी उणनै निरख–निरख'र मदमस्त हुय रैयी है। फेर कोयल क्यूं नी चहकै, पांचवों सुर क्यूं नीं खोलै अर मौसम में मिसरी क्यूं नीं घोळै ! होळी में टाबरपणै रो, जवानी रो अर बुढापै रो आंतरो कम हुंवतो जावै। चौफेर मस्ती, मस्ती ई मस्ती... ।

लुगायां चावै पिणघट माथै जावो अर चावै मिन्दर मे दरसण करण सारू, वा रो सुरंगो वेस अर रूडो सिणगार थुथको न्हाखै जिसो है। सज–संवर'र इंयां निकळै जाणै इन्दर री अप्सरावां हुवै। टाबर किलकार्यां करै अर कुदडका भरै तो मिनख क्यूं पाछ राखै।

होळी आवै अर पिचकार्‌यां नीं चालै, आ किंयां हुय सकै। अर गुलाल री तो फेर कैणी ई कांई। गालां माथै, केसां में, हाथ–पगां में गुलाल ई गुलाल। पिचकार्‌यां सूं तर हुयोडा गाभा, रंग अर गुलाल सूं सराबोर चै'रा इसा कै मिनख पिछाण में ई कोनी आवै। भवरलाल है कै कंवरलाल, सोवन है कै मोवन, कीं ठाह कोनी।

गेर रा ठाठ निराळा ई है। सोळै बरसां रा जोध–जवान, पचांस बरसा रा अध–बूढ अर सितर–पिचंतर बरसां रा डैण सगळा मस्ती मे है। रसियों रै हाथा में चंग है, मंजीरा है, झांझरां हैं अर है हाथों में डांडिया। नाचो, झूमो, गावो, रंग बिखेरो, छेडखान्यां करो, चै'रां माथै भांत–भांत रा होकडा लगावो.... सबनै छूट है। भलांई चावै जिता मस्ती रा लावा लूंटो .. फेर ओ मौको कद मिलैला।

मस्ती अर मनवार रो तिंवार है होळी। हंसी, ठिठोली रो तिवार है होळी। भांत–भांत री मिठाया रो तिवार है होळी। मन खोल'र मिलणैरो तिंवार है होळी। कठैई लुगायां–लुगायां आपस में होळी खेलै तो कठैई मिनख–लुगाया भेळा हुय'र सागै–सागै होळी खेलै। कठैई देवर–भोजायां री तो कठैई जीजा–साळ्यां री होळी। बस रंग ई रंग, हंसी रा फव्वारा, मस्ती रा सोनलिया छिण, सूमडैपणै री विदाई अर फेर मिठायां री मीठी मनवार।

मौसम बदळियो तो फसळ्या भी झूमण ढूकगी। सागै–सागै झूम रैया है किसानां रा मन। अबै नीं तो डाफर चालै अर नीं लोगां नै धूजतै–धूजतै रजायां में दुबकणो पडै। सीत लै'र तो मिनखां रा माजणा बिगाड दिया हा। जाणै किता जणां रो भख ले लियो हो वा डाकण। पण होळी तो सगळी विपदावां नै हरण करण वाळो तिंवार है। नुंवो जोस, नुंवी उमंग अर नुंवै होसलै रो तिवार। जलवायु इतरो आछो कै जी सोरो हुय जावै। नीं तो लूआं रा लसरका है अर नीं माछरां री भन–भन। दिनूगै–दिनूगै घूमण–फिरण रा मजा भी न्यारा–निरवाळा ई है। प्राणायाम करो, ठंडी हवा रो आणंद लेवो अर दिन भर मस्त रैवो। ओ है होळी रो सनेसो।

होळी रै टांकडै जागा–जागा धमचक माचती रैवै। नाट्य मंडळियां नाटक खेलै, पैलवान अखाडो मे उतरै, रसिया फाग रा गीत उगेरै, कवि सम्मेलन अर संगीत सम्मेलन हुवै, डांडिया रमै, घूमर घालै, हींडा हींडीजै अर भांत–भांत रा दूजा काम किया जावै। इण तिंवार माथै गरीब–गुरबां सूं लेय'र मै'ल–माळिया अर हेळ्यां में रैवणिया सगळा अेक सरीसा हुय जावै। नीं तो कोई मान–गुमान अर नीं कोई पद–पदवी रो कूडो घमण्ड। सौरम रै मौसम में गंदीवाड़ै रो के काम? चांदणी रातां मे ताळ–तळैया जी भर'र चांदणी में न्हावै। हवा रै हिंडोळा में फूल झूलता रैवै, फगुआ में मन री रुणझुण चालती रैवै।

धरती सज–धज'र आपरै बालम आभै नै रिझावै तो आभो भी चांदणी री इमी बरसावै। कठै पडी है दूजी किणी मौसम मे पीळी–पीळी सोनलिया सरसूं री मनधारा ? कठै पडिया है फूलां रा रंग–बिरगा हार ? कठै पडी है धमाल अर लोक–गीता री गमक ? होळी माथै तो यूं लागै जाणै फागण खुद मस्ती रा छंद रच रैयो व्है अर मोरचग माथै खुद ही गाय रैयो व्है। इसै मौसम मे हिडदै मे सातूं सुरा री सरगम गूंजती रैवै।

गळी–गळी मे कृष्ण, गळी–गळी मे गोपियां अर गळी–गळी में मस्ती री रौनक। छैलों अर बहरूपियो री भरमार। कोई सेठ बणै तो कोई मदारी, कोई नुवी बींदणी रो सांग करै तो कोई आधुनिक मैम साब रो, कोई काळी माता रो रूप धरै तो कोई हडमानजी बण'र पूंछडी फटकारतो आवै। जिता मिनख, उता रूप।

गींदड मे लुगायां रै भेस मे मिनख सज–धज'र इण तरै आवै कै यूं लागै जाणै साचाणी लुगाया ई हैं। घाघरां रा घेर, चूडी, छल्ला अर बाजूबंद, छन–छन बाजती पायला अर च्यारूंमेर आणंद अर उमाव रा रेला। सूमडै सू सूमडो मिनख भी मस्ती मे रळिया बिना कोनी रैयसकै। हंसी, ठिठोली, गुदगुदी, किलकारी, रग, तरग अर कुचकेरणी। अै सगळा मिल'र होळी नै मस्ती रो तिंवार बणावै। दिन सोनलिया हुवै तो रात चादी–भरणी। फेर कैवण मे कीं बाकी कोनी रैवै। कैयो भी है "मन मस्त हुआ तो फिर क्यों बोले ?"

जठै चंदण जिसो डील अर मौसम री अंगडाई हुवै, जठै धरती री धमाल अर आभैरी सुघडाई हुवै अर जठै आपै रो बिसराब अर हिडदै री मायली अच्छाई हुवै, वो तिंवार फेर मन भावण क्यूं नीं कैयो जावै ? बारै म्हीनां मांय सूं जे फागण नै हटाय'र देखां तो यूं लागै कै जीवण में रस, रूप गंध अर ताजगी अलोप हुयगी व्है। होळी लोक–गीता रो तिंवार है। मरुधर रो मनचायो रळियावणो अर घणो सुहावणो तिवार है। इण टाकडै मन रा बजर कैवाड खुल जावै। मिनखाचारो आपरी सागी रंगत मे आवै। ओ ई कारण है कै सईका सूं कवियां अर चारणां इण तिवार नै मौसम रो राजा तिवार मानियो है।

देवलोकवासी भतमाल जोशी री अेक कविता रो अस इण तरै है :–

विसमता बद्योडी चहुं फेर
कूड–कपट ढेर रो ढेर
बाळो क्यू नीं चूंचकी दे'र
ओजीसाळो कोनी स्वावै
गदगी सूं माथो गरणावै।।

ओ ओजीसाळो ई तो गोधम री जड है। कूड–कपट, भिरस्टाचार रोळगदोळ,

रिस्वत, घोटाळा अर आपाधापी। कद पिंड छूटैला इण ओजीसाळै सूं ? आपां सगळा मिल'र क्या इणनै लांपो कोनी लगाय सकां ? अेकर सैमूंदो ई बळ जावै तो दुनिया में कीं सान्ति बापर सकै। इण "हाय धन, हाय धन" रै हायकै नै होळी री लपटां में क्यूं नीं बाळ दियो जावै ? प्रहलाद नै बचावणो है तो होळी में इण सूगळवाडै नै बाळणो ई पडसी। नीं तर कोई निस्तारो कोनी। होळी मंगळावण रो अरथ ई ओ है कै मन सूं सूगळवाडो हटायो जावै। होलिका नै तो घणो ई वै'म हो कै उणनै कोई बाळ ई कोनी सकै। ऊपर सूं लाडकोड दरसांवती अर मांय सूं घात राखती प्रहलाद नै लेय'र घणै चाव सूं लपटां रै मांय बैठी ही कै ओ तो बळ खूटसी अर म्हारो कीं बिगड़णो है कोनी। पण हुयो कांई ! धू-धू लपटां में होलिका तो राख हुयगी अर प्रहलाद रो रूं ई खांडो कोनी हुयो। होळी रो तिंवार इण बात रो सनेसो देवै कै आखर पाप नै तो समूळ मिटणो ई पड़सी पण इण सारू कीं आत्मबळ भी तो चाईजै। है आपारां में वो आत्मबळ ?

होळी आम जनता रो तिंवार है। मन खोल'र मिलण रो, भाईचारो बधावण रो अर बिना लोक-देखावै रै आपस में थिर भेळप राखण रो तिवार है।

होळी रा लोकनाट्य भी इणी बात री साख भरै। रम्मतां रा, नौटंकी रा, माच रा का पछै तुर्रा-कलंगी रा कलाकार नीं तो "नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा" में सीखण सारू गया अर नीं भरतमुनि रै नाट्य सास्त्र रा पाना पळटिया। वा आपरै चौफेर सूं ई सीखियो अर चौफेर नै ई रातो-मातो कियो। थियेटरां मे जद-कदैई नाटक हुवै, इंयां लागै जाणै कागला उडरैया हुवै। दर्सका रो साव टोटो पण होळी रै टांकडै हुवण वाळै लोकनाट्यां में अपार भीड। कांई तो कारण हुवैला इण बदलाव रो ? कारण ओ ई है कै ई लोकनाट्यां में तामझाम कोनी, टीमटाम कोनी, नाटकां वाली "नाटकबाजी" कोनी । कलाकारां सूं लेय'र दर्सकां तक सगळा भागीदारी निभावै; सगळा इणनै आपरो निजू काम मान'र चालै। होळी री इण अपणायत नै भी जीवण में उतारणी घण जरूरी है।

होळी रै टांकड़ै जिका ख्याल गाया जावै वै भी जनता री भावनावां रा दरसाव करण वाळा है। ख्यातनांव बच्छराजजी व्यास रो साठ-सितर बरस पैला लिखियोड़ो ओ ख्याल आज भी साव साचो है। परतख माथै तो पतियारो करणो ई'ज पडैला। अेक उदाहरण :-

कलजुगी देव प्रगट्या दूजा।
पग-पग पर मांग रैया पूजा
थक गया हाथ भरतै खूंजा
फेरी फिरतां रा पग सूजा
ना निगै करै बणग्या रोडा

जिणरै घर में गाडी–घोडा
भगवान पधारो भारत मे
थांरै बिन बहुत पडै फोडा।

अै फोड़ा क्यूं नीं पडै जदकै आज भी आ ई हालत है जियां –

क्या दुख कहू सबसूं मोटा
मिलता अनाज जिसमे टोटा
घी–शक्कर सब मिलता खोटा
उस पर भी कम तोलै चो'टा
दिन पर दिन सुकड रैया गोडा
अै नित छोलै छाती छोडा
भगवान पधारो भारत में
थारै बिन बहुत पड़ै फोडा।

अै ख्याल भी इण वात नै दरसावै कै लोक में जे गंदीवाडो आय जावै तो लोक गीत या लोक ख्याल ई उणनै मेट सकै।

होळी जन–चावो तिंवार है। गीतां रै मिस गिरस्थी नै संभाळण रो अर नेक रस्तै माथै चालण री सीख देवण रो तिंवार है। पर–नारी सूं प्रीत किती कोजी हुवै इणरो अेक चितराम इण तरै है :–

प्रीत बुरी परनार री रे पिया जाणत है संसार
बेर–बेर समझांवती रे थानै मानो नहीं भरतार
समझ लेवो बहुत बुरी पर नार
लैला से कर दोस्ती रै पिया मजनू भया रे फकीर
जखत हजारा छोड चल्यो रे पिया, राझा संग ले हीर।
अरज मेरी सुण नणदल के बीर
सीता नै रावण छळी रे पिया, चढै लंक रघुबीर
पर नारी कारण सुणो रे पिया, बाली तज्यो रे सरीर
बेर–बेर समझावती थानै मानो नहीं भरतार
समझलो बहुत बुरी पर नार।

पोथा रा पोथा पढिया पांण ई जिको ग्यान नीं बापरै वो ग्यान होळी रा अै ख्याल साधारण जनता नै सईकां सूं देवता रैया है। ओ ई कारण है कै पढिया–लिखिया, ऊंचै ओहदै वाळा अर धन री रेलपेल मे रैवण वाळा जिता काठ–कबाडा करै उणांरो सौवों भाग भी साधारण, अनपढ अर गंवार गिणीजण वाळा लोग कोनी करै। होळी जन–शिक्षण रो भी अेक चावो तिवार है। आपानै आपारी लाखीणी परम्परावां नै जींवती राख'र नैतिकता री इण हेमाणी नै बचावण री दरकार है। आज रै दिन होळी तिंवार रो ओ ई सनेसो है।

आंगळियां जद भीजसी तद आसी त्यौंहार

लोकरंग रा रूप है दमक रैया घर–बार
त्यौंहारों रै देस में, रगो री मनवार
हिवडै हेज घणो अठै, उजळो अपरपार
आंगण–आगण माडणा, मरुधर रा सिणगार
मेहंदी है घण–राचणी, सागै मगळ गान
लोकरग में सज रैयो ओ म्हारो राजस्थान।

साचाणी बालो है मन–हरसावण अर हेत–बधावण वाळो म्हारो ओ मरुधर। दुनिया रो कोई देस/प्रदेस इणरी होड कोनी कर सकै। इसो रसीलो लोकमन, इसो अछूतो–उमडतो प्यार, अर इसो कुदरती खुलोपण और कठै पडियो है ? आ धोरां री रळियावणी धरती, आ तीज–तिंवारां री मन–भावणी धरती, आ मेहंदी–मांडणां री चित–चावणी धरती ई तो म्हां सगळां नै आपरै हेज रा हबोळा देवै। माँ रै हाचल रै निरमळ दूध जिसो है इणरो प्रेम। इसी धरती मे बडै भाग सूं जलम मिलै। इण सारू म्हांनै इण धरती रो गीरबो है।

गांव रै जीवण मे अंगैई कोई देखापो कोनी हुवै। अठै रा साव भोळा–भोळा अर निरलेप मिनख अर मिनखाचारै री मूर्तियां जिसी अठै री हेताळु लुगायां दिन–रात खटै पण बस पडतै किणी रै सामीं हाथ कोनी फैलावै। झूपडा ई सही, काचा ढूंढा ई सही, वै वांनै लीप–पोत'र भांत–भात रै मांडणां सूं इण तरै सजावै कै देखण वाळै रो जी सोरो हुय जावै। आंगण मे, चौक मे, गळियारै में, चौबारै मे, धुरी मवडै माथै, पगांथियां माथै, भींतां माथै अर आळां री पाजां माथै माडणा . च्यारूमेर माडणा ई मांडणा। नीं तो सूनो लिलाड सुहावै अर नीं सूनो अडोळो आंगण ई आछो लागै। माटी री सौरम अर मिन्दर जिसै निरमळ मन री जुगलबंदी हुया पछै जे सुरग रा सुख नीं सिरजै तो फेर कद सिरजैला ?

मरुधर मे आ ओळी खासा चलन में है "आगळिया जद भीजसी तद आसी त्यौंहार"। साची बात है। गीली माटी में ई तो आंगळियां री कला निखार लिया

करै। नुवी-नुंवी कल्पना भी जणै ई सिरजै, नुंवा-नुंवां भाव उपजै अर नुंवा-नुंवा चितराम मांडीजै। सुरगा मांडणा रंगभीना मांडणा... रळियावणा मांडणा. आपारी सांवठी संस्क्रति रा अैनाण मांडणा। ड्राइंग रूम वाळी सोभाऊ पेण्टिंगां में वा अपणायत कठै जिका हेत रै हळोबोळ देसी रंगत रै मांडणा मे हुवै ! अठै सिरजण री साधना है, संस्क्रति री ओळखाण है अर मन री हूंस है।

तिंवार व्है चावै घरेलू उच्छव, साध-घूघरी व्है चावै पावणा रो स्वागत, घर नै सजावणो तो जुगां-पुराणी रीत है। इण सजावट सारू नीं तो डब्बां वाळा रंग चाईजै अर नीं कैमिकलां रा घोल। धौळी माटी तो हर घर में मिल ई जावै। अबै चाईजै गेरू, हिरमिच, खडिया मिट्टी, कूंकू, हळदी अर काजळ। नीं तो बारै सूं चितराम वाळा कलाकार बुलावण पडै अर नीं मूंगीवाडै में सजावट रा घणा साग ई करणा पड़ै। मांडणां सारू कुदरत रो पूरो चौफेर खुलो पडियो है। लिछमी रा पगळिया मांडो, बेल-बूंटा मांडो, सूरज-चन्दरमा अर अविछल तारा माडो, नाचता मोर, हंसता-खिलता फूल, पेडां सूं लदूबती बेलां, उछळता-कूदता बादरा, भण-भण करता भवरा मांडो, गाय, टोगडी, हाथी, घोड़ा अर रथ माडो .... मन में आवै ज्यूं, भावै ज्यूं माडती जावो। कुण वरजै है थांनै ?

वसन्त री मौसम में गणगोर रो चावो तिवार आवै। उण बगत कुदरत रो मन ई रंगीन हुय जाया करै। सोनलिया दिन अर रूपाळी राता मे च्यारूंमेर हरख-उमाव रो वातावरण बण जावै। कंवारी छोरयां कच्चे घरां रै आंगणां नै गोबर सूं लीप'र उणां माथै धौळी माटी सूं फूल-पत्तिया री कोरणी करै। गणगोर, ईसर अर भाइया बणावै। रंग-विरंगी गुलाल सूं आंगणै नै सजावै। धींगा गवर माथै परणियोडी सुवागण-भागण लुगायां घरां रा आयत अर बिचाळै खुला धुरी मवडा बणाय'र पछै भांत-भांत रा बेल-बूंटा, चिडी-कबूतर, सूआ अर दूजा पंखेरूआं नै कोरै अर गीतां री गमक सूं उच्छव नै रसीलो बणाय देवै। भांत-भांत रा तिंवार तो भांत-भांत रा ई मांडणा। नागपंचमी माथै पाणी रै पाईंडां माथै कोयलै सूं या काळी स्याई सूं अर घडां माथै कूंकूं सूं पांच-पांच नागां री कोरणी, दीवाळी माथै लिछमीजी रा पगलिया, दीया, पान, डमरू, रथ अर बीजणा; दसरावै माथै तीर, तलवार अर गदा अर होळी माथै भांत-भांत रै रंगां रा डांडिया, गाडूला, थाळी अर बाजोट, डफ अर चंग. . . कल्पना रो आखो संसार रचीजतो जावै। टाबरपणै सूं ई नानी सू मां अर मां सूं बेटी आ कला सीखती आई है। इण सारू नीं तो स्कूल ऑफ आर्ट्स में जावणो पडै अर नीं किणी ख्यातनाव चित्रकार री गरजां ई करणी पडै।

मांडणा री कला सूं पैला तो हथाळ्यां माथै मेहंदी रै चितरामा री कला घणी महताऊ है। मेहदी बिना कांय रो उच्छव अर कांय रो तिंवार ? लुगायां

मेंहदी नै घणो मान देवती रैयी है। ओ गीत इण बात री साख भरै :–

बना मेंहदी सरीरा राचणा
थांनै राखूं मुट्ठी मांय
बनी सुंरमै सरीसी सोवणी
थांनै राखूं पलकां मांय।

जिसा टाणा–टांकणा उसो ही है मेंहदी रो रचाव। यूं लागै जाणै रूप मूंडै बोल रैयो व्है। कोई–कोई छोरी तो आपरी हथाळी अर कलाई माथै पूरो बगीचो ही उतार दै। पेड, बेलां, फूल, तितळ्यां, भंवरा, सूआ, अर लटूंबता फळ। फेर देख–देख'र मन ई मन मुळकै, मांय ई मांय हरखीजै। मेंहदी रो चाव इतो है कै छोर्‍यां अंर लुगायां हथाळ्यां, कळायां, पग अर पगथळ्यां तकातक मेंहदी रै रचाव सूं भर देवै। अजकाळ ब्यांव री बगत स्हैर री छोर्‍यां ब्यूटी पार्लरां में जाय'र मेंहदी मंडावै।

सजावट री बात हुवै अर अल्पना या रंगोली नै भूल जावां, आ कियां हुय सकै ? *आ आखी स्रस्टि पांच तत्वां सूं ई तो रचीजियोडी है। बिन्दु, रेखा, अंकुरण,* चिह्न, त्रिभुज अर व्रत.... सगळै रचाव रा आधार अै पांच तत्व ई हुया करै। अबै चावो तो इंयां में आडी–टेढी ओळ्यां, तिरछी अर नागनुमा आकरत्यां, आयत, वर्ग, पंचकोण आद जोडता जाओ। नई–नई डिजाइनां आपोआप बणती रैवैला। अल्पना रो रिवाज सगळी जागाओं माथै है, *क्या स्हैर अर क्या गांव।* कच्ची जमीं हुवै तो गोबर अर धौळी माटी सूं लीप–पोत'र भांत–भांत रै रंगां सूं चितराम बणाईजै अर पक्को फर्स हुवै तो रंगां री आ लीला बिना लीपियां–पोतियं ई रचीज सकै।

गांव रो जीवण आज भी बिना किणी तामझाम रो है। जठै जिकी जिन्सां मिलै, बठै वां नै ई काम में लेय'र घरां नै सजावण रो चलन है। खड़िया मिट्टी, पांडु रंग रो घोळ, गूंद, कळी, पीसियोडा चावलां रो चूण, फेर उण माथै कूंकूं अर घरेलू रंगां सूं अल्पनावां रो रचाव कियो जावै। रामरज, गेरू, पेवडी हरियो भाठो अर चूनै रो झीणो लेप भी काम में आवै। अल्पनावां रा बेल–बूंटा देखण जोग हुया करै।

कावड़ रा चितराम :- कावड लकड़ी रै छोटै–छोटै कपाटों सूं बणयोडो अेक चल–मिन्दर जियां हुवै। लोक चितराम उकेरण वाळा हरेक पाट रै दोनूं कानी रामयण–महाभारत रा, देवी–देवताओं रा अर भगत लोगां रा चित्र कोरिया करै। जद सगळा पाट ढकदै तो कावड़ पाछी अेकल हुय जावै। खुलै तो चितरामां रा मनमोवणा संसार अर ढकीजै तो अेकलरूप में कावड री कावड। केई कावडां आठ सूं लेय'र दस–दस पाट वाळी है। भाट लोग ई कावडां नै काख

में दबाय'र गांव–गांव मे फेरी लगांवता रैवै। कावड़ रा चितराम, मांय पोयोडी सी'क कोई कथा, उणनै समझावण सारू लोक गीत गावणिया अर संगत सारू लोक बाजां री मीठी–मधरी धुनां . यूं लागै जाणै संगीत रो स्यारू आग सामै हाजर है। गीत भी, बाजा भी, चितराम भी अर बोली री उतार–चढाव रै सागै कथा रो कथीणो भी।

कावड बाचणै रो धंधो भी बाप–दादां सूं चालतो आयो है। जजमान दान–दिखणा देवै, बाचणियां रो मान–सनमान करै अर चाव सूं कथा सुणिया करै। इणमें लकडी रै कारीगरां री भी खासी भूमिका है। अजकाळ तो केई कालाकार नुंवीं–नुंवीं कावड़ां बजावण में लागियोड़ा है। इयां मे महात्मा गाधी, राणा प्रताप, मीरां बाई अर भगवान महावीर री कावडां भेळी है। देस–विदेस मे इंयां कावडां री घणी मांग है। अबै तो ईसाई भाई भी यीशु (ईसा मसीह) री कावडा बणावण में रुचि दरसाय रैया है।

भिति चित्र :- मरुधर में भित्ति चितरामां री अेक लाम्बी अर सखरी–सांवठी परम्परा है। राज मै'लां में, हेलियां में, पुराणै भवनां में अर डेरां में धुरी मवडां रै बार वाळी भीतां माथै अर घरां रै मांयनै जागा–जागा सईकां पुराणा भित्ति चितराम मिलै। इसा चितराम जिका काळ रा झपेटा खाय'र भी अजै तांई भगसा कोनी पडिया। चितरामां रो चाव इसो है कै भीतां रै अलावा बाण्डा, गोखा, थंभा अर छतां माथै भी चितराम मिलै। केई–केई चितराम तो ढाई–ढाई सौ बरस पुराणा है। वा ई रगत, वा ई ताजगी अर वा ई फूटरापणो जिको बणावती वेळा हो, वो अजै तांई यूं रो यूं कायम है।

हेलिया रै मांयनै जद बडै–बडै कमरां रा बांडा खुले तो यूं लागै जाणै कोरै घर रा नीं, बगत रा, कालखंड रा कैंवाड़ खुलिया व्है। मांयनै भांत–भांत री मोकळी झांकियां हैं जियां तीज–तिंवारा री, दसरावै–दीवाळी री, देवी–देवताओ री, घोडा–हाथी अर तोपखानां री, राजा–महाराजावा री सवारियां री, गाजा–बाजां री, राधा–कृष्ण री, भांत–भांत रै सिणगारां री, फूटरी फरी लुगायां री अर जीवण रै मोकळै दूजै दरसावां री। कठैई कोई घोडै माथै बैठ'र सिकार खेल रैया है तो कठैई कोई चांदणीरात में नाव रो आनन्द लेय रैया है, कठैई ढोला–मारू है तो कठैई नाच–गाणा करती भगतण्यां अर वां माथै रींझता रसिया। हाथियां री लड़ाई, सावण रा झूला अर रासलीलावां रा दरसाव तो घणा सोवणा हुवै। अै चितराम आपरै रंग–रूप, छिंया–चानणै रै दरसाव, झीणै हुनर अर चै'रां रै सुभाविक हावभाव रै कारण खासा ख्यातनांव है। इंयां नै कुण बणाया, किता जणा मिल'र बणाया, कीं ठाह कोनी। लोककला री आई तो खासियत है कै इणमें कला रो नांव तो ऊंचो हुवै पण कलाकार लोक में रळ–मिळ जावै: वांरी अलायदा

सूं ओळखाण रा बखाण कोनी हुवै। लोक री कला तो लोक नै ई समरपण हुंवती रैवै।

पांच छै. रंग तो मूळ रग है ही, पछै वांरै मेळ सूं दूजा केई रंग भी बणै। अै रंग कैमिकल रा कोनी हुवै, कुदरत रै अणमांवतै खजानै रा हुया करै। वनस्पतियां में भी घणाई रग है, फूलां में है, भाठा-पत्थरां में है अर दूजी केई चीजां मे है। मूळ रंग है सिन्दूरी, हरियो, पीलो, काळो, लाल, धोळो अर लीलो आसमानी। अै मिल परा'र केई रंगों री रचना करता रैवै अर पाणी में चोखी तरियां घुळ सकै। रंग-रंगीला गाभा पहरिया नाचता-गांवता लोग मरुधर रै रंगीलै जीवण रा अैनाण है। फेर चावै वसन्त-लीला हुवो चावै बारैमासा या फेर होळी रा हुडदग, लोक रंग लीला में सगळा दरसाव आछै सूं आछै ढंग में चितरीजियोड़ा है।

पैला कागज तो हुवतां कोनी। लोग चावै तो भोजपत्रां माथै अर चावै भींता माथै ई आपरी भावनावा नै उकेरिया करता हा। चितराम पुराणा है पण बूढा कोनी। आज भी वारी जवानी ही ज्यूंरी ज्यूं कायम है। सेखावाटी अंचळ तो भित्ति चितरामों रै कारण दुनियाभर में ख्यातनाव है। मै'ल माळियो में, छतरियां अर गुम्बजों माथै, मिन्दरां में, राजा-महाराजावां री समाधियां माथै घणा ई मन लुभावणा चित्र कायम है। वै ई पुराणा कथ्या जियां पहलवानां री कुस्तियां, सिकार रा दरसाव, भगती री भावनावां रा प्रगटीकरण अर बारैमासा, रासलीलावां आद जिकी दूजी जागावां माथै कोरीजियोडी है, वै अठै भी देखी जाय सकै है।

जयपुर री आलागीला सैली :- जयपुर री आलागीला सैली मे मकराणै (संगमरमर) रो चूरो काम में आवै। कलाकार घडै में पाणी भर'र उणमे कळी, दही अर गुड मिलाय दै। रातभर में कळी रो मोटो चूनो नितर परो'र ऊपर आय जावै। इसो चूनो ज्यो-ज्यों नितरतो जावै, उणनै फैंकता जावै। जणै चूनै रो मईन सूं मईन लेप घड़ै रै तळै में रैय जावै तो पाणी नै फैंक'र मईन चूनै रै सागै तीन भाग चूरो मिलाय सिला माथै खूब रगड-रगड'र पीस लै। चितराम वाळी जागा गीली हुवै। रामरज, गेरू, पेवडी हरियो भाठो, काजळ अर रंग मिलाय'र गीली जागा माथै चितराम कोरिया जावै। नेहलै सूं ठुकाई अर नारेळ रै लेप सूं घिसाई करण सूं चितरामां में चमक आय जावै।

इसा भित्ति चित्र जयपुर रै आमेर मै'ल, मानसिंहजी री छतरी, मुगल बगीचा अर पुण्डरीजी री हवेली में है। देस-विदेस रा घुमक्कड इंयां चितरामां नै बडै चाव सूं देखण नै आवै।

पड़ां या पवाडा रो नाव भी जगचावो है। मरुधरा मे भांत-भांतरी पड़ां

बाचीजै जिंयां रामदेवजी री पड, माताजी री पड, बगड़ावतां री पड, देवनारायणजी री पड। पाबूजी री पड सगळां सूं बेसी ख्यातनांव है। पवाडा कोई आठ–दस हाथ लाम्बा हुवै। इणनै बाचणवाळी जातियां है भांभी, बलाई, नायक, भोपा–भोपी अर कामड। और भी केई जातिया ओ कांम करै। पाबूजी रो धाम है कोळूगढ (फलौदी कनै) पण वै परणीजण सारू गया हा उमरकोट (अबै पाकिस्तान मे)। पाबूजी री पडां आखै राजस्थान, माळवै, गुजरात अर पाकिस्तान रै केई हिस्सां मे गाईजै।

पड़ रा चितराम हाथ सूं बणियोडी दोवटी माथै मांडीजै। इणमें तीन–चार पाट जुड़ियोड़ा रैवै। कपडै माथै कडप कर परी'र उणनै सुखावै। चितरामां माथै आछी घोटाई की जावै। पड रै चितरामां सारू जिकी जिन्सां काम में आवै वै है पीळो रग, पेमसळ, कूची, बुरस, वनस्पति रा रंग अर भाठै रा रंग, सिन्दूर, हिरमिच, हींगळू आद। वनस्पति रंगां मे चितरामां नै कोर'र दूजा रंग भरिया जावै। पीळो रंग बणै केसूडा रै फूलां सूं अर दाडम रै छोडा सूं । काळो रग बणै लो रै काठ सूं। और भी केई रंग भांत–भांत रै तरीकां सूं बणाया जावै।

अै चितरात आस्था रा अैनाण है। सागै ई अैनाण है साधना रा, बरसों री मेहनत रा अर संस्क्रति सारू पूजा–भाव रा। इंयां रै ताण ई आपारी लाखीणी संस्क्रति ओजूं कायम है।

लोक-ग्यान अर लोक-परम्परावां

सईकां सूं चालती आई कहावतां लोक–ग्यान रा अखण्ड भंडार हैं। देखण में छोटी पण ग्यान में ऊंडै कुऔं सूं भी ज्यादा गैरी। कहावतां री भासा सरल, सटीक अर याद में रैवण जिसी हुया करै। इंयारो जलम साच री कूख मांय सूं हुवै अर इंया रै लारै लोक अनुभव री सांवठी परम्परा भी हुवै। औ बगत री भींतां माथै लिखियोडी चेतावणिया है। कहावतां जाणै किसो इमरत पियो है कै वै आज भी अखी है, अखण्ड है अर लोक व्यवहार में चालू है। अरस्तू ऐकर कैयो हो कै *जिको ग्यान काळ रै झपेटों रै बाद भी बच जावै, वो कहावत रो रूप धारलै।* डिजरैली इणनै पंडिताई अर ग्यान रा बेजोड अंस मानै। पुराणी कहावतां केई सईकां सूं, आपांरै पुरखां सूं लेय'र आज तांई चालती आई है। हरेक कहावत रै लारै कीं न की गैरी बात हुवै अर औ इती सरल हुवै कै अणपढ़ मिनख भी भटकाव री बेळा इंयां रै चानणै मे आपरो मारग सोध सकै।

राजस्थान गांवों रो प्रान्त है, खेती रो प्रांत है, करसां रै पसीणै सूं लिखियोडी कथा रो प्रांत है। आछी फसळां हुवै तो सगळां रो जी सोरो हुय जावै, काळ पडै तो बिखै रो तांडव सामीं आवै। ग्यान कदैई किताबो रै सायरै कोनी पनपियो; अनुभव री गोदी में बैठ'र ई वो फळियां–फूलियो। खेती रै बाबत घणखरी कहावतां हैं। इंयां में बुवाई सूं लेय'र खाद, माटी, बळधां अर फसळां री कटाई तकातक री बातां रो भंडार है। राती–माती जाणकारियां हैं। ऐक कहावत चेतांवती थकी कैवै कै जे बगत माथै बुवाई नीं करी तो पछै पिछतावै नै टाळ'र की हाथ मे नीं आवैला। कहावत तो साव छोटी है; हर कोई याद कर सकै जिसी, जिंयां :–

अगाई बावणी
सवाई लावणी।

अबै बताओ, इसो कुण मूरख–गंवार हुवैला जिको इण लाखीणी कहावत माथै ध्यान नीं देवै। कहावतां मे ग्यान रै सागै विग्यान री जिकी जुगलबंदी मिलै, वा इचरज जोग है। बुवाई करती बगत जमीं में किती छेती राखी जावै, इणरो वैग्यानिक बखाण उण बगत रा जिका "अणभणियां लोगां कियो वो आज भी इयां

रो इंयां लागू हुवै। अेक कहावत है :–

रास पुराणी बाजरो, मींडक फाल जुंवार
इक्कड–दुक्कड मौठियो, कीडी नाल गुंवार।

छोटैसी'क दूहै में बाजरी, जंवार, मौठ अर गंवार ईं च्यारूं फसळां नै बोवण री तरतीब अर जमीं री छेती रो बखाण है। बळध री रास में अर बळध हांकण री लकडी रै बिचालै जिती छेती है, बाजरै रै बोवण मे भी उत्तीई छेती जरूरी है। डेडरियो उछळै जिती छेती माथै जंवार बोओ तो भरपूर फसळ लेय सकोला। मौठ नै अेक–अेक, दोय–दोय कर बोवणा चाईजै अर गंवार बोवण में तो छेती री दरकार ई कोनी। पागती–पागती बोयां ई काम चालैला।

चिणो आज भी नगदी फसळ गिणीजै। चिणै री दाळ रा भाव तो देखो, जाणै उछळता चाल रैया है। अेक कहावत इण बात री आगूंच कल्पना कर'र बा बात इण तरै बताई है :–

जे तेरे है टाबर घणा
तो तूं क्यूं नीं बोवै चणा

बडो कुटम्ब अर थोडी पूंजी हुवै तो भईजी, थे चणा बोवो। रामजी भरपूर फसळ दी तो न्याल हुय जावोला। दूजी फसळां सूं भचभेड़ा खावण री जागा, चिणा बोवणो घणो हितकारी है। मानो तो ठीक, नईं तो थे जाणो अर थांरो राम जाणै।

इसो कुण है जिको पुरखां रै इण ग्यान माथै पतियारो कोनी करै। आळसी मिनखां माथै थू–थू करण वाळी कहावत तो इती कीमती है कै उणनै ग्यान रै खजानै री कूंची कैयी जाय सकै।

सावण साध्या गैंतरा कातिक ल्हासो जाय
काळी–पीळी बाल में हाड बापरा खाय।

कहावत कैवै है के "हे कुमाणस, सावण में जद बुवाई री बेळा आई जणै तो तूं मटरगस्ती करतो रैयो, हथायां करता रैयो, अठी–उठी मूंडा मारतो घूमतो रैयो अर जद काती रो महीनो आयो जणै कठैई जाय'र थारी आंख खुली। अबै थारै खेत में तो कीं हो कोनी, थनै दूजां रै खेत में मजूरी करणी पडी। आगै आवण वाळै महीनां में जद काळी–पीळी आध्या चालैला तो घर में अनाज नीं होवण सूं थूं क्या थारै बापरा हाडका खावैला।"

इणनै कैवै है चेतावणी रा चूटिया बोडण रो काम। हींया–फूटोडा लोग इण कहावत माथै ध्यान कोनी दैवै अर पछै करमा माथै हाथ देय'र रोवता फिरै।

कहावतां में फसळ पकाई सारू भी लाखीणा दोहा पोयोडा मिलै जियां :-

तीसां रातां टींडसी, सिट्टा साठी जोग
ग्वारफळी चालीस स्यूं पकै भलेरा भोग।

अै दूहा गांव वाळां नै जबानी याद है। वै जाणै कै टींडसी नै पकण में तीस दिन, सिट्टां नै त्यार हुवण में दो महीनां अर गंवारफळी नै चालीस दिन चाईजै। बगत माथै बोयां सू काती रै महीनै में दीवाळी रै टांकड़ै "काती में सब साथी" वाळी कहावत लागू हुय जावै यानी टींडसी, सिट्टा अर गंवारफळी नै अेकै-सागै भेळी कर सका।

अेक और कहावत है जिकी बतावै कै :-

बढिया खेती, धणियां सेती
मध्यम खेती, भायां सेती
बिगडी सेती नौकर सेती।

जिको मुदै में सावचेत हुवै वो तो आपरी खेती रो खुद ध्यान राखै, किणी दूजै नै भोळावै कोनी। जिको भायां रै भरोसै आपरा खेत छोड़ दै, वैनै लोक-लाज सूं ही सही, भाई लोग काम चलाऊ धान दे दिया करै पण जिको साव अधगावळो हुवै अर भायां माथै भी भरोसो कोनी करै वो आपरा खेत नौकरां-चाकरां री रुखाळी में का पछै मजूरां रै भरोसे छोड दै। इणनै कैवै है संदेसा खेती करणो। नौकरां नै कांई पडियो है कै वै चित्त लगाय'र दूजै सारू खेती री रुखाळी करै। फेर तो जापो बिगडै ज्यूं खेती भी बिगड जावै। अबै कांवता रैवो आंसूडा। किणनै पडी है कै आडै बगत थांरै काम आवैला।

अेक घणी जूनीपण घणी सांतरी कहावत है :-

तीतर पंखी बादळी विधवा काजळ रेख
वा बरसै बा करै, इणमें मीन न मेख।

बात जूनै जमानै री है जद विधवावां घरां में रैय'र बिना बणाव-सिणगार रै आपरी जूण काढ देंवती। उण जमाने में कोई विधवा जे तड़क-भडक सूं रैवती लागती, काजळ-टीकी करण नै ढूक जांवती, अटका-मटका करती तो पुराणा लोग जाण जांवता कै अबै इणरा पग घर सूं बारै निकळ रैया है। आ जरूर नातो करैला। इणी भांत वै लोग आभै में जद तीतर पंखी बादळी देखता तो आगूच कैय देंवता कै अबै बिरखा नै आयां सरसी।

आभै रै विग्यान री पारखी आपांरा पुरखा आकास में सूरज अर चांद रै बारै बादळां रै घेरै नै देख'र भी बिरखा रो अन्दाज लगाय लिया करता हा।

सूरज कुंड अर चांद जलेरी
टूट्या टीबा, भरगी डेरी

सूरज रै च्यारूमेर जे बादळा रो कुडाळियो हुवै तो पक्की जाणलो कै इत्ती जबरदस्त बिरखा हुवैला कै धोरा पाणी रो धापिया पछै हेटै बैठणा ढूक जावैला यानी ढह जावैला अर ताळ–तळावा मांही चादर चालणी शुरू हुय जावैला। अेक और कहावत नै परखो –

पूरवा ऊपर पच्छम फिरै
घर बैठी पणिहारी भरै।

जिकी हवा उत्तरी अर आथूणी दिसा रै बिचाळै वायव्य कोण सू आवै, वा इत्ती बिरखा लावैला कै पिणिहारी नै पिणघट माथै जावण री दरकार ई कोनी पडैला।

अेक नामी लोक कवि हुया है डक। वा आपरै अनुभव रै ताण ग्यान–विग्यान अर आभै री लीलावां नै देख'र केई अमोलख बाता कैई है। किणी गाव मे जाय'र पूछलो लोगा नै डक अर भड्डली रा अै ओखाणा मूडै जबानी याद है कवि कैवै –

परभातै मेह डम्बरा साझै सीला बाव
डक कहे हे भड्डली काळा तणा सुभाव।

दिनूगै री वेळा आभै मे जे बादळ छाया रैवै पण सिझया पडतै–पडतै ठंडी हवाया चालणी ढूक जावै तो इण बात री चावै तो गाठ बाधलो कै आ आवण वाळै अकाल री निसाणी है। हवा बादळा नै टोर परा'र आगै लेय जासी अर थारै हाथ मे तो टक–टक देखण रै टाळ की कोनी रैवै।

ग्यान–गंगा री अै कहावता जुगा–जुगा सू देखी–परखी बातां है। राम जाणै कित्ती पीढ्या आई अर गई पण अै कहावता तो अजै कायम है। इया री सूडी मे इमरत है, इया नै कोई ढाय कोनी सकै चावै काळ कित्ताई झपेटा मारतो फिरो।

राजस्थानी कहावता केई बार खुल'र चूटिया चमकावै। उणा मे नी तो पखापखी हुवै अर नीं अणूतै ग्यान रो बघार ई हुया करै। तीखा तेवर अर कैवणगत रो ढगढाळो इसो के भोगै जिको ई जाण सकै। केई मिनख काम री बगत तो टाळमटोळ करै पण खावण री वेळा स्सै सू आगै रैवै उणा रै खातर आ कहावत है –

खा साहब लकडी लावो
तो कैवै काफर रो काम
खां साहब खीचडी खावो
तो कैवै बिसमिल्ला।

इण बात नै इण तरै भी अर्थाई जाय सकै कै "खीरा मेळी खीचडी अर टीलो आयो टच्च।"

केई चीजा अेके सागै दो काम सारती रैवै। वारै मिटणै रो घणो दुख कोनी हुवै कारण कै

गाजर री पूगी बाजी तो बाजी
नी तो तोड खाई।

जिका मिनख दूजा नै भरम मे राख'र आपरी 'रामलीला' चलावै वां रै सारू भी व्यग्य री केई कहावता है। अै लोग बडा चतर होवै। दीखण मे भोळा-भाळा पण माय सू पूरा जालमचद। माटा पकड मे तो आवै ई कोनी।

गणमण-गणमण माळा फेरै
तिलक करै सिद्धा का
चोरी छिप कर सिट्टा तोडै
नीचै खोज गधा का।

इणरै लारै अेक साची कहाणी है। गाव मे अेक साधू बाबो घणो मानीतो हो। पूजा-पाठ, तिलक-छापा, माळा-मिणिया अर ध्यान-पूजा स्सो क्यू किया करतो। ऊपर सू चावै क्यू ई क्यूनी देखावो, मांय सू वो पक्को चोर हो। रात-विरात जद लोग बाग सूय जावता तो बो गधै माथै बैठ'र खेता माय सू सिट्टा चोर'र ले जावतो। अबं पकडै तो किणनै पकडै ? पगां रा निसाण तो गधै रा हा, बाबाजी रा तो हा कोनी। आ कहावत इण तरै रा लोगा सू सावचेत रैवण री दकाळ करै। मानो तो मानो नीं तर भुगतो। चेतावणी रा अै चूटिया लोगा रै अनुभव री उपज है। कोरी थूक-बिलोई री बाता कोनी। लूण री पोयोडी बाता कोनी।

आज रो विग्यान तो कुदरत रा केई पेचा नै खोल'र नुवीं-नुवीं थरपणावा की है पण पैला किसो तो विग्यान हो अर किसी आधुनिक मसीना ही ? मौसम रा भेद लोगा रै अनुभव रै पाण ई खुलिया करता है। पीढी-दर-पीढी रा अनुभवई काम में आवता। नीं तो पोथ्या ही अर नी पढण-लिखण रा साधन ई हा। फेर भी लोग चांद-सूरज री गतिया, धरती री परकम्मावां, ग्रहण री तिथिया, तारा री स्थितिया अर हवा री दिसावा री पक्की जाणकारी राखता। कवि लोग समाज रै अनुभव नै आपरी कवितावा मे, खासकर दूहा मे रच देवता अर दूजा लोग उण दूहा सू ग्यान लेय'र आपरो गाडो गुडकावता रैवता।

लोक ग्यान जितो दूहो मे पोईजियोडो मिलै उतो दूजै छदा मे कोनी हुवै। केई बार देखण मे आवै कै कूपळा तो लाबी-लांबी पसर रैयी है पण फळ-फूल रो नाव ई कोनी। अै लक्षण है अकाळ रा :-

बिरछा लाबी कूपळा, जे फळ–फूळ न होय।
घास घणा सुण माघजी, अन्न न निपजै कोय।।
जो बरान्त फूलै नहि, फळै नहि बनराय।
राजा–परजा सब दुखी, दुखिया गोधा–गाय।।

इणी तरिया जगळ रै जिनावरा री आदत मे जे बदळाव दीखतो व्है तो भी अकाळ री सभावना बणै जिया :–

अग्गम चौमासै लूकडी जे नहि खोदै गेह।
तो निस्चै कर जाणजो, नहि बरसैलो मेह।।

अेक–अेक दो–दो ओळ्या री तो अलेखू कहावता है जिया तग खाणो पण माग'र खाणो नही, गुड बिना चौथ *किया पूरीजै, तिरिया तेरै पुरुष अठारै,* भूल–चूक लेणी–देणी, सत मत छोडो बालमा, सत छोड्या पत जाय, पूत रा पग तो पालणै मे ई पिछाणीजै, खेती धणिया सेती, हाथ पोलो तो जगत गोलो, घी तो अधारै मे ई छानो कोनी मावै और अेक रूप आदमी, हजार रूप कपडो, लाख रूप गैणो, करोड रूप नखरो इत्याद। इसी मोकळी कहावता लोग रात–दिन बरतता रैवै। सबद थोडा भलाई हुवो पण भाव चोखी तरै पताणियोडा है।

कहावता अर ओखाणा जितो ग्यान नै केवटियो है, दूजी चीजा उतो काम कोनी कियो। बात कोई चाल रैयी हुवो, *अरथावण सारू कहावता अर ओखाणा* रै हींग–बघार लगाया सू मजो या असर चौगुणो हुय जावै। अै कहावता गैणा रै बीच–बीच मे जडियोडै पळपळाट करतै मोतियां रै दाईं ध्यान खीचलै। आपा रात–दिन इया नै सुणता रैवा अर अरथ निकाळता रैवा। इया रो अरथ अभिधा मे नही, *व्यंजना मे रैया करै।* उदाहरण इण बात री साख भरै :–

(अ) खावै पीवै *खसम रा अर गीत गावै बीरै रा।*
(ब) म्है सू गोरो उणनै पीळियै रो रोग।

पैली *कहावत मे* इसा मिनखा *माथै व्यग्य है जिका हेताळुओ रो या* उपकार करण वाळां रो तो अैसाण मानै कोनी अर आपरै घर वाळा नै (या लुगाई हुवै तो पीरै वाळा नै) कोडावता रैवै।

दूजी मे इसा मिनखा नै दरसाया है जिका खुद नै ही खुदा मानै; दूजा रै *गुणा री गिनार* ही कोनी करै।

आखिर मे राजस्थानी रै रतन भंडार माय सू केई और नगीना रो उदाहरण देय'र म्है म्हारी *बात नै विराम* देसू। अै *नगीना* इण तरै हैं :–

बींद रै मूडै मे लाळां पडै तो बापडा जानी *क्या करै।*
मिनखी रै डोळा डरै जिको जंग मे के करै।

गामो हुवै तो मौळियो बधावै।
नागी काई तो न्हावै अर काई निचौवै।
मा रै सराया टाबर कोनी सराईजै।
बसणो भाया मे हुवो चावै बैर ही,
बैठणो छिया मे हुवो चावै कैर है,
जीमणो मा रै हाथ रो हुवो चावै जै'र ही।
अर लाडू री कोर मे कुण तो खारो अर कुण मीठो इत्याद।

अै कहावता, ओखाणा अर उगत्या सैकडो बरसा सू चालती रैयी है; आगै भी चालती रैवैला क्यूकै अै अनुभव री आच मे तप'र सोनै सू कुन्दण बण चुकी है।

मेळा-मगरिया अर लोक-देवता

"काल नवल री तीज है रा राजा जग मे वडो तिवार।
म्हे चढ चाला पालकी स राजा थे घुडलै असवार।
मेळो देखो नीं महाराजा म्हारी तीज रो
अरे हो मेळो . ।"

अमरसिंह राठौड री रम्मत मे हाडीराणी रा अै बोल मरुधरा रै मेळा री मनमोवणी सोभा रौ दरसाव करै। मेळो मे मेल है – मना रो, हिवडा रो, लोक वैवार रो, नाता–रिस्ता रो, भायला–भोपाळा रो, घर वाळा अर पाडोस्या रो। ओ ससार काई है . चार दिना रो मेळो'ई ज तो है। मेळा मे किणनै मजो कोनी आवै। टाबर–टींगर हुवो चावै जोध–जवान अर बूढा–ठाढा, गिरस्थी हुवो चावै साधू–बैरागी, धनवान हुवो चावै भिखमगा, किसान हुवो चावै जमीदार–जागीरदार, मेळा सगळा नै वाला लागै। फेर मरुधरा तो मेळा री, मतीरा री, सिरारी री अर आपरी मिठास री ही धरा है। इणमे मेळै–मेळै चाव सवायो री वात सामी आवै। बानगी सारू इण अध्याय मे राजस्थान रै आठ–दस मेळा रो वखाण कियो जाय रैयो है।

रामदेवरा : आस्था री वात :-

"खमा–खमा ओ धणिया रूणीचै रा धणिया
थानै तो ध्यावै आखो मारवाड ओ,
आखो गुजरात ओ
अजमाल जी रा कवरा।"

लोकवाणी अर लोकधुना रै सागै लाखो मिनखां रै कठा मे इण भजन री गूज हुवती रैवै।

"बाबा तेरी जय बोलेगे, छोटै–मोटै सव बोलेगे" रा नारा लागता रैवै। छोटोसी'क रूणीचो धाम अर लाखो–लाख भगता रो जमावडो। उमाव इतो कै दस–दस दिन पैला सू भगता रा जत्था रा जत्था आप–आपरै गावा–कस्वा–नगरा सू पैदल ई रूणीचै सारू बईर हुय जावै। हाफपैंट, बनियान हाथ मे लाठी, माथै ऊपर टोपी या लिलाड माथै बाबै रै नांव री पट्टी, मूडै सू निकळता नारा, धौळी

धजा (ध्वजा) अर की दूजी चीजा.... बस और कीं नहीं। थोडी–थोडी दूरी माथै भगतां रै स्वागत सारू चाय, पाणी, मिठाई, नमकीन आद जिंसा री मुफत मे मनवारा। जागा–जागा रातीवासा अर दिनभर री पैदल जातरावा। इसी उमडती भगती नै देख'र कुण इचरज नीं करैला। भादवा सुदी दूज सू भादवा सुद इग्यारस ताई मुख्य मेळो भरीजै। यू माघ महीनै मे भी मेळो लागिया करै।

बाबा रामदेव अेक मानीता लोक देवता है। जात–पांत रै भेदभाव रै बिना सगळा लोग उणांनै आप–आप री आस्था रै बिचाळै राखै। बाबा रामदेव रो जलम भादवा सुद दूज सवत 1461 (सन 1404) मे हुयो अर वा समाधि भादवा सुद ग्यारस संवत 1515 (सन 1458) मे ली। इण तरै देख्यो जावै तो बीकानेर री थरपणा रामदेवजी री समाधि रै तीस बरसा पछै सन 1488 (सवत 1945) मे हुई ही अर करणीमाता, राव जोधाजी आद सगळा वा रा समकालीन हा।

बाबा रामदेव कलजुग मे भगवान कृष्ण रो अवतार मानिया जावै। वै अनगपाळ रै वसजा माय सू अेक अजमालजी कवर हा। भगवान कृष्ण अजमालजी री भगती सू इत्ता रीझिया कै वा रै बेटै रै रूप में प्रगटण रो वादो कर लियो। रामदेवजी आपरै जीवण काळ मे केई परचाा दिया जिया मक्का रै पाच पीरा रा कटोरा मक्का सू मगावणा, केई रोगिया नै (आधा–पागळां नै) ठीक करणा, लोगां नै धाड़ेतियां सू बंचावणा, केइयां नै जीवणदान देवणो आद। रामदेवरा रो मेळो आज ताई लारला 500 बरसा सू भी बेसी बगत सू भरीजतो रैयो है। आ लोक मानता है कै रामसर तलाब अर परचा बावडी मे न्हाया सू आधा, पागळां अर असाध्य बीमारियो रा रोगी भी ठीक हुय जाया करै पण हां, आस्था चाईजै।

करणीमाता जगत-तारणी :- राव जोधाजी अर राव बीकाजी रै जीवण काळ मे करणीमाता सदेह विराजमान हा। वा किता ही इसा आध्यत्मिक अर ऐतिहासिक काम किया जिका बिना देवी सगती रै हुय कोनी सकता। वा रै प्रगटीकरण सू लेय'र आज ताई लाखो लाग–गरीब–गुरबा सू लेय'र राजा–महाराजावा तक वानै ध्यावता रैया है। वां रो जीवण काळ सन 1387 सू लेय'र सन 1538 ताई (यानी लगैटगै 150 बरसां रो) गिणियो जावै। वा दीपाजी सूं ब्यांव तो कियो पण गिरस्थी रै जंजाळ सूं अेकदम मुगत रैया। गिरस्थी चलावण सारू वां आपरी छोटी बहन रो ब्याव दीपाजी सूं करवाय दियो।

करणीमाता रा केई परचा अर केई महताऊ काम है जियां भूवाजी री मुडियोडी आंगळ्या नै सीधी करणी, मुल्तान री जेळ मे बद शेखाजी (राव बीकाजी रा सुसरा) नै चीलख बण'र आपरै पजां माथै बैठाय'र कन्यादान सारू लावणा, राव बीका नै बीकानेर री थरपणा री आसीस देवणी, (किलै री नींव

आपरै हाथां सू राखणी) अर गोचर रै नाव माथै जिनावरा री चराई री जागा माथै ऊगियोडी खेजड़या नै नीं काटणै रो सनेसो देवणो इत्याद। करणीमाता रो मिन्दर कला रो बेजोड नमूनो है। इण मिन्दर रै माय जैसलमेर रे पीळै पत्थर मे घडियोडी करणीमाता री ओपती मूर्ति है– माथै ऊपर मुगट, काना मे कुडळ, डावै हाथ मे महिसासुर नै वध करणवाळो तिरसूळ अर जीवणै हाथ मे दैत्य री खोपडी..। मिन्दर री फेरी मे हुवो चावै बडै चौगान मे या ऊणै–खूणै किणी भी जागा देखलो ऊदरा ई ऊदरा देखण नै मिलै। ओ ई कारण है कै करणीमाता रो मिन्दर ऊदरा रै मिन्दर रै नांव सूं आखी दुनिया मे ख्यातनाव है। धौलै ऊदरै रै दरसण नै तो लोग तरसता रैवै।

चैत अर आसोज रै नवरात्रा मे हजारो भगत दूर–दूर सू करणीमाता रै दरसण सारू आवै। वा मे दूर–दिसावर तक रा भगत भी भेळा है। करणीमाता रा परचा विख्यात है। वै चारण वस मे प्रगटिया हा इण कारण आज भी चारण जात वाळा री अर सागै–सागै राठौडा री कुळदेवी मानीजै।

गोगा नवमी रो मेळो :- गोगाजी रो मेळो नोहर तेहसील रै गाव गोगामेड़ी मे भादवै बदी नवमी सू लेय'र भादवै बदी ग्यारस ताई भरीजै। गोगाजी सांपां रा देवता गिणीजै। राजस्थान मे तो वा री घणी जबरी मानता है। मेळै मे जाणै आदम उमड रैयो हुवै इती जबरदस्त भीड होवै। लोग तो वा रा इसा जबरा भगत है कै हरेक गाव मे गोगाजी रो थान मिल जावै। खेजडै रे हेठै थान अर थान माथै धोक लगावता अलेखू भगत। आ लोक मानता है कै किणी नै जे साप डसलै तो गोगाजी रै थान माथै पूगिया वो निरच्ै ई ठीक हुय जावैला। रोगी नै रातभर जागतो राखियो जावै; रातभर ढोल अर टकोरा बाजता रैवै, केई लोग लो री साकळा लेय'र आपरी कमर अर माथै रै ऊपर मारता जावै। मजो ओ कै उण माय सू किणी रै भी कोई चोट कोनी लागै। मत्रा रो उच्चारण, भगतीभाव रो दरसाव अर गोगाजी री मूर्ति री पूजा सू आज ताई हजारू रोगी ठीक हुया है–आ लोक मानता है। गोगाजी जबरा वीर हा। वा री मूरत माथै भी वीरता रा वै ई भाव है। घोडै माथै विराजियोडा गोगाजी लोगा री आस्थ रा केन्द्र है। मेळै मे भजन, जागण, जम्मा, बोलवावा, परसाद–सीरणी आद चालता रैवै। केई लोग गोगाजी री पड भी बांचै।

जग में जस जाम्भेरवर रो :- बीकानेर रो सौभाग्य है कै इणरै अेक गाव मुकाम मे विस्नोई साख रा सस्थापक जाम्भोजी महाराज आपरी इमरत वाणी सू भगता नै तारिया। वा नै सनमार्ग दिखायो। जाम्भोजी पर्यावरण रा रिछपाळ हा। वा जिका 29 नेम–कायदा बणाया उणा मे हरियै रूख नै काटणो पाप मानियो गयो है। कोई तरै रो भूडो बिसन नीं राखणो, जिनावरा नै नीं

सतावणा, मास नही खावणो अर रूखा राट्टै चावै माथो भलांई कट जावै पण रूख नीं कटण देवणा इसा अमोलख सिद्धान्त है जिका लारला सवा पाच सौ बरसा सूं बिस्नोई समाज नै आछै मारग माथै चालणै री सीख देय रैया है। जाम्भोजी रो जलम मारवाड रै पीपासर गाव मे सवत 1508 मे भादवा बदी आठम रै दिन हुयो। पिता हा परमारवरी लोहट जी अर मा ही हसा देवी।

बरस मे दो बार मुकाम में मेळो भरीजै – अेक तो आसोज बदी अमावस नै अर दूजो फागण बदी अमावस नै। मुकाम रै मेळै मे कोई जाय'र देखै तो ठाह पड़ै कै हजारूं मिनख–लुगायां जाम्भोजी नै धोक देय रैया है। ओ क्रम सन 1591 सू आज तांई लगोलग चालू है। भारत रै विकास मे बिस्नोई लोगा जिका महताऊ काम किया है, वै बखाण जोगा है।

जाम्भोजी भगवान विष्णु रा अवतार मानिया जावै। वा आपरै जीवणकाळ मे फलोदी रै नैडै अेक गाव "जाम्भा" मे अेक तलाव खुदवायो अर उणरै काकड माथै आपरै हाथा सू समाधि–स्थल भी तैयार करवायो हो।

जाम्भोजी री इमरत वाणी आजतांई करोडो लोगो रो उद्धार कर चुकी है। बिस्नोई पथ री सुरुवात सवत 1542 सन 1485 मे हुई ही। (बीकानेरी री स्थापना सूं तीन बरस पैला)। वा रै अेक चेलै परमानन्द इसा लोगां नै फिटकारिया है *जिका मांस खावै, सराब पीवै अर पाप में लागोड़ा रैवै। बिस्नोई धरम रा बाण्डा* वा सगळा खातर खुला हा जिका गुणतीस नियमा रो पालन करै –

गुणतीस धरम की आखडी हिरदै धारिया जोय।
जाम्भोजी किरपा करी, नाव बिस्नोई होय।।

जाम्भोजी री समाधि गाव तालवा रै नैडे है जठै बेथाग लोग धोक देवण सारू जावै।

वचनां रा साचा तेजाजी :- इतिहास इसा महान लोगा रै नाव सू पळकै जिका वचना रै साटे आपरे जीवण नै होमण मे कदैई हिचकिया कोनी। वचन दे दिया तो दे दिया फेर तो जाणै पत्थर माथै खींचीजियोडी लकीर है। नही मिटै तो नहीं ही मिटै। 'प्राण जाय पर वचन न जाई' रा अेक महान उदाहरण हा वीर तेजाजी। इतिहास इसा बेजोड वीरा नै आज भी नमन करै।

तेजाजी रै नाव माथै जिनावरा रो अेक ब्हौत बडो मेळो परबतसर मे भरीजै। मेळै री मियाद भादवा बदी दसम सू लेयर भादवा सुदी ग्यारस ताई कुल 17 दिनारी है। आज सू लगैटगै 980 बरसा पैला तेजाजी इण भूमि मे विराजमान हा। बात ब्हौत पुराणी है। अेकर तेजाजी देखियो कै ब्राह्मण री अेक गाय रोजीना अेक अैडी जागा माथै जाय'र ऊभै जठै किणी साप री बाबी है। गाय रै बोबा मांय

सू दूध टपकै अर बिल मे बैठो नाग उणनै पीवतो रैवै। घटना बडै ई चमत्कार री ही। ब्राह्मण नै हकनाक रो नुकसाण होय रैयो हो। तेजाजी उण साप सू वादो कियो कै आगे सू वै उणनै रोजीना दूध पावैला। अेकर सासरै किसनगढ जावती बेळा तेजाजी इण वादै नै बिसरग्या अर देखता ई देखता साप आय'र कैयो कै अबै तो वो तेजाजी नै डसिया बिना कोनी रैवै।

तेजाजी वचन दिया कै सासरै सू पाछा आवती बेळा वै साप सू डसीजण नै त्यार रैवैला। विधि नै काई और ही मजूर हो। तेजाजी देखियो कै किसनगढ में केई धाडेती गाव रै धन (जिनावरा) नै लूट'र जे जाय रैया है। तेजाजी धाडेत्या नै ललकारिया। वै अेक अर धाडेती मोकळा। जग मे तेजाजी कोजी तरिया घायल हुयग्या पण वा नै साप नै दियोडो वादो याद हो। आखै सरीर मे घाव, अेक इच भी जागा बिना घाव रै नही पण वादो तो वादो ई हुया करै। तेजाजी जद साप रै सामीं आया तो वो भी अचूभै मे भरग्यो। डसै तो किण जागा डसै ? च्यारूमेर घाव ही घाव। आ देख'र तेजाजी आपरी जीभ बारै निकाळ'र कैयो– जीभ माथै डसलै अर इण तरै वा वचना रै लारै आपरो जीवण दे दियो।

आज घणखरा लोग इण बात नै मानै कै सांप रै डसण रै पछै जे वै जीवणै पग मे तेजाजी रै नाव रो डोरो बाधलै तो ज्हैर कीं असर कोनी करै। तेजाजी रा मिन्दर जागा–जागा माथै है। लोग बठै धोक देवण नै जाया करै। भगत लोग आपरै गळै मे तेजाजी री मूरत वाळी चादी री ताती बाधै।

परबतसर वाळो मेलो सईका पैला सारासर मे भरीजिया करतो हो। पछै परबतसर मे भरीजण लागग्यो। तेजाजी री भगती आज भी जणै–जणै मे है। वै वादै रा साचा हा, जिनावरा रा रिछपाळ हा, गरीबी रा हेतालू हा अर जबरा जोधा हा।

दूजा मेळा-मगरिया

(अ) श्री कोलायतजी :- बीकानेर सूं कोई पचास किलोमीटर री छेती माथै बरियोडो श्री कोलायतजी ब्रह्माजी रै पोतै अर कर्दम ऋषि रै बेटै महान साख्य प्रणेता कपिल मुनि री साधना री जागा रै रूप मे ख्यातनाव है। कपिल सरोवर मे सिनान करणो अेक पवित्र काम मानियो जावै। हर साल काती सुदी पूनम माथै श्री कोलायतजी मे अेक मेळो भरीजै। कपिल मुनि रो सात सौ बरस पुराणो रूडो अर रलियावणो मिन्दर, मिन्दर मे कपिल मुनि, वशिष्ठ मुनि अर गरुडजी री मूर्तिया, मिन्दर रै बारै कानी लुगायां अर मिनखां रै न्हावण सारू तळाब रा न्यारा–न्यारा घाट, साधू–सतां री सगत, भगता री रेलमपेल, बजार मे भात–भात रै जिन्सा री सजियोडी दुकानां, बांका मिनख, सज–धज'र आयोडी लुगाया अर टाबरां री किलोल इण मेळै ने आखै अंचळ मे नामी कर मेल्यो है।

मिन्दर रै पागती च्यारूमेर री हरियाळी, पीपळ रा गाछ, वां री छिंया, कपिल मुनि री मा देवहुति रै मिन्दंर री छटा, मूछो वाळै देवतावां री मूर्तियां रै मिन्दरां रो अनूठोपण अर आखै वरस सैलानी लोगा री भीडभाड श्री कोलायतजी नै अेक महताऊ स्थान बणाय दियो है। फेर मुल्तानी मिट्टी अर मोकळा खनिजा रै कारण ओ गाव आपरै नाम सू ई जाणीजै।

(आ) दूजा ख्यातनांव मेळा :- राजस्थान मे पुष्कर रो मेळो तो आखी दुनिया मे ख्यातनाव है। झुझुनू मे राणी सती रो मेळो, जयपुर मे गणगौर रो मेळो, कीं दूरी माथै डिग्गीपुरी रो मेळो, नागौर मे जिनावरा रो मेळो, करौली सूं 24 किलोमीटर री छेती माथै कैलादेवी रो मेळो अर डूगरगढ रै गाव नवतापरा (आसपुर तेहसील) मे वाणेश्वर रो मेळो आद घणा ही प्रसिद्ध है। पुष्कर मे देवउठणी ग्यारस सू लेय'र काती सुदी पूनम ताई जबरो मेळो भरीजै। उण बगत तो लाखो लोग इण नगर री जातरा करण अर झील मे न्हावण सारू आवै। जागा–जागा तम्बूओ मे लोग धर्मसाळावां मे लोग, निजू घरां मे, सडकां माथै, घाटा माथै आजू–बाजू मिनख ही मिनख। विदेसी सैलानिया री रेलमपेल। ब्रह्माजी, सावित्री, बद्रीनारायण, वाराह अर आत्मेश्वर शिवजी रै मिन्दरां मे बेसुमार भीड़, रळियावणा सास्कृतिक कार्यक्रम, जिनावरां री खरीद–बिक्री अर दूजै केई मनमोवणा दरसावा रै कारण पुष्कर रो मेळो जगचावौ है; पवित्र है अर पाप सूं छुडावणं वाळो है।

लोक-जीवन अर घरेलू इलाज

पैला कठै पडिया हा अै मोटा–मोटा अस्पताल, अै कैपसूल अर इंजैक्सन, अै ऊंची–ऊंची डिगर्‌या वाळा डाक्टर अर देस–विदेस सू मगायोडी अै कीमती दवाया। कदै हा नुवा–नुवां आविस्कार, नुवीं–नुंवीं मसीना अर भात–भात रा प्रयोग। पण लोग मादा तो पैला भी पडता हा। चेचक, ओरी, हैजा, प्लेग, दस्त अर राम जाणै किती–किती बीमार्‌यां ही। लोग मरता भी हा पण फेर भी कुदरती हवा, निरमळ जळ, आछो खाद्य, बिना मिलावट रा मसाला, मेहनत वाळा काम अर आजू–बाजू ऊगण वाळी वनस्पतिया जिको इलाज करती, वो आज हजारो–लाखो रिपिया खरच करिया पाण ई कोनी हुय सकै। कैयो गयो है कि एक हवा अर सौ दवा। उण बगत नीं तो कळ–कारखाना रो जै'रीलो धुंवो हो अर नीं हजारा री तादाद मे मोटरा, स्कूटरां अर मोटर साइकलां री कार्बन ही; नीं रोळो–रप्पो हो अर नीं रसायना रै भेळसेळ सू सूगलो अर गदलो पाणी हो, नीं मिनखजात री आ भीडभाड ही अर नीं हर बगत आराम करण री आदतां। लोग आज री तुलना मे बेसी ताकतवर हा, कम रोगीला हा अर थोडै मे संतोस करण वाळा हा।

लोग मादा तो पडता ही हा पण ठीक होवणो भी जाणता हा। कुदरत रो चमत्कार इणमे है कै जठै जिसी बीमार्‌यां होवै, उण अंचळ मे वां नै ठीक करण वाळी वनस्पतिया भी ऊगिया करै, जडी–बूंटिया भी हुया करै अर जलवायु भी मददगार बणिया करै।

छोरै ने दस्तां लाग रैयी है, छोरी री उल्ट्‌या रुकणै रो नाव ई कोनी लेवै, बीनणी नै पीळियो हुयग्यो, दादी नै ताव चढ् रैयो है– डील धैंट रयो है; दादाजी रै खासी मे कफ है अर मा नै कब्जी रो रोग है। पैला वाळा माईत क्या बात–बात मे वैदजी नै बुलावता या पैल–पोत घरेलू इलाज री जुगाड बैठांवता ? पुरखो रो अनुभव भी तो कदै न कदै तो कुंई् काम आंवतो हुवैला। घरेलू नुस्खा भी कदै न कदै तो कोई तो आजमाया ई व्हैला ? दादी–नानी रै इलाज सूं घर वाळा कदैई ठीक भी तो हुया व्हैला अर फेर तर–तर भरोसो बंधतो रैयो व्हैला। किणनै ई धाणा–मिसरी री उकाळी तो किणनै ई अजवाइण री फाकी, किणनै तुलसी पता रै सागै लौग अर काळी मिरच्या रळाय'र घासो तो किणनै ई मरैटी अर मिसरी;

किणनै ई घरै वणायड़ो मलम तो किणनै ई जुलाब। जिता रोग उताई इलाज।

खेजडी तो मरुधर रो इमरत रूख है। इणरी सांगरयां तो पंचकेळरै अचार नै जायकेदार वणावै ई है, खोखा भी घणा चोखा लागै। ब्यांव हुवै, वीन नै वधावै मगळ काम हुवै तो खेजडी री डाळ रसौ सू आगै रैवै। खेजडी रो छौडो कितो कीमती है। इयै नै वै जाण राखै जिका रै गिरशा मे लोही पडै जणै इणनै काम मे लेवै। सफेद कोढ मे, पित मे, सारा री बीमारया मे भी खेजडी रा उत्पाद घणा काम मे आवै। सागरी रो साग अग्निदीपक मानियो जावै। खेजडी री छाल गठियै मे अर विच्छू रै डक री पीड मेटण मे भी काम आवै। जणै ई तो करणीमाता अर जाम्भोजी खेजडी अर दूजा हरिया रूखा नै काटण सारू लोगा नै मना किया हा।

"दीयाळी रा दीया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा" आ उगती सैकडों वार सुणी व्हैला पण कदैई विचार कियो कै मिनखा नै रोग सू बचावण मे अै चीजा किती काम आवै। वाजरी रै सिट्टै नै भोर'र खावो अर ऊपर मतीरै रो मीठो गुट पाणी पी लेवो तो इसी रंजरा आवैला जाणै इमरत भोजन कियो व्है। मतीरो पाचक है अर सरीर रै बळ अर तेज नै बधावण वाळो है। इणरो पाणी गुर्दे री पथरी मे, पीळियै मे, आन्त री सूजन मे अर पित री पीड़ा नै मेटण मे घणो हितकारी है। मतीरै रा बीज भी कमजोरी नै हरण वाळा गिणीजै। पैला जद रक्तचाप (ब्लड प्रैसर) घणो ऊचो हुंवतो तो जूनै गुड रै सागै मतीरै रा सिकियोडा बीजां री गिरी रळाय देवता जिण सू खून रो दबाव ठीक ठिकाणैसर आय जावतो।

फोग रो रायतो क्यूं बणायो जावै ? कीं न कीं तो लाभ हुवतो ई व्हैला। सगरणी रोग मे फोग रै फूलो री कळियो रो रायतो गुणकारी मानियो जावै। जाणकारी तो इती तक है कै मसूडो नै मजबूत राखण सारू लोग बुई रै पतो रो रस पीया करता हा। पथरी री भी घरेलू दवाई ही। धौळै आक रै फूल नै दूध रै सागै भोराभोर पीवणै सू पथरी खतम हुय जाया करती ही।

लोग तूबे मे अजवायण अर काळो लूण मिलाय'र पचाया करता हा। ओ तिल्ली अर पाण्डू रोग रो इलाज हो।

कैर, सागरी अर भे कोरै जीभ रै चटपटैपण सारू नीं हुवता। खाणो तो जायकैदार बणतो ई हो पण सागै ई सागै गुण भी तो हा। सागरी कब्जी करै तो कैर उणरै दोस नै दूर करदै अर कैर गरमी लावै तो भे उण गरमी नै ठण्डी कर दै। अेक री काट दूजै रै कनै।

जूना माईत घणी ई जडी बूट्यो रो ग्यान राखता हा। अबै तो वा रा नाव ई सुणण मे कोनी आवै जिया ऊदर कानी ऊट कटालो, मामा लूणी, चदलाई,

मोथियो अर हिरण खुरी।

दिसावर मे रैवण वाळा जद गैरा री बीमारी सू घिर जावता, खाणो पचतो नहीं पेट री बीमार्‌या लारो छोडती नहीं तो दौड'र हवा–पाणी बदळण सारू मारवाड मे आय जावता। अठै री हवा, अठै री कुओ रो ऊडो पाणी अर अठै री वनस्पतिया जिको काम करती वो परदेस री कीमती दवाया ई कोनी कर सकती ही।

भात–भात रा फूल, भात–भांत रा फळ अर भात–भात रा देसी दरखत। हरेक में कीं न कीं गुण। खासी हुवो, सास दोरो आवो या उल्ट्‌या हुवो, तो मेटण सारू कीं न कीं घरेलू नुस्खो बिल जरूर हुवतो। और कीं नहीं तो बोरिया तो है। बोर रै बीज री गिरी भी घणी गुणकारी है। जूनै लोगां कनै घणो हितकारी ग्यान अर घणो ऊडो अनुभव हो। वै बात–बात मे अस्पताळ कोनी जावता। पचियो माथै छोडो घस'र लगाय देवता, बोरटी री जड़ री छाल सू कुरला कराय'र छाला मिटाय देवता, उणरै चूरण सू पुराणो घाव ठीक कर देवता; आकडै रै पता माथै इरडी रो तेल चोपड'र अडकोसा री सूजन नै मेट देवता।

जुकाम बिगड जावतो तो छोटी काचरी काम मे आवती। और तो और आपारो धान बाजरी अर मौठ भी लोगां नै रोगहीणा राखण वाळा हा, आज भी है। गरमी पडै तो खीचडै रै सागे आमली नै काम में ली जावै। मजाक है कै लू लाग जावै। मौठ सू आफरो आय भी जावै तो घर मे हींग अर लसण तो है ही, आफरो आपो–आप ठेका देय जावैला। बाजरी रा सोगरा खावणिया लोग ज्यादा ताकतवर, बेसी मेहनती अर घणा लम्बी उमर वाळा क्यू होवै। कीं न कीं तो गुण तो होवणो ई चाईजै।

कैयो गया है कै रोग होवण सूं पैला पथ्य राखणो जरूरी है जिण सू रोग रो पापो ई कट जावै। नीं तो रैवैला बांस अर नीं बजैली बांसरी। सावचेती बती। राखो तो ठीक नईं तो भोगणो लिखियो है तो भोगणो तो पडसी। समझदार नै तो इसारो ई घणो अर नासमझ नै भलांई सास्त्र सुणायदो, कीं पल्लै कोनी पडै।

लिपि देवनागरी रै जोडाजोड गानता लियोडी ही। अजैतांई गुजराती अर मराठी लिपिया रै रावदा रै ऊपर लीका कोनी लागै। वै भी राव गोडिया आखरा वाळी है।

गारवाड अचळ रै लोगा री बहियां, खाता, चिट्ठी–पतरी, हुंडियां अर दान पत्र आद रागळा जूनी लिपि मे मिलै। आज तो उण लिपि नै चोखी तरै पढणियां री राख्या आगळ्यां माथै गिणण जोगी है। इण लिपि रै रावदा माथै पूरी री पूरी ओळी माथै अेक ई लाम्बी लकीर खैंची जावै। मात्रावा री ओळखाण भी अनुमव सूं ई हुवै। जिका रामझै वै तो विना किण्री ताण रै रावदा रा राही अरथ निकाळलै पण जिका मात्रावा रो गोरखधधो नीं रामझै, वै पज जावै। वै "नानाजी आज अजमेर गया छै" नै "नानाजी आज मर गया छै" भी पढ सकै। महाजनी रै लोक ग्यान वाळा नै तो इणमे कदैई कोई अडारा कोनी आई।

"भणाई रो पारम्परिक रारूप ध्वन्यात्मक है। महाजनी लिपि मे सगळा वरण राग अर लय सू गाया जाय सकै। दुनिया री कोई दूजी लिपि इसी कोनी जिकी पूरी तरिया रागात्मक हुवै। लिपि मोटै तौर रू इण तरिया है।

श्री दाता धन को सभाये वाले मोहे खगो घटा
आई पूठे जडढ वू उचारै छुथारे झफोझफा।

ऊपर ली ओळी रै अत मे "घटा" अर नीचै री ओळी रै आखिर मे *"झफोझफा" ध्वन्यात्मकता दरसावै। इण लिपि मे सगळा व्यजन है। (अनुनासिका* नै टाळ'र) सगळा मूल स्वर है जिया आ ई ऊ आद। बाकी सगळा सुर इंया सू ई'ज बणै। आ माय अ अर आ दोनू भेळा गिणीजै; ई माय इ अर ई भेळा अर ऊ माय उ अर ऊ भेळा हुवै। श्री सू सुरु होवण वाळी दुनिया री आ न्यारी–निरवाळी लिपि है।

जूनी मारवाडी मे लोक व्यवहार रा सगळा काम हुया करता हा। राज–काज, घरेलू काम–धधा, चिट्ठी–पतरी, वौपारिक लेण–देण, खाता–बहिया, पट्टा–परवाणा, सत महात्माओ री वाणी, वाता अर ख्यातां जिसा सगळा कात बोलचाल री भासा मे हुया करता हा। आपणी राजस्थानी घणी राती–माती भासा है। इयैरो इतिहास भी घणो जूनो अर सावठो है। दसवी सताब्दी सूं लेय'र आज ताई लोक–ग्यान रै भण्डार वाळी आ भासा करोडो री भावनावा नै केवटती रैयी है।

लिपि रै ढाळै महाजनी री भणाई मे भी ध्वन्यात्मकता ही। सागै ई हर वरण री बणगट भी उण वर्ण रै बखाण मे आपो आम सामीं आय जावती जिया "चचो चिडी री चूच अे" या " 'ञ' खाडो चन्दरमा" या "ण–णा थारी तीन रीगरी", या "छज्या–बज्या पोटलो" सू साफ ठाह पड जावै कै 'च' री बणगट चिडी री चूंच सू मिलै, 'छ' छाजळै ज्यू हुवै, 'ञ' रो आकार खाण्डै चन्दरमा दाई है तो 'ण, (जूनो

(प ण) तीन रींगट्या वाळो है। इण तरिया आखी बारहखडी रै वरणा रो ध्वन्यात्मक रूप है। गाय–गाय'र याद किया जाय सकै, जिसो रूप। छोटा टाबरा। तो इणसू कोई लेणो–देणो हो कोनी कै किण वरण री सूरत किण चीज सू मेल खावै। वा नै तो गाय–गाय'र पढण मे ही सुवाद आया करतो हो।

राजस्थानी रै लोक–ग्यान मे 'ल' अर 'ळ' री खासी महताऊ ठौड है। 'ळ' बोलणो सोरो कोनी। घणखरा लोग तो जे पूरी कोसिस करलै तो ई 'ळ' वा सू कोनी ताबै आवै। बीकानेर अचळ मे तो 'ळ' किणी री परख करणै सारू काम मे आवतो। जे कोई दावो करतो कै बो बीकानेर रो मूळ निवासी है तो उणनै कैयो जावतो कै बोल "खाळो बैवै खळळळ" तो परदेसी बापडो लाख जतन करो पण उण सू बोलियो जावतो "खालो बैवै खललल।" उणनै के ठाह कै खोल मे अर खोळ मे, गाल अर गाळ मे, टाल मे अर टाळ मे, बोली अर बोळी मे अर भालो अर भाळो मे रात–दिन रो आतरो होवै। वरणा री मालणी रै मजै रै बारै मे तो इत्तो ई कैयो जाय सकै कै इसी मालणी दुनिया री किणी भी दूजी भासा मे कोनी मिया,

कक्को कोडको या कक्को केवळियो
ष षौ षाजूळौ (पैला ख नै 'ष' लिखिया करता हा)
ग गा गोरी गाय अे
घघ्घा घोट पिलाणै जा
ड रडिया रामण दूमणा
चिडै–चिडै री चूच अे
छछिया–पिछिया पोटला।

इणी तरिया पूरी मालणी मे भणाई रै सागै जीभ रौ सुवाद अर ध्वनिया रो आणद अेकै सागै आंवतो रैवतो। भात–भांत रै वरणां नै उथळण सूं जीभ आटा खावती रैंवती अर छुटपण में ई टाबरां नै सगळी ध्वनियां रो ग्यान हुय जावतो।

गाव रा मिनख–लुगाया इसा हजारूं सबदां नै केवटता रैया है जिकांरा रहैर रै 'राजस्थानी' बोलणियां नै कीं बेरो कोनी। लोग आप–आप री जरूरत मुजब सबद घडता भी रैवै अर इण तरियां भासा भी राती–माती हुंवती रैवै। भासा री माठ–मरोठ अर निकेवळी ओळख सारू गाव रै लोगा रै लोक–ग्यान री गिनार करणी जरूरी है। जिकी भासा रो इतिहास हजार बरसां सूं ई बेसी बगत रो है अर जिकी नै बोलता–सुणता–बरततां पचासूं पीढिया निवड़गी, उण भासा री माल–मत्ता रो थाह पावणो घणी खेचळ रो काम हुया करै। गाव वाळा 'य' नै 'ज' बणावण मे कोई जेज कोनी करै जियां जोगी, जातरा जसोदा जुद्ध, जस जोगा अर जसवंतसिंह आद।

राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत अेकर छैल भंवर सारू वरतीजण वाळा २०० सबद छाट'र बतायो कै कोई दूजी भासा इसी कोनी जिण मे अेक अरथ रा २०० सबद होवै। फेर तो ठाह लागी कै अै सबद कोई ३४८ रै अडैगडै है। बानगी सारू अलबेलो, आटीलो, आलीजा, उमराव, केसरिया वालम, चुडलै रो सिणगार, कमधजियो, गाढा मारू, चतर सुजाण, जोडी रो भरतार, भवरजी, पना मारू, ढोलो, बाईसा रो बीरो, मदछकियो, रगरसियो, लाल नणद रो बीर, हजा मारू आद। अै सगळा सबद लोक–ग्यान रै पेटै खताइजै।

अेकर जहूर खां मेहर अर किणी उर्दू रै विद्वान रै विचाळै दोनू भासावा नै लेय'र कीं झक्काळ हुयगी। मेहर कैयो कै उर्दू मे इसा कित्ता सबद गिणाय सको जिका किणी भी अेक वरण सू सुरू हुवै पण सगळा रा अरथ सागी रा सागी रैवै। (जिया ऊट सारू सवद)। उर्दू वाळो घणी ई खेचळ करी पण बात तावै कोनी आई। पछै जहूरखा 'क' वरण रो कोई १०–१२ सबद गिणाया जिका रो अरथ हुवै ऊट जिया करहौ, करसलो करेलडो, करवळो, कठाळक, कठाळ, क्रमेलक, करहास, कछौ अर कुळ नारु। इयाकली सबद–सपदा नै देख'र उर्दू वाळो विद्वान चमगूगो सो'क हुयग्यो। वै कैयो, अच्छा किणी दूजै वरण रा इसा ई सबद गिणावो तो जाणू। जहूरखा 'म' वरण रा घणा ई सबद गिणाय दिया जिका रो अरथ ऊट ई'ज हुवै जियां मईयो, मदझरियो, मयद, महाग्रीव, मैगळ, मैमत, मय, मरुप्रिय, माकडा झाड आद। गाव वाळा अै सगळा सबद केवटता रैया है। राजस्थानी लोक–ग्यान मे ऊटणिया (साढा) रा बीसू सबद है जिया टाठी, फिरडी, फाडर, खाखर, खाखी, डागड जद कै उर्दू मे कोई सबद लाधै कोनी अर सेवट ऊट सू ऊटणी ई बणाय'र धाको धिकावणो पडै।

मूलदान देपावत "माचै" रा घणा ई उदाहरण देय'र बतायो है कै लोक–ग्यान रै पेटै न्यारी–न्यारी ठौड "माचै" रो अलायदा–अलायदा रूप बरतीजै जिया रजपूत नै माचै में मरणै रो मैणो मानीजै, चोरो नै माचै चढाइजै, आप सू बडेरा रै बरोबर माचै माथै कोनी बैठीजै, गाचै मे सास निकलणो माडो मानीजै, ऊडा सास लेवतै नै माचै सू हेठै उतार'र धरती माथै सुवाणीजै आद। कपडा रा भी भात–भात रा रिवाज है जिया माहेरा मे मामो मौळियो बधावै, बैन ने चूदडी ओढावै, सावण मे लुगाया लहरियो अर फागण मे फागणियो मगावै आद।

लुगाई ऊट माथै मोट्यार रै लारै बैठै तो जाणणो कै वा उणरी घरधिराणी है, जे आगै बैठै तो समझणो कै वा जोडायत कोनी। गाव मे मोकळा नेम–कायदा चालै जिका भासा रै पेटै आप–आपरी न्यारी–निकेवळी पिछाण राखै। बैठक सबद गमी मे बारै दिना री बैठक सारू काम मे आवै, गोष्ठी सारू न्हीं। राजीखुसी रा कागद आवै अर मरियोडै रै समाचार री चिट्ठी। गाव वाळा लूण नै मीठो कैवै,

चीज कमती हुवै तो कैवै बती है, दियो बुझावै कोनी बडो करै, मरणै नै सौ बरस पूगणो कैवै, दुकान बंद कोनी करै, मगळ करै।

मूलदान देपावत पळकणै अर चमकणै मे भी झीणो फरक बतायो है। गाव मे लोग मोती पळकै अर ऊंट चमकै रो प्रयोग करै। मोती चमकै अर ऊंट पळकै कोनी कैवै। नागै सबद रा भी दो अरथ है – अेक तो 'नागी–उघाडी' रो प्रयोग अर दूजो उण री लुगाई घणी ई 'नागी कुत्ती' है।

लोक–व्यवहार री आपरी अलायदी परम्परा है। साहित्य मे तो कोई सबद उण बगत आवै जणै बो लोक मे घिस–घिसाय'र गोळ बण जावै। मूळ मे लोक–ग्यान अर लोक–व्यवहार अर उण सू ई'ज बणै है साहित्य, कला अर संस्कृति।

मीठा-मधरा बारैमासा

कविवर भीम पाडिया री अै ओळ्या कुदरत री सिरिस्ट रै सागै सस्कृति री जुगलबदी दरसावण वाळी है।

जद ठडी मधरी पून चलै, म्है·हिवडै मे हरसाऊ
अर चटक चादणी रात धोरियै बैठ गीतडो गाऊ। जद ठडी मधरी....

X X X

आज रमण री रात रमा घण रेत मे
छिटकी च्यारू मेर चादणी खेत मे
आज पुनम रो चांद इमी बरसावैलो
ठडो मधरो बायरियो सरसावैलो
घुळता–घुळता रातडली घुल जावसी
थारै–म्हारै हियै पळतै हेत मे। आज रमण ....

चैत रो चितचायो महीनो अर हिडदै मे उमडतो उमाव हुवै तो पछै कुदरत दोनू हाथा सू वरदान लुटावती सी'क लागै। इण ओळ्या मे रूपाळो भूगोल है तो रुत री मनभावणी रंगत रै मांय धोरा माथै बैठ'र गीत गावण री लालसा भी है। धणी–लुगाई रै आपस रै घणमोळै प्यार रो बखाण है तो झूमती फसलां रै खेत रो मनभावतो दरसाव भी है; हिवड़ै रो अणूतो उमाव है तो लोकगीता री लै'रां रो आणंद भी है। चैत मे धरती वासन्ती गाभा मे सजिया करै। हवा रू–रू मे ताजगी भरती रैवै। चदरमा आपरी सगळी कळाओ रै सागै चादणी बरसावै। फसलां झाला देय'र बुलावती सी'क लागै।

चैत बदी सातम नै लोग सीतळा माता रो व्रत राख'र टाबरिया सारू ठंड रै झोला री अरदास करै। पैला सीतळा माता रै कोप सूं सगळा डरिया करता हा। बडी माता जे चै'रा माथै माडणा माड देवती का पछै अेक आंख ले लेवती तो आखी उमर उणरू लारो छोडावणो ओखो हो। इण सारू टाबरपणै सू ई डील रै जाबतै खातर चौकस रैवणो पडतो। ठंडो रांधणो अर ठडी–ठडी मौसम रो मजो लेवणो चैत री मनवारां रै रूप मे गिणीजतो।

चैत मे मन रै हरख नै बधावण वाळा नवरात्रा आवै। भगती–भाव सू

...सिया रो दिन। देवी री पूजा अर अरचना रो नौ दिन अर भगवान राम रै गुण–जस नै याद करण वाळा रामनवमी सूं जुडियोडा नौ दिन। गणगोर रै उच्छव री रमक–झमक, कवारी कन्यावा री आछै घर–वर सारू अरदास, बागा रा हीण्डा अर रळियावणा गीत। फेर आवै वैसाखी रो तिवार। झूमती फसळा रै बिचाळै नाच–गाणां रै भरपूर आणद रो तिवार। महावीर जयन्ती अर हनुमान जयन्ती– ऐ सगळा मिल'र चैत नै सस्कृति अर प्रकृति रै बारैमासा मे महताऊ ठौड दिरावै।

पद्रै सौ पैताळवो सुद वैसाख सुमेर
थावर बीज थरपियो बीकै बीकानेर

आज सू लगैटगै पाच सौ पद्रै बरसा पैली वैसाख सुदी दूज शनिवार नै मरुधरा रै मुगट बीकानेर री थरपणा हुई। ओ ई कारण है कै दूजी जागावा माथै मकर संक्राति माथै किन्ना उडै पण बीकानेर में तपतै तावडियै अर लूआ री परवाह कियां बिना आखा तीज माथै आभो भात–भात रै रगरगीलै किन्ना–किनण्या सू भरिया पछै "वो ई काट्या है" रै नारा सू गूजतो रैवै। वैसाख सत महात्मावा री जयन्तियां रो मास है। इण सारू धरम–करम री बेरी'ज हुवै। परशुराम, शंकराचार्य अर रामनुज जिसा मिनखपणै रा नगीना इणी मास में प्रगटिया हा। भगवान बुद्ध रो प्रगटीकरण भी वैसाख सुदी पुनम रो है। इण सारू वैसाख अेक घणो पवित्र महीनो है।

जेठ मे लूआं रा लसरका अर आभै रो कोप सगळा नै तळतळाय दै। राजस्थान रा किसान तो कुदरत रै इण अगनकुड रा हेवा है। वै तो पसीणै सू इतिहास बणावणो भी जाणै। इण सारू जेठ रै करूड महीनै मे भी बादळा नै ऊडीकता रैवै। जद पखेरूआ तकातक री रूखा नै छोड'र खुलै आभै मे मुगत उडाण भरणै री हिम्मत कोनी पडै उण बगत भी आपारा करसा भाई मैणत–मजूरी रै कामां मे लाग्या रैवै। आगै बिरखा रा महीना आणै वाळा है। नीनाण करणा है, बीजाई करणी है, हळ अर बळधा रो ध्यान राखणो है। जे बिरखा नीं हुवै तो सींचाई रा सरतन भी करणा है। जेठ सुदी ग्यारस नै निर्जला रो तिवार मनायो जावै। जागा–जागा मनवारा करता अर पाणी, सरबत, आमरस अर भात–भात रा पेय पावता लोग, जागा–जागा दान–दक्षिणावां रा दरसाव अर जागा–जागा बाई सवासण्यां सारू कपडा, लत्ता, ठण्डाई रा सामान, आम्बा, दूजा फळ अर तरै–तरै री चीजां देवण री होडाहोड अर भजन–कीर्तन रा आयोजन आद।

"आसाढस्य प्रथम दिवसे......"

काळिदास तो इण उगती नै लिख'र अमर हुयग्या। आसाढ रो रळियावणो महीनो कीनै कोनी सुहावै। ऊडीकता–ऊडीकतां जेठ तो निकळग्यो, अबै रामजी जे राजी हुवै तो आभै में कीं मंडाण मांडै, मोर–पपैया नै कीं थ्यावस आवै अर

किसाना रै मुरझायोड़ा सुपना नै हरिया बणावण सारू की आस बंधै। कीनै रळी कोनी आवै कै रूखा माथै फळ लटूंबै, गाछ–गाछ माथै पछी मीठा सुर उगेरै, धरती आपरा भूरा गाभा छोड'र हरियो वेस धारण करै अर मौसम सोळै सिणगार मे सजण रो मौको देवै।

"नवमी सुद आसाढ रो'स म्हारो निकट साकडो सावौ"

अमरसिह री रम्मत रा अै बोल लोक–व्यवहार री सास्कृतिक पिछाण वाळा है। इण दिन रै बाद जद देव सयनी ग्यारस आवै तो पछै कोई मागळिक काम चार महीना ताई कोनी हुय सकै। कोई कवारो है तो कवारो ही रैवैला। चार महीनां तांई तो जद देवता भी सूता रैवै तो मिनख सुभ काम किंया कर सकै। आसाढ री पुनम रो टाकडो राजस्थान मे घणो महताऊ है। आ है गुरू पुनम। टाबरा री पाटी–पूजा रो महापर्व, गुरु अर चेला रै बिचाळै रै रिस्तां रो पूजनीय दिन अर सरस्वती री पूजा रो बेजोड अवसर। आसाढ मे बादळा रा गाजा–बाजा, बीजळी रा पळका अर मौसम रै मिजाज रा बदळता रूप इण महीनै नै महताऊ बणावै।

सावण सुहाणो सरसावणो
भादवो सुहाणो मनभावणो।

सावण रो महीनो तो सगळा सारू रळियावणो मास है। धरती री रंगत, आभै सूं उणरी प्रेम–लीला, खेता मे छांयोडी हरियाळी, मोर–पपैयां री मीठी वाणी, डेडरियां री डरू–डरू री अवाजा, बीजळी रा पळका, मोटोडी छांट्या रो मेह.. इया सगळां रै कारण सावण बारैमास मे अेक रूपाळो महीनो मानीजै। नाग पचमी, हरियाळी अमावस अर श्रावणी या रक्षाबधन। साची पूछो तो आखो सावण ही भगती रै उमाव रो मास है। बैन–भाया रै इण अमर तिंवार राखी पुनम री आपणी सस्कृति मे ठावी ठौड है। श्रावणी माथै लोग दिन–दिन भर तळाबा रै पाणी मे ऊभ'र आप–आप री सरधा रै मुजब भगती रा आयोजन करै, ब्राह्मण जिनेऊ बदळै अर पूजा–पाठ करै, दक्षिणा देवै, महात्मावा रा पूजन–वदन करै।

भादवो आवतै–आवतै तो धरती बूटैदार हरी छीट रै घाघरै अर वसन्ती चोळी मे रूपवती दीखण ढूक जावै। आसाढ तक जिका ठूंठ हा उण रूखां म भी नुंवी चेतणा आय जावै। उमगता बरसाळी झरना, जागा–जागा गूंजता मीठा सुर, मस्त–मस्त धोरा, धोरा माथै रमता किलकता टाबर, बिरखा मे न्हावता, कुदडका करता टाबर अर माटी री सौरम रा लावा लूटता लोग–लुगाई। च्यारूमेर चैलपैल, च्यारूमेर मेळा–मगरिया, च्यारूमेर गोठ–घूघरी रा आयोजन। सुरंगो महीनो है भादवो।

"भरियै भादवै रैण अधारी जलम्या जादस राय"

कृष्ण जन्मास्टमी री चैलपैल; माटी रै कसा रो वध, माखण लीलावा रासलीलावां, भात–भात री झाकिया अर भगती रै काचै झाग भावा रो दरसाव। और भी केई तिंवार आवै जिया गोगा नवमी, बछवारस, गणेश चौथ अर अणत चौदस। बिरखा रै सागै–सागै भगती रा लावा लूटण रा मौका। अै मौका फेर कठै पडिया है ?

आसोज भगती, सगती, प्रेम अर रूमानियत रो संगम है। नवरात्रा री धूमधाम, देवी दुर्गा अर मॉ करणी री पूजा–आराधना, मेळो रो आयोजन, दसरावै री रौनक, रावण, कुम्भकरण अर मेघनाद रै पूतळा नै बाळ'र सातरा सस्कारा री थरपणा रा जतन अर छेकड मे सरद पूनम री चॉदी बरणी चांदणी मे इमरत–सींचियोडी खीर रो अर मीठा–गुट मालपुड़ा रो भोग। सरद पूनम माथै आखै राजस्थान मे सगीत सम्मेलन, कवि–सम्मेलन अर भगती रा अलेखू कार्यक्रम, जागण अर आधी–आधी रात ताई नाच–गाणा हुवता रैवै। ओ प्रेम रो अर मेल–मिलाप रो तिवार मानीजै। आसोज मे बिरखा रा आसार कीं कमती होवण लाग जावै अर लोक जीवण री हलचल कीं बेसी वधती जावै।

सिरिट री सुरुवात सू लेय'र आज ताई लोग चॉदणै री जीत अर अधारै री हार सारू खेचळ करता रैया है। चादणै रै अखीपण रो सातरो तिवार दीवाळी काती (कार्तिक) में ई आवै। अधारी–घोर अमावस मे जाणै चादणै री बिरखा होम रैयी हो– च्यारूंमेर दीया ई दीया– झिलमिल करता, अधारै सू जूझता दीया। अर फेर फूलझड़यां, भात–भात रा पटाखा अर लिछमीजी री पूजा रा दरसाव। धन तेरस सू लेय'र भाई दूज ताई रा पाच तिवार लोगो मे हरख–उमाव रो संचार करण वाळा है। गोपास्टमी, गुरुनानक जयन्ती अर पूनम माथै पुस्कर अर कोलायत रा मेला इण महीनै री विसेसतावां हैं। "काती मै सब साथी" री कहावत इण बात नै दरसावै कै लारलै दो महीना मे जुदा–जुदा बगत बोयोडा काकडिया, मतीरा, काचरी, गवार फळिया अर दूजा केई–फल–वनस्पति काती मे पक'र त्यार हुय जावै। "दीवाळी रा दीया दीठा काचर बोर मतीरा मीठा" इण बात री साख भरै।

मिगसर में नीं तो बिरखा है; नी सरदी अर नीं गरमी रो प्रकोप। गुलाबी ठड सुरु होवण लाग जावै। पुराणा माईत कैंवता आया है कै "दीवाळी दीवाळणी, होळी चट्टै बाळणी" यानी दीवाळी रै पछै तिवारां री सकडाई अर होळी रै पछै तिवारी री रेलमपेल हुया करै। मिगसर आगै आवण वाळी डाफरा री चेतावणी रो महीनो है। सांस्कृतिक रूप सू लगैटगै सूनो महीनो।

"पो खालडी रो खो, अेक राध, दूजो पो, चतर व्है तो माथो धो।" पो म दिन साव छोटा हुय जावै; डाफर इयाकळी बाजै कै सगळा हाड खळकाय दै,

धूजणी छूटती जावै अर सीरख–पथरणा मे ई कीं चैन मिलै। दिनूगै रै खाणै–पीणै री बगत पूरी होवतै–होवतै सिझ्या रै भोजन री तजवीज करणी पडै। जिकी थोडी फुर्तीवाळी लुगाया होवै, वै चटपट काम निगटाय'र न्हाय–धोय सकै बाकी तो काम मे ही अळूझियोडी रैवै। इण महीनै रै तिवारा मे लोहडी, मकर–सक्रांति अर पोषी पूनम घणी महताऊ है। तिलिया लाडू, घेवर अर फीण्या रो तिंवार है मकर–सक्रांति। बीकानेर नै टाल'र आखै राजस्थान मे किन्ना उडावण रो तिवार। बीकानेर मे तो किन्ना उडावण रो काम आखाबीज माथै हुया करै।

माघ आवतै–आवतै सरदी कीं मौळी पडणी ढूक जावै। कैयो गयो है कै "आधै माहे, कावळ बाहे" यानी माघ सुदी आवतै–आवतै कावळ ओढण री घणी दरकार कोनी पडै। फेर आवै बसन्त पचमी रो रळियावणो तिवार। जागा–जागा सरस्वतीजी री पूजा, पीळै गाभा मे सजियोडा मिनख, लुगाई अर टाबरा री रमक–झमक, हवा मे लैरावती सरसू री पीळी–पीळी फसळा, निरमळ आभै मे बिछियोडी चादणी अर असोक, केतकी अर कदम्ब रै फूला री सौरम। माघ रो महीनो लोगा सारू घण–चावो है। सरदी रो उतार अर बसत री झीणी हवाया मौसम नै रगीलो बणाय देवै।

सावण अर फागण दो महीना तो इसा है जिका नै लोग अडीकता रैवै। फागण तो इण बारेमासै मे मस्ती रो राजा महीनो है। च्यारूंमेर रग, गुलाल, पिचकार्‌या, डोलच्या, गेवर, ख्याल अर रम्मता रो जोर रैवै। मिनख तो मिनख, मौसम खुद हुडदग करण नै ढूक जावै। होळी रै रग मे सगळा भेळा है– देवर–भाभी, साळी–बैन्दोई, जीजा–सालहज, सैण–सगी, भायला–भोपाळा। कठै ई कोई आट कोनी। चग माथै गाणा, धूमच अर धमाल, गींदड अर डाडिया, नौटंक्या अर रम्मता.... कुल मिलाय'र फागण मस्ती रो, चैल–पैल रो, हरख–उमाव रो अर ताजगी रै सनेसै रो महीनो है। अै बारैमासा मरुधर रै निकैवळै व्यक्तित्व रा अैनाण है। जठै परीणै सू इतिहास रचीजै, बठै नीं तो मुरझायोडो चैरा हुवै अर नीं हार मानण वाळा मिनख। चैत सूं लेय'र फागण ताई मरुधर गावतो रैवै, नाचतो रैवै, परीणै सू फसळा नै सींचतो रैवै, मान–मनवार करतो रैवै अर दूध–मिसरी जिसा मीठा रिस्ता–नाता निभावतो रैवै। म्हारै मरुधर री आई तो मरजाद है, आई मठोठ है अर आई रंगत है।

आज आखी दुनिया मे आपारा लोक–कलाकार धूम मचाय रैया है। आथूणी दुनिया तो वांरी दीवानी हुय रैयी है। आपांरा लोक–वाद्य–खडताल, अलगोजा, अर रावणहत्था आज जगचावा है। आपांरी गायकी भी नांव कमायो है। राजस्थान रा लोकनाच–घूमर, झूमर, गवई, गौरी अर जसनाथी अगन–नाच दुनिया भर में सैलानियां नै रिझाय रैया है। राजस्थान रा भित्ति–चितराम, मेहन्दी –मांडणा री सावठी कोरणी, खेतीबाडी रै ग्यान सूं सराबोर जूनी कहावता अर ओखाणां अर सईकां सूं चालती आई भणाई री गैराई दुनिया मे किणी सूं भी कमती कोनी। पण फेर भी पीड आ है कै जलधारा सूं खाली परदेसी बादळां माथै रीझ'र नाचण वाळो साहित्य–मोरियो खुद रै भरियै–तरियै मौसम माथै गुमेज कोनी करै।